Registered No. C.877

कामये दुःख तप्तानाम् प्राणिनामार्त्ति नाशनम् ॥

वर्ष १

विश्व मित्र

प्रकाशक—
विश्वमित्र कार्यालय
कलकत्ता।

एक प्रतिका मूल्य

देश सेवा ही प्रधान उद्देश्य — निर्भीकता ही विशेषता

रखता हुआ

दैनिक विश्वमित्र

सरकारको जमानत देकर निकाला गया है। इस पत्रने जन्मकालसे हीं अपने प्रेमी पाठकोंको सहानुभूति प्राप्त की है। इसकी विशेषताएं सर्वथा आपको पसन्द आयेंगी। विशेषताएं एकबार सुन लीजिये।

प्रजा सेवा।

प्रजाके हितके लिये दृढ़ आन्दोलन करना इसका पहला काम है आप एक प्रति कोई भी मंगा देखिये। आपको पता लग जायगा कि किस प्रकारके निर्भीक विचार प्रकट किये जाते है। किसीका अनुचित पक्ष ग्रहण नहीं किया जाता। झूठी हिमायत भी नहीं की जाती।

ताजे समाचार।

आप हिन्दीका एक दैनिक पत्र उंठाकर मिलान कर लीजिये। सच झूठका पता लग जायगा। हिन्दी दैनिकोंमें इससे जल्दी ताजे समाचार मुफस्सिलवालोंको और कोई नहीं दे सकता। यह हर रोज शामको निकलकर कलकत्तेमें बेढब धूम मचाये रहता है।

भावपूर्ण चित्र।

सप्ताहमें एक दो बार इसमें भावपूर्ण चित्र भी निकला करते हैं जो बड़े सामयिक होते हैं और पाठकोंपर विजलीके समान असर डालते हैं।

सबसे सस्ता।

इस दैनिकसे सस्ता और कोई भी दूसरा दैनिक पत्र नहींहै। वार्षिक मूल्य सबसे कमरखा गया है।

अल्प कालके लिये।

एक महीने तकका ग्राहक बड़ी खुशीसे बना लिया जाता है, क्योंकि यह निश्चित हैं कि एक बार जिसने पत्र पढ़ा वह उसका दिल ग्राहक न रहनेको कभी न चाहेगा।

आपकी इच्छा हो तो इस नवीन उद्योगको अपनानेमें विलम्ब न कीजिये।

व्यापारियोंको सूचना।

दैनिक विश्वमित्रमें व्यापारियोंके लाभ की सभी बातें रहेगी। यदि वे सालमें १० खर्च भी कर देंगे, तो किसी समय हजारों पा जायेंगे। वार्षिक १०) छ मासका ५) तीन मासका ३)

खण्ड १ | आश्विन संवत् १९७५ अक्टोबर १९१८। | संख्या १

श्री विजया दशमी

वैसे तो भारतके प्राचीन ऋषियोंने जो त्योहार बनाये हैं वे सभी कोई न कोई विशेषता लिये हुए हैं, पर श्री विजया दशमीके त्योहारमें कुछ और ही विशेषता है। वास्तवमें हो इस त्योहारसे चत्रियत्वका बहुत घना सम्बन्ध है। आज जो भारतीय आत्मरचाके लिये अपने पास एक छुरी और साधारणसे साधारण हथियारतक नहीं रख सकते उन्हें भले ही विजया दशमीका यथार्थ महत्व न मालूम हो सके, पर जिन दिनों चत्रिय राजाओंका राज्य था और देशके लिये चत्रिय राजाओंके सब प्रकार समर्थ होनेपर भी किसीको किसी प्रकारके हथियार रखनेकी कोई रोक टोक न थी उन दिनों आजके दिन भारतवर्षके द्वारे द्वारे तरह तरहके अस्त्रास्त्रोंकी सफाई होती थी, क्योंकि चातुर्मासकी वर्षाके कारण उनमें मोर्चेके कारण कुछ न कुछ दोष आ ही जाता था। यही नहीं, इसी श्री विजया दशमीके शुभ दिन मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजी महाराजने लङ्काधिपति महाप्रतापी रावणपर चढ़ाईकर कुछ ही दिनोंकी लड़ाईके बाद उसपर विजयप्राप्त की थी। इस तरह क्वार शुक्ला दशमी वास्तवमें ही विजया दशमी बन गयी और तबसे अबतक बराबर यह इसी नामसे प्रसिद्ध है। वैसे तो जब भारतमें चत्रियोंका धर्मराज्य था तब अनेक अवसरोंपर वे शत्रुओंसे घोर युद्ध कर विजयी हुए थे, पर उन युद्धों और रामरावण युद्धमें बहुत बड़ा अन्तर है। उस समयके भारतका जिसे वास्तविक चित्र देखना हो वह श्री वाल्मीकि ऋषिकृत रामायणमें देख सकता है। श्री बाल्मीकिलिखित वर्णनसे स्पष्ट है कि श्रीरामचन्द्रजीकी लंकाधिपति रावणपर विजय एक असाधारण विजय थी। कारण यह कि उन दिनों वेदशास्त्रोंका अच्छा पंडित होनेपर भी ब्राह्मणकुलोत्पन्न रावण मद्यमांसके सेवन तथा अनेक प्रकारके कुसंगके कारण मनुष्य श्रेणीसे गिर राचस कोटिको पहुंच गया था। उसके अत्याचारोंके मारे देशभरमें भय छा गया था, क्योंकि उसके राज्यके निशाचर समुद्र पारसे भा-

देश सेवा ही प्रधान उद्देश्य　　　　निर्भीकता ही विशेषता

रखता हुआ

दैनिक विश्वमित्र

सरकारको जमानत देकर निकाला गया है। इस पत्रने जन्मकालसे हीं अपने प्रेमी पाठकोंको सहानुभूति प्राप्त की है। इसको विशेषताएं सर्वथा आपको पसन्द आयेंगी। विशेषताएं एकबार सुन लीजिये।

प्रजा सेवा।

प्रजाके हितके लिये दृढ़ आन्दोलन करना इसका पहला काम है आप एक प्रति कोई भी मंगा देखिये। आपको पता लग जायगा कि किस प्रकारके निर्भीक विचार प्रकट किये जाते है। किसीका अनुचित पक्ष ग्रहण नहीं किया जाता। झूठी हिमायत भी नहीं की जाती।

ताजे समाचार।

आप हिन्दीका एक दैनिक पत्र उंठाकर मिलान कर लीजिये। सच झूठका पता लग जायगा। हिन्दीं दैनिकोंमें इससे जल्दी ताजे समाचार मुफस्सिलवालोंको और कोई नहीं दे सकता। यह हर रोज शामको निकलकर कलकत्तेमें बेढब घूम मचाये रहता है।

भावपूर्ण चित्र।

सप्ताहमें एक दो बार इसमें भावपूर्ण चित्र भी निकला करते हैं जो बड़े सामयिक होते हैं और पाठकोंपर विजलीके समान असर डालते हैं।

सबसे सस्ता।

इस दैनिकसे सस्ता और कोई भी दूसरा दैनिक पत्र नहींहै। वार्षिक मूल्य सबसे कमरखा गया है।

अल्प कालके लिये।

एक महीने तकका ग्राहक बड़ी खुशीसे बना लिया जाता है, क्योंकि यह निश्चित हैं कि एक बार जिसने पत्र पढ़ा वह उसका दिल ग्राहक न रहनेको कभी न चाहेगा।

आपकी इच्छा हो तो इस नवीन उद्योगको अपनानेमें विलम्ब न कीजिये।

व्यापारियोंको सूचना।

दैनिक विश्वमित्रमें व्यापारियोंके लाभ की सभी बातें रहेगी। यदि वे सालमें १० खर्च भी कर देंगे, तो किसी समय हजारों पा जायेंगे। वार्षिक १०) छ मासका ५) तीन मासका ३)

॥ श्रीहरिः ॥

विश्वामित्र ।

खण्ड १ संख्या १

श्री विजय...

वैसे तो भार...
षियोंने जो त्योह...
सभी कोई न ...
लिये हुए हैं, पर ...
मीके त्योहारमें ...
विशेषता है। ...
त्योहारसे क्षत्रियत्वका ...
घना सम्बन्ध है। आज जो भा-
रतीय आत्मरक्षाके लिये अपने
पास एक छुरी और साधारणसे
साधारण हथियारतक नहीं रख
सकते उन्हें भले ही विजया द-
शमीका यथार्थ महत्व न मालूम
हो सके, पर जिन दिनों क्षत्रिय
राजाओंका राज्य था और देश-
...लिये क्षत्रिय राजाओंके
सब प्रकार समर्थ होनेपर भी कभी-

चन्द्रजी महाराजने लङ्काधिपति
महाप्रतापी रावणपर चढ़ाईकर
कुछ ही दिनोंकी लड़ाईके बाद
उसपर विजयप्राप्त की थी। इस
तरह क्वार शुक्ला दशमी वास्त-
वमें ही विजया दशमी बन गयी
और तबसे अबतक बराबर यह
इसी नामसे प्रसिद्ध है। वैसे तो जब
भारतमें क्षत्रियोंका धर्मराज्य था तब
अनेक अवसरोंपर वे शत्रुओंसे

...हुए थे, पर
...मरवश युद्धमें
...है। उस समय-
...वास्तविक
...वह श्री वा-
...त रामायणमें
श्री वाल्मीकि-
...स्पष्ट है कि
...लंकाधिपति
...एक असाधारण
विजय था। कारण यह कि उन
दिनों वेदशास्त्रोंका अच्छा पंडि-
त होनेपर भी ब्राह्मणकुलो-
त्पन्न रावण मद्यमांसके सेवन त-
था अनेक प्रकारके कुसंगके कार-
ण मनुष्य श्रेणीसे गिर राक्षस
कोटिको पहुंच गया था। उसके
अत्याचारोंके मारे देशभरमें भय
छा गया था, क्योंकि उसके रा-
ज्यके निशाचर समुद्र पारसे भा-

रतमें आ जाते ही जाते थे वहां के भलेमानसोंपर वे नाना प्रकारके अत्याचार करते थे। स्वर्णभूमि भारतके अनेक प्रदेशोंको लूट लूट वे समुद्र पार उठा ले गये और अपने देशको उन्होंने सोनेका बना डाला था। आर्योंकी स्वतन्त्रता हरण करना तो उनके बायें हाथका खेल था, क्योंकि घूमते फिरते वे जिस स्त्री या पुरुषको चाहते थे अकारण ही पकड़ अपने यहां ले जा जेलमें डाल देते थे और जिसे चाहते थे उसे मार डालते थे। समुद्र पारके उन राक्षसोंने अपना ऐसा संगठन कर लिया था कि किसीको स्वप्नमें भी यह ध्यान नहीं था कि इतने प्रबल प्रतापी राक्षसोंका भी अन्त होगा। पर कोई अत्याचारी चाहे प्रत्यक्षमें कितना ही बलवान क्यों न दिखता हो उसके पापका घड़ा भर जाने पर अनायास ही उसका नाश करनेवाला पैदा हो जाता है। श्री रामचन्द्रजीने उस समयके राक्षसोंका वधकर भारतका उद्धार किया था इसीलिये लाखों वर्ष बीत जानेपर भी उनके उस विजयका उत्सव आज घर घर मनाया जा रहा है।

श्री विजया दशमीका श्रीरामचन्द्रजी महाराजके चरित्रसे बड़ा घना सम्बन्ध हो गया है। इस त्योहार पर नगर नगर और ग्राम ग्राममें विजयका उत्सव हिन्दू मात्र इस होना वस्थामें भी आज तक बराबर मनाते आ रहे हैं। श्री विजया दशमीका नाम लेते ही मर्यादा पुरुषोत्तम रामके चरित्रको प्रत्येक हिन्दूके हृदयमें याद आने लगती हैं। इसका कारण केवल यही नहीं है कि उन्होंने राक्षसोंसे धर्मात्माओंकी रक्षा की थी। यह भी एक बहुत बड़ा कारण है पर श्रीरामचन्द्रजीका स्मरण उनके अलौकिक गुणोंके कारण होता है। आजके सभ्यताभिमानी भले ही डींग मार लें कि पूर्वमें सदा स्वेच्छाचारी शासन व्यवस्था रही है, पर एक श्रीरामचन्द्रके ही जीवन चरित्रको पढ़नेसे ही सिद्ध हो जाता है कि रामराज्य जैसा उत्तरदायित्वपूर्ण आदर्श राज्य सभ्यताके शिखरपर पहुंचनेका दावा करनेवाले पश्चिमीय देशोंमें भी कहीं नहीं है। जिस प्रकार आज यूरोप तथा संसारके अन्य ईसाई राष्ट्रोंमें राज्यके लिये भयङ्कर मारकाट मच रही है उसकी तुलना जरा राम और श्री भरतजीके आचरणोंसे तो करिये। रामको यह मालूम होता है कि हमारी एक माता हमें नहीं पसन्द करती और हमारे भाई भरतको राज्य दिलाना चाहती है। राम तुरन्त उस राज्याधिकारको लात मारकर बन जानेको तैयार हो जाते हैं जिसपर उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। जब भरतको मालूम होता है कि न्यायसे राज्यके अधिकारी रामको हमारी माताकी कुटिलताके कारण राज्य छोड़ बन जाना पड़ता है उसी क्षण वे राज्य करनेसे साफ इनकार कर जाते हैं। कहिये तो सही प्रजा और कुलहितको ध्यानमें रख आज किस देशका राजा ऐसा है जो राम और भरतकी तरह त्याग दिखा सकता है।

वीर शिरोमणि रामके राज्यमें एक साधारणसे साधारण प्रजाजनकी बातपर कैसा ध्यान दिया जाता था, यह उनके जीवनकी एक ही घटनासे ही भलीभांति सिद्ध है। जिस समय रामने सुना कि, एक धोबीको इस लिये सीताके आचरणोंके सम्बन्धमें सन्देह हो रहा है क्योंकि वे बहुत दिनोंतक रावणके यहां रही थीं उसी समय उन्हों

अपनी प्राणप्यारी सीताको घरसे निकाल बाहर कर दिया। एक साधारणसे प्रजाजनकी इच्छाका आज उस प्रकार आदर होने तो तो बात ही दूर रही कितने ही सभ्यताभिमानी ईसाई अपने देशकी जनताके अधिकांशकी इच्छाके अनुसार भी काम करनेको तैयार नहीं हैं। दूसरे देशोंको आक्रान्त करनेके लिये आजके सभ्यताभिमानी ईसाई राष्ट्रोंने अनेक बार खूनकी नदियां बहायी हैं और आज भी कितने ही बहा रहे हैं परन्तु महाराज रामचन्द्रने दूसरेके राज्य जीत कर भी उनकी स्वतंत्रता नहीं छीनी थी। यदि वे स्वेच्छाचारी राजा होते तो कभी सम्भव नहीं था कि, बालिको मार उसका राज्य उसके भाई सुग्रीवको तथा रावणका वध कर लङ्काका राज्य विभीषणको सौंप देते।

सच तो यह है कि, मर्यादा पुरुषोत्तम राम धर्मकी सूक्ष्म गति जाननेवाले थे। वे आदर्श शासक थे इसी लिये उनका नाम भारतके इतिहासमें अमर बना हुआ है। उनके अलौकिक गुणोंके कारण ही हिन्दू जाति उन्हें अपना आराध्य देव जानती है। श्री विजया दशमी आकर एक बार फिर उन आदर्श रामके अनुकरणीय गुणोंका स्मरण करा रही है। पर स्मरण करने मात्रसे विशेष लाभ नहीं हो सकता यदि साथ ही हम अपनेमें भी उनके पवित्र गुणोंका समावेश करनेकी चेष्टा न करें। हिन्दुओ! विजयतिथि विजया दशमीके इस शुभ अवसरपर अपने अनेकानेक कष्टोंपर विजय प्राप्त करनेको बद्ध परिकर हो जाओ। मत समझो कि, सैकड़ों वर्षोंकी परतंत्रताके कारण तुम शक्तिहीन और साधनविहीन हो गये हो। श्री रामचन्द्रजीके चरित्रसे शिक्षा ग्रहण करो कि, आरम्भमें शक्तिहीन और साधन विहीन होकर भी एकमात्र न्याय और धर्मके बलसे पीछे विजयके सब प्रकारके साधन स्वयमेव किस प्रकार प्राप्त हो जाते हैं।

रणचंडीका खप्पर

एक मासके भीतर महासमर सम्बन्धी कई मार्केकी घटनाएं हो गयी हैं। जिस समय कास्पियन सागरके पश्चिमी तटके बाकू बन्दरको खाली करनेका समाचार मिला था उस समय हमें बड़ी चिन्ता हुई थी, क्योंकि भय हुआ था कि कहीं जर्मन और तुर्क सेनाएं कास्पियन समुद्र पारकर भारतकी ओर शीघ्रतासे न बढ़ चलें। इस भयका कारण भी था, क्योंकि प्रायः कुल काकेशसपर जर्मनोंके अधिकार होने और काकेशस तथा तबरेजमें ही तुर्कोंकी मुख्य सेना होनेके समाचार भी मिले थे। पर जान पड़ता है कि, अब मियांको अपनी ही दाढ़ी बुझानेकी पड़ रही है जिसके कारण बहुतसी सेना जमा कर रखनेपर भी जर्मनों और तुर्कोंके पूर्वकी ओर बढ़नेका कोई समाचार नहीं आया है। महीनेके भीतर सबसे मार्केकी बात तो यह हुई कि जर्मनीका एक साथी बलगेरिया उससे फूट गया और उसने सब प्रकारसे हार मान मित्रराष्ट्रोंको आत्मसमर्पण कर दिया। मित्रराष्ट्रोंसे उसकी जो क्षणिक सन्धि हुई उसमें उसने उनकी सब शर्तें मान लीं। इस असाधारण सफलताके अवसरपर सभी मित्रराष्ट्रोंमें बड़ी खुशियां मनायी गयीं और भारतमें भी एक दिन इस खुशीमें सब सरकारी

दफ्तरोंमें कुट्टी रही। बलगेरियाकी सन्धिकी जो शर्तें आयी थीं जान पड़ता है कि, उन सबके अनुसार अभीतक कार्य नहीं हुआ है। इससे जो प्रसन्नता मित्रराष्ट्रोंके सभी शुभचिन्तकोंको उन शर्त्तोंकी बात जाननेके समय हुई थी उसमें अवश्य ही इस समय कुछ कमी आ गयी है।

सभी समझ रहे थे कि बलगेरियाने जब अपने यहां की सब रेलोंपर मित्रराष्ट्रोंको अधिकार करने देनेकी बात मान ली है तब लोग परम प्रसन्न हुए थे कि, अब बर्लिनसे बलगेरियाकी राजधानी सोफिया होकर जो रेल रूमराजधानी कुस्तुन्तुनियाको जाती है वह तुरन्त मित्रसेनाओंके अधिकारमें आ जायगी जिससे रूमका जर्मनी और आस्ट्रियासे सीधा रेलवे सम्बन्ध कट जायगा। उस दशामें रूमको भी लाचार हो बलगेरियाकी तरह आत्मसमर्पण करना पड़ेगा। इसकी सम्भावना उस समय तो यहांतक थी कि इस आशयके भी कई समाचार आ चुके कि रूम भी संधिप्रस्ताव करनेको तैयार हो गया है। पर पीछे उनका खण्डन किया गया और बताया गया कि जबतक रूमको यह न निश्चय हो जायगा कि बर्लिन—सोफिया—कुस्तुन्तुनिया रेलकी रक्षाके लिये जर्मनी और आस्ट्रिया कितना उद्योग कर सकते हैं तबतक सरकारी तौरपर रूम संधिकी चर्चा न करेगा। एक तारमें यह भी कहा गया था कि रूमने जर्मनीसे कहा है कि हम भी संधिप्रस्ताव करते हैं तब जर्मनीने उत्तर दिया कि, हर्गिज नहीं। धैर्य रखो, बलगेरियापर सैनिक अधिकार कर लिया जायगा। पीछे सोफियामें जर्मन और आस्ट्रियन फौजोंके पहुंचनेका भी समाचार आया। जर्मनी और आस्ट्रियनोंके सामना करनेके कारण अथवा किसी अन्य कारणसे मित्रसेनाएं कुस्तुन्तुनिया जानेवाली रेलपर अभीतक अधिकार नहीं कर सकी हैं, यह ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता, परन्तु ऐसी आशा है कि निश स्थानपर रूमानियासे भेजे हुए कई जर्मन डिवीजन तथा दो आस्ट्रियन डिवीजन डट रहे हैं और वे उस रेलवेकी रक्षाके लिये जी होमकर लड़ेंगे।

सच तो यह है कि, जबतक मित्रसेनाओंका कुस्तुन्तुनिया जानेवाली रेलवेपर अधिकार न जाय तबतक रूम और आस्ट्रियाको विशेष चिन्ता न होगी। अधिकार कबतक होगा, यह नहीं कहा जासकता। उस्कुब स्थानके पश्चिम ६५ हजार बलगरोंके आत्मसमर्पणकी खबर आयी है। इससे जान पड़ता है कि बल्गेरिया क्षणिक सन्धिकी शर्तें पूरी कर रहा है, पर धीरे धीरे, जो हो। बलगरोंसे निश्चिन्त हो मित्रसेनाएं धीरे धीरे सर्वियाका उद्धार करती हुई निशकी ओर बढ़ रही हैं, यही कुछ कम लाभकी बात नहीं है।

रूसपर इस समय दो ओरसे सङ्कट उपस्थित होरहा है। एक ओर तो बर्लिनसे कुस्तुन्तुनियाका रेल सम्बन्ध कट जानेका भय हो रहा है और दूसरी ओर उसकी फिलस्तीनकी सेनाको जेनरल अलेनबीकी सेनाने हराकर उससे कुल फिलस्तीन तथा सीरिया प्रदेशका कुछ भाग छीन लिया है। परन्तु फिलस्तीनकी इतनी गहरी हारसे भी तुर्कोंकी मुख्य सेनापर उसका विशेष प्रभाव नहीं हुआ है, क्योंकि वह काकेशशमें है। इसके सिवा जेनरल अलेनबीकी सीरियामें [illegible]

ही शीघ्रतासे सफलता प्राप्त होगी, इसमें सन्देह हो रहा है। कारण यह कि, रूटरको पता चला है कि, अलेप्पोमें तुर्कोंकी बड़ी मजबूत फौज पड़ी है और सीरियामें बहुत बड़ी ब्रिटिश सेनाके लिये सामग्री पहुंचाना भी कठिन होगा। पर इसमें सन्देह नहीं कि, फिलस्तीनकी जीतसे फारसकी अवस्था बहुत कुछ सुधर गयी है। फारसमें कहांपर क्या हो रहा है। यह बात अभीतक हमें नहीं बतायी गयी है, पर एक समाचारसे यह मालूम हुआ है कि फारसके तबरेज नगरमें तुर्कोंकी मजबूत सेना पड़ी है। फ्रांसमें भी महीनेभरमें मित्रसेनाओंने जैसी सफलताएं प्राप्त की हैं वह इस महासमरके इतिहासमें असाधारण घटना है। उन्होंने इस वर्षकी छिनी हुई हजारों वर्गमील भूमि ही शत्रु पंजेसे नहीं छुड़ायी, बल्कि वह काम कर दिखाया जो अभीतक वे न कर सकी थीं। गत वर्ष जिन सुप्रसिद्ध स्थानोंके बहुत पासतक पहुंचकर भी वे उनपर अधिकार न कर सकी थीं वे सेण्टक्वेण्टिन आ[illegible]कम्ब्रे नामक सुदृढ़ नगर [illegible]के हो गये हैं! यही

नहीं उन्होंने मीलोंतक हिण्डेनवर्ग पांत तोड़ दी है जिसकी दृढ़तापर जर्मन कभी फूले नहीं समाते थे। परन्तु इधर जर्मन वहां इस तरह डटकर लड़ने लगे हैं कि, अब एक एक फुट जमीन पर दखल जमानेके लिये मित्रसेनाओंको घोर युद्ध करना पड़ता है। सम्भव है कि, इन सफलताओंसे कितने ही आशावादी समझने लगे हों कि अब जर्मन सेना बिल्कुल ही हरा दी गयी है। ऐसे लोगोंको इस प्रकारकी अनुचित आशासे आगे मित्रराष्ट्रोंका बहुत कुछ अनिष्ट हो सकता है। यही सोच उस दिन मि० चर्चिलने कहा था कि, "यह न समझो कि जर्मनोंको हम जाड़के पहले पूर्ण रूपसे परास्त कर देंगे। वैसा करनेके लिये अभी हमें १९१९ में घोर प्रयत्न करने होंगे।" है भी यही बात क्योंकि तीन चार हफ्तेके भीतर ही फ्रांसमें बर्फ जम जानेसे लड़ाई रुक जायगी। इस बीच ही फ्रांस और बेलजियमसे जर्मन सेनाएं निकाल बाहर की जा सकेंगी, ऐसी आशा नहीं की जा सकती।

जो हो, सभी रणक्षेत्रोंपर शत्रुसेनाओंकी हार होने तथा बलगेरियाके फूट जानेसे स्वभावतः रूम, आस्ट्रिया और जर्मनोंकी प्रजाओंमें बड़ी चिन्ता हो गयी होगी। उनमें निराशाके भाव पैदा होनेके कारण आश्चर्य ही क्या है यदि शत्रुदेशोंकी जनताका एक बहुत बड़ा भाग शीघ्र समर समाप्त करनेके पक्षमें हो? उत्साह भङ्ग पुरुषोंमें पुनः लड़नेका उत्साह पैदा करनेके लिये ही सम्भवतः जर्मनोंने अमेरिकाके रा० विलसनकी शर्तें मान शीघ्र सन्धि करनेका प्रस्ताव किया है, क्योंकि जैसा हालमें सन्धिप्रस्तावपर भाषण करते हुए जर्मन चांसलर प्रिन्स मैक्सने कहा है 'कोई राजनीतिज्ञ महासमरके उत्तरदायित्वोंको अपने ऊपर अकेला नहीं ले सकता जब क जनताका अधिकांश उसकी सहायता करनेको तैयार न हो।' पर जर्मनोंका हालका सन्धिप्रस्ताव भी चालसे खाली नहीं है। प्रस्तावके मुख्य उद्देश्य तीन थे। पहला तो अमेरिकाको अन्तरङ्ग राष्ट्रोंसे फोड़ना, दूसरा अन्तरङ्गराष्ट्रोंके प्रस्ताव अस्वीकार करनेपर जर्मन जनतामें मातृभूमिकी रक्षाके लिये जी झोंककर लड़नेका उत्साह पैदा करना और तीसरा

यदि अन्तरङ्ग राष्ट्र क्षणिक संधि कर लें तो उस बीच घोर युद्धके लिये पुन: जर्मन-शक्ति संगठित कर लेना। रा० विलसनने जर्मनीके संधिप्रस्तावका जो उत्तर दिया है उससे उसकी पहली और तीसरी आशाओंके सिद्ध होनेका तो कोई लक्षण नहीं दिखता, पर दूसरी—और हमारी समझसे उसकी मुख्य आशा—कदाचित् पूरी हो जाय। कारण यह कि रा० विलसनने कहा है कि क्षणिक संधि तभी हो सकती है जब पहले मध्य राष्ट्रोंकी सेनाएं आक्रमणकी हुई भूमि तुरन्त खाली कर दें। हम समझते हैं कि, एक इसी बातको जर्मन जनताके सामने रखकर तथा जर्मनीके अन्य भाग्यविधाता उसे यह समझानेका प्रयत्न करेंगे कि, देखो जर्मनीके नाशके लिये तुले हुए अन्तरङ्ग राष्ट्र हमारा संधि-प्रस्ताव अस्वीकार कर किस प्रकारकी असम्भव शर्तें पेश कर रहे हैं। हम समझते हैं कि, उन्हें जनताको उस प्रकारकी बातें कह उत्तेजित करनेमें बहुत कुछ सफलता प्राप्त हो सकती है। वैसे तो रा० विलसनकी बातोंका जो उत्तर जर्मनी देगा उसीपर समरकी समाप्ति बहुत कुछ निर्भर होगी और तभी निश्चित रूपसे कुछ कहा जा सकता है कि शीघ्र सन्धि होगी कि नहीं पर लक्षणोंसे तो हमें अब भी शीघ्र सन्धि होनेकी कोई आशा नहीं दिखती है यद्यपि मित्रराष्ट्रोंमें भी कितने ही लोग शीघ्र सन्धिकी इच्छा रखते हैं जैसा उस दिन लण्डनकी एक सभामें मि० चर्चिलके भाषणके समय सन्धि चाहनेवाले कितनी ही बार बीचमें बोल पड़े जिससे कितने ही स्त्री पुरुषोंको सभासे निकाल बाहर करना पड़ा।

रमता योगी

बहुतसे निर्बुद्धि कोट पतलून पहनने वालोंकी बुराई किया करते हैं। क्या यथा राजा तथा प्रजाके सिद्धान्तको मानना बुरा है सोलहों आना अच्छा है।

—*—

मारवाड़ी बड़े दीनबन्धु हैं, परन्तु इधर वारलोनने उन्हें चुप कर दिया है तब भी बेचारे कितना घाटा उठाकर भी सस्ता कपड़ा बेचरहे हैं। यदि वे चाहें तो भाव आसमानको ले जायें परन्तु उन्हें गरीबोंका भी तो ध्यान है। भला हो इन परोपकारी व्यापारियों का।

—*—

व्यापारी मुहल्लोंमें एक नया भूत नजर आने लगा है। जहां व्यापारी सोया कि उसके शिरपर यह भूत नाचने लगता है। वह अपना नाम कंट्रोल बताता है। न जाने सरकार इस कंट्रोलका गला क्यों नहीं घोटती। क्या व्यापारी उसकी प्रजा नहीं हैं।

—*—

रूस्तानको पढ़ाना लिखाना सचमुच ही उसे खराब करना है युरोप अमेरिका आदि देशोंके लड़के पढ़ लिखकर बिलकुल ही खराब होचुके। मूर्खोंसे ही देशका हित होता है। भारतीय व्यापारी यदि अपने लड़के नहीं पढ़ाते तो सचमुच अपने खान्दानकी जड़ मजबूत कर रहे हैं।

—*—

भारतमें यदि प्रजाको पूरा सुख है तो पुलिसकी बदौलत। पुलिस प्रजासे वेतन पाकर भी कभी अपनेको किसीका नौकर नहीं समझती। नौकर समझ कर कौन अच्छा काम करता है?

विवाहोंमें जो लेनदेन होने लगा है वह बहुत अच्छा है। व्यापारियोंके राज्यमें रहकर विवाह शादीमें भी क्यों न व्यापार किया जाये।

—*—

स्वर्गमें देवताओंने कमिटीकर नियम बना लिया है कि जगहको कमीसे चुने हुए आदमी ही वहां रखे जायें। जिन्होंने कोई खास धर्म पुण्य किया हो उनके साथ पहली रियायत है जिन धर्मात्माओंने अपनी निस्सहाय छोटी उम्र की लड़कियां बुढ़ोंको ब्याहकर उनके बुढ़ापेकी लाज रखली वेही सर्वोत्तम माने गये हैं। स्वर्गमें पहला स्थान उन्हींको दिया गया है।

—*—

लो० तिलक इतने धुरन्धर विद्वान् होते हुए भी दूरदर्शी नहीं हैं। वे बड़े बड़े अफसरोंसे भी नहीं डरते। भविष्यमें उन्हें कौन कौंसिलका मेम्बर बनायेगा। इससे तो सुरेन्द्र बाबू ही बुद्धिमान हैं जो हवाका रुख देखकर चलते हैं आजकल अफसरोंकी कैसी खुशामद करते हैं।

—*—

ब्रटिश शासनमें भारत विशेष रूपसे सम्पन्न होगया है। पहले उसने कब रुपयेका चार सेर आटा और आध सेर घी खाया था। शौकीन सस्ती चीज पसन्द ही नहीं करते।

—*—

भारतीय किसान परोपकारके लिये ही पैदा किये गये हैं। उन्हें यदि स्वराज्य दे दिया गया तो फिर वे क्यों किसीको पूछेंगे। उन्हें इसी तरह दीन अवस्थामें रखना ही ठीक होगा।

—*—

सरकार न जाने जगह जगह स्कूल क्यों खुलवाती है। स्कूलोंमें छात्र स्वतन्त्र देशोंका इतिहास पढ़कर स्वतन्त्र बननेकी अभिलाषा प्रकट करने लगते हैं।

—*—

सरकारका देशप्रेम सराहनीय है। भारतमें जो अस्पताल खुलवाती है उनमें भी विलायती दवाइयां बटवाती है।

—*—

जब मक्खियां अपने लिये कभी शहद नहीं जमा करतीं तो सेठ साहूकार क्यों अपने हाथका कमाया हुआ पैसा आप खर्च करें मिहनतसे पायी हुई चीज अलग करनेमें भी तो दुःख होता है। पैसा पास होते हुए भी जो दमड़ी न खर्चे उसे कञ्जूस नहीं बल्कि कौड़ीनन्दन कहना होगा।

—*—

गरीबोंको अन्न वस्त्र बांटना भला कहांकी अच्छी बात है। घरका पैसा क्या लुटानेके लिये हुआ करता है यदि उसीसे जोरूके गहने बनवाये जायेंगे तो उसकी छमछमसे दुनियामें कितनी नामवरी होगी।

—*—

भारत कहनेको निर्धन है, परन्तु यहां जगह जगह खजाने गड़ रहे हैं। जब सभी चीजोंका कंट्रोल हो रहा है तो सरकार जमीनपर कंट्रोल कर उसे एक सिरेसे दूसरे सिरेतक क्यों नहीं खुदवा डालती फिर क्या है रेल और जहाज लादने पड़ेंगे।

—*—

सरकार सोच समझकर काम नहीं करती। भारतीयोंको हथियार देनेका विचार ही क्यों करती है अभी तो लड़ाईका जमाना है। युद्धस्थलके लिये हथियार चाहिये अपना विचार समर कालके लिये स्थगित कर दे भारतीय तो अहिंसक हैं। शस्त्र न भी मिलेंगे तो उनका क्या बिगड़ता है।

देशभक्त डा० सुब्रह्मराय ऐयर।
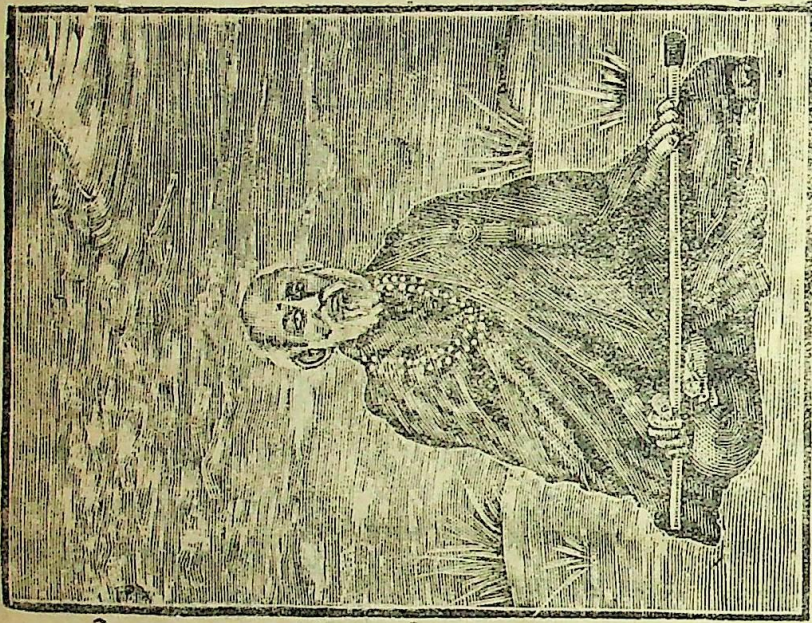
आपने बड़ा ही निर्भीक पत्र अमेरिकाके राष्ट्रपतिके पास भेज इंगलैंड और अमेरिकामें हलचल मचा दी। वर्तमान स्वराज्यान्दोलनका श्रेय आप हीको है-क्योंकि आपने यह घोषणा की थी-"यदि स्वराज्यान्दोलन नियम विरुद्ध भी ठहरा दिये जाये तो भी मैं उससे एककदम न हटूंगा।

डा० ऐयरका मत।

स्पेशल कांग्रेस आयी और चली गयी। वह जैसी सफलतासे हुई उसके लिये उसमें सम्मिलित राष्ट्रके सभी प्रतिनिधि अत्यन्त प्रशंसाके पात्र हैं। अब किस बातकी ओर प्रत्येक कांग्रेसवाले-का ध्यान तुरन्त जाना चाहिये, यह विचारणीय है, क्योंकि अबसे कोई ६० दिनके भीतर ही कांग्रेसका वार्षिक अधिवेशन भारतकी राजधानी दिल्लीमें होगा। इसमें सन्देह ही जान पड़ता है कि, उस समयतक भारतीय सुधारोंका कानून बनकर तैयार हो जायगा। यदि वह तैयार हो जायगा तो कांग्रेस सावधानतापूर्वक उसपर पूरा विचार करेहीगी। पर मेरी तुच्छ रायमें एक विशेष प्रश्न है जिसपर कांग्रेसको सावधानतापूर्वक विचारकर निर्णय करना चाहिये। कांग्रेस पहली ही बार हमारे पवित्र कुरुक्षेत्रमें जुड़ेगी, इस लिये उसमें असाधारण संख्यामें प्रतिनिधि उपस्थित ही होंगे, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं।

स्वभाग्यनिर्णय।

वह प्रश्न यह है कि, कांग्रेस इस आशयका प्रस्ताव पास करनेकी आवश्यकता और औचित्यपर विचार करे कि, ब्रिटिश भारतके २५ करोड़ भारतीयोंकी ओरसे राष्ट्रपति विलसनके पास प्रार्थनापत्र भेज उस शक्तिशाली राष्ट्रकी सहायता और सहानुभूतिको प्रार्थना की जाय जिसके ये संसारके ऐसे विकट समयमें नेता है। उसमें कहा जाय कि वे हमें यथासम्भव उस स्वभाग्य निर्णयके सिद्धान्तके अनुसार हमारे अधिकारोंकी प्राप्तिमें सहायता दें और सहानुभूति दिखावें जिसके वे सबसे बड़े पक्षपाती और समर्थक हैं। मैं जानता हूं कि मेरे इस प्रस्तावसे पहले पहल कुछ लोग चौंकेंगे। पर आगे चलकर मैं दिखाऊंगा कि किन कारणोंसे यह उपयुक्त ही नहीं, बल्कि मातृभूमिके सच्चे प्रेमियोंके स्वीकार करने योग्य है।

सबसे पहले मैं यह कह देना चाहता हूं कि, रा० विलसनके पास जो पत्र भेजा जायगा वह भारतके अबतकके ब्रिटिश शासनकी निन्दाकी भांति न होगा। बल्कि उसमें वे लाभ स्वीकार किये जायंगे जो भारतको ब्रिटिश शासनसे हुए हैं। प्रार्थनापत्रमें इसी बातपर पूरा जोर दिया जायगा कि, जिस अमेरिकन राष्ट्रने न्याय और स्वतन्त्रताका पक्ष ले इस भयङ्कर समरकी अवस्था ही बदल दी है वह अपने उचित प्रभावको काममें लावे जिससे ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलकी गत वर्षकी अगस्तवाली भारतमें स्वराज्य स्थापित करनेकी घोषणा शीघ्र ही सफल हो। भारतको स्वराज्यकी जो पहली किस्त दी जाय वह वास्तवमें यथेष्ट हो और स्वराज्य देनेके लिये जो प्रबन्ध किया जाय वह ऐसा हो कि जिससे कुछ दिनोंमें अपने आप स्वराज्य मिल जाय और वह किसी व्यक्ति या व्यक्तिसमूहकी इच्छापर अवलम्बित न हो जो अवश्य ही थोड़े बहुत पक्षपातपूर्ण होंगे, स्वतन्त्र मध्यस्थ न होंगे।

अब अवस्थापर विचार करिये। एक ओर तो सुधारोंकी रचनामें भारतीयोंको प्रभावपूर्ण सम्मति देनेका अवसर ही नहीं दिया जाता, इस लिये वे सुधार स्वभाग्यनिर्णयके सिद्धान्तके अनुकूल कदापि नहीं हो सकते। ब्रिटिश पार्लमेण्ट भी सुधारोंके

सम्बन्धमें बिल्कुल ही स्वार्थरहित [illegible] नहीं हो सकती। ब्रिटिश [illegible]ताके मामले भारतीय मामलोंसे [illegible] मिले जुले हैं कि, दोनोंके [illegible]र्थोंमें संघर्ष होनाअनिवार्य है। [illegible]किविशेष चाहे जितने न्याय [illegible] सत्यसे प्रेरित हो इस समय- [illegible] पराधीन देशके (भारतके) [illegible]धिकारों और मांगोंके सम्बन्धमें [illegible]कुल ही पक्षपातरहित विचार [illegible] नेकी इच्छा करें; पर ब्रिटिश [illegible]ता इन बातोंके सम्बन्धके अपने [illegible]र्थोंमें इतनी लिप्त है कि अधि- [illegible]शकी तो बात ही जाने दीजिये उसका एक बड़ा भाग भी भारतकी [illegible] स्वेच्छा, न्याय और स्वत- [illegible]तासे स्वीकार करनेको तैयार [illegible] हो सकता। इस लिये यह [illegible]कुल ही उचित है कि, हमलोग [illegible] विलसनसे कहें कि, हमारे [illegible]मलेमें ब्रिटिश राष्ट्रसे ऐसा निर्णय करावें जो स्वयं उनके [illegible]ष्ट्रको (अमेरिकाको) स्वीकार [illegible] जिससे उसके मित्रराष्ट्र बृ- टेनके निर्णयपर स्वार्थके कारण पक्षपात करनेका कलंक न लगाया [illegible] सके। राष्ट्रोंके संघ बनानेकी [illegible] आज सभी राष्ट्रोंका ध्यान [illegible]। यदि आजऐसा कोई संघ [illegible] तो हम निश्चय ही उससे अपील करते। पर ऐसे संघके अभावमें यदि कांग्रेसमें उपस्थित भारतीय जनताके प्रतिनिधि इतने बड़े आवश्यक विषयमें ऐसे सङ्कटके समय रा० विलसनसे सहायता चाहते हैं, तो कोई भी ब्रिटेनवासी उनके इस कार्यके औ- चित्यपर यथार्थमें आपत्ति नहीं कर सकता। कुछ दिनों बाद जब संधिपरिषद् होगी तब अवश्य ही रा० विलसनको बताना होगा कि इङ्गलैण्डका स्वभाग्यनिर्णयके सि- द्धान्तका प्रतिपालक बनना उसके भारतके साथ किये हुए वर्त्तावसे भी सिद्ध है कि नहीं। इस तरह सभी विचारसे हमारे महान् उद्देश्यके सम्बन्धमें रा० विलस- नको कार्य करनेका अधिकार है। जो इङ्गलैण्ड भारतका अभिभावक और ट्रस्टी या धरोहरका प्रबन्धक होनेका दावा करता है उसे रा० विलसनके हस्तक्षेपसे प्रसन्न होना चाहिये यदि वास्तवमें वह संसा- रको इस बातसे सन्तुष्ट करना चाहता हैं कि जो प्रबन्ध वह अपनी ही इच्छाके अनुसार करनेवाला है वह वास्तवमें ही पक्षपातरहित, न्याय्य और पवित्र है। हमें यह भी ध्यानमें रखना चाहिये कि कि भारत सरकारके होम मेम्बर- ने कहा है कि कांग्रेसका डेपुटे- शन सरकार इङ्गलैण्ड न जाने देगी और भारतीयोंका इङ्गलैण्डमें काम नहीं है। इससे क्या उनका यह भाव है कि हमें यदि सुधारों- के सम्बन्धमें इङ्गलैण्डमें अपने शासकोंसे कुछ कहना है, तो वह अपनेचुने प्रतिनिधियोंद्वारा नहीं, ब- ल्कि किसी और मार्गसे प्रकट करें। यदि यही हैं तो इससे अधिक विश्वसनीय और प्रतिष्ठित मार्ग क्या हो सकता है कि हम जो क- हना चाहते हैं वह उन शासकोंके सबसे बड़े मित्रराष्ट्रके अध्यक्ष- द्वारा कहें जो उनका सब तरहसे निकट सम्बन्धी और स्वार्थ रहित है?

हम अराजक नहीं

इङ्गलैण्ड और अमेरिका दोनों ही देशोंके न्यायालयोंका नियम हैं कि, जो न्याय चाहता है उसे दोषरहित होकर आना चाहिये! इस नियमके आधारपर कहा जा सकता है कि, हम लोगोंकी बातें न सुनी जानी चाहिये क्योंकि ह- मारे मध्य अराजकोंका दल होने- से हम निर्दोष नहीं हैं और इससे सन्धि परिषद्में हमारी प्रार्थना नहीं सुनी जा सकती। इसके कई

उत्तर हैं। पहले तो हम यही नहीं मानते कि भारतमें नाम लेने योग्य कोई अराजक दल है। हम दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि, कुल राष्ट्र ब्रिटिश महाराजका पूर्णभक्त है। अराजकताके सम्बन्धमें जो बात कही जाती है वह राष्ट्रके विरुद्ध नहीं सिद्ध की जा सकती। इसमें सन्देह नहीं कि, कई वर्षोंसे समय समयपर पथभ्रष्ट युवकोंने राजनीतिक हत्याएं की हैं, पर इससे यह नहीं कहा जा सकता कि, भारतके किसी भी भागमें अराजकोंका कोई भारी दल है, क्योंकि यदि ऐसा दल होता, तो जिस समय अनेक कारणोंसे देश-भरमें असन्तोष छा रहा है कभी कभी एक दो हत्याएं होकर हो न रह जातीं, बल्कि वर्त्तमान शासन उलटनेको भारी षड्यन्त्र प्रकट होजाता। गवर्नमेण्ट अधिकसे अधिक यही सिद्ध कर सकी है कि, जर्मन प्रभावमें आये हुए बङ्गालके कुछ युवकोंने कुछ डाके डाले और हत्याएं कीं। पर उनके लिये राजभक्त भारतको उत्तरदाता ठहराना हासास्पद ही है जब कि उनका वास्तविक कारण अधिकारिवर्ग ही है। लार्ड कर्जनके समयसे अधिकारिवर्ग जिस दमननीतिसे काम ले रहा है उसीके कारण ही कुछ कोमलहृदय बालकोंके हृदयमें अप्रेम और अराजकताके भाव पैदा हुए। राजनीतिक अपराधोंके बराबर होते रहनेका कारण भी यही है कि वह दमननीति आजतक दिनपर दिन अधिक जोरसे काममें लायी जा रही है। साथ ही जासूसी पुलिसकी असह्य कार्यप्रणालीसे वह विभाग लोगोंकी दृष्टिमें घृणास्पद हो गया है जिसके फलस्वरूप गवर्नमेण्ट लोकप्रिय नहीं रही है। इस बातको पुष्टि मान० मि० श्रीनिवास शास्त्रीकी उस वक्तृतासे होता है जो उन्होंने मान० दादा-साहब खापर्डेके प्रस्तावपर कौंसिलमें दी थी। उन्होंने कहा है कि, खुफिया पुलिस विभागके कार्यों के ढङ्ग ऐसे हैं जिनसे कितने ही शान्ति चित्तवाले युवक राजद्रोही होगये हैं। यह बात अधिकारियोंको भी स्वीकार करनी पड़ेगी जो इस विषयमें हमारी कही बातोंकी ओर कान नहीं देते।

दुखोंकी जड़।

हालमें बङ्गालके गवर्नरने एक वक्तृता दी थी जिससे पता चलता है कि, उनकी धारणा है कि, बङ्गालके लोगोंके भावके कारण ही वहां सरकारके विरुद्ध षड्यंत्र रचे गये हैं क्योंकि, वे नजरबन्दोंसे सहानुभूति प्रकट करते हैं। यह सच है कि, नजरबन्दोंपर लोगोंके हृदयमें दया है, पर इसका कारण उनको वे असह्य यातनाएं हैं जो उन्हें नजरबन्दीमें सहनी पड़ती हैं। हमारे देशके १०० में ९९ आदमी बड़े सीधे सादे जीव हैं। उनके सम्बन्धमें यह कहना कि उन्हींके इशारेसे षड्यंत्र रचे जाते हैं बड़ी भारी भूल है। गवर्नर तो राजनीतिक लूटमारके लिये लोगोंके भावकी निन्दा करते हैं, पर लोग गवर्नमेण्टको ही उनके लिये जिम्मेवार ठहराते हैं। लोगोंका यह कार्य इस प्राचीन उपदेशके अनुकूल ही है कि, प्रजाजनोंके दुःखोंके अन्तमें उनके राजाके दोष ही कारण ठहरते हैं। यह उपदेश बिल्कुल ही ठीक है। यहां राजाका तात्पर्य वास्तवमें शासन करनेवाली शक्तिसे है। बङ्गालके गवर्नर जनताका यह भाव नहीं समझ सकते, क्योंकि वह उनके लिये सब प्रकारसे विदेशीय है। गवर्नरके देशमें यदि कुछ बुराई पैदा होतीहै

तो वहांकी जनता पार्लमेएट और मंत्रिमंडलसे उसे दूर करा सकती हैं। पर यहां बङ्गालकी जनता तो बिल्कुल ही शक्तिहीन है। वह कभी कुछ कहती भी है तो उसकी सुनवाई नहीं होती।

कांग्रेस तैयार हो

जो हो, कांग्रेसको साहसकर तैयार हो राष्ट्रको बता देना चाहिये कि रालट कमेटीकी रिपोर्टके फलस्वरूप कैसा सङ्कट उपस्थित होनेवाला है। उक्त कमेटी जिस ढङ्गसे अपने निर्णयोंपर पहुंची है उससे किसी भी सभ्य देशकी सरकार उनकी ओर कुछ ध्यान नहीं दे सकती। तो भी निश्चय जान पड़ता है कि, कमटीके निर्णय बाइबिलके वाक्योंकी तरह ठीक माने जायंगे और ऐसे कानून बनेंगे जो भारतमें सार्वजनिक जीवनका अन्त करनेवाले होंगे। साथ ही हमारे विरोधी सुधारोंके सम्बन्धमें भी रिपोर्टकी बातोंसे हमारे विरुद्ध काम लेंगे, यह भी निश्चय है जैसा 'लण्डन टाइम्स'ने शुरू भी कर दिया है। इस लिये कांग्रेसको इस रिपोर्ट और अपराधोंकी घटनाओंकी ओर पूरा ध्यान देना चाहिये।

रालट कमेटीकी रिपोर्ट

रिपोर्टके सम्बन्धमें कांग्रेसको ऐसे सज्जनोंकी एक कमेटी बनानी चाहिये जो रिपोर्टका सावधानतापूर्वक मनन करने और साधारण जनताके विचारानुसार उसका ऐसा उत्तर तैयार करनेको यथावश्यक समय दे सकें जिसके आधारपर कांग्रेस समाप्त होते ही इस विषयमें पार्लमेएटको प्रार्थनापत्र दिया जा सके। अपराधोंके सम्बन्धमें कांग्रेस यथाशक्ति ऐसे उपायोंके प्रस्ताव पास करे जिनसे भविष्यमें राजनीतिक अपराध न हों। यह बहुत आवश्यक है। और नहीं तो एक इसी लिये कि जिससे इतनी दूरीपर रहनेवाली ब्रिटिश जनताको कहीं यह भ्रम न हो जाय कि हम राजनीतिक अपराधोंके रोकनेमें अधिकारियोंके कामोंमें योग नहीं देते। मैं समझता हूं कि इस प्रकारका कांग्रेसका प्रयत्न बिलकुल ही निष्फल न होगा। यह सभी जानते हैं कि अपराध करनेवालोंमें कितने ही उच्च विचार वाले युवक हैं। उन्होंने जननी जन्मभूमिको बिदेशियोंके शासनसे मुक्त करनेके उद्देश्यसे ही गैर कानूनी कामोंमें हाथ डाला है। यदि उन्हें विश्वास करा दिया जाय कि, भगवानने बृटेन और भारतका सम्बन्ध जोड़ा है उसे तोड़नेको राष्ट्र कभी न तैयार होगा और राजनीतिक अपराधोंसे हमारे उद्देश्यकी पूर्तिमें ही विलम्ब होगा, तो सम्भवतः उनकी संख्यामें वृद्धिका होना रुक जायगा। मैं जानता हूं कि, कांग्रेसके इस कार्यके मार्गमें बड़ी बड़ी बाधाएं हैं सबसे बड़ी बाधा तो यह है कि, कुल देशका यहां तक कि बड़ी व्यवस्थापिका सभा के मेम्बरोंका भी अविश्वास किया जाता और उनसे इस विषयमें सहायता लेनेकी अरुचि दिखाई जाती है। रालट कमेटीने जिन प्रमाणोंके आधारपर अपनी रिपोर्ट तैयार की है उसे हमारे विश्वासपात्र प्रतिनिधियोंसे छिपानेका कोई कारण नहीं जान पड़ता। फिर क्यों वे उन्हें नहीं दिखाये गये? क्या इसका यही कारण नहीं है कि, हमारे प्रतिनिधि वास्तवमें सहानुभूतिरहित समझे गये हैं! हमारी अवस्था बड़ी संकटपूर्ण है। यदि इतनेपर भी कांग्रेस कार्य आरम्भ कर देगी, तो यह

निश्चयसा है कि, खुफिया पुलिस विभाग यह सिद्ध करनेका यत्न करेगा कि हम लोग सहायता नहीं करते हैं, बल्कि उसके कार्यमें बाधा डालते हैं। तब हम इस अवस्थासे भी बुरी अवस्थामें पड़ जायंगे। अभी तक तो यही कहा जाता है कि हम सरकारको योग नहीं देते। काम शुरू करनेपर हमपर षड्यंत्रियोंको सहयोग देनेका अभियोग लगाया जा सकता है। संक्षेपमें यों कहा जा सकता है कि, जब गवर्नमेण्टने बिल्कुल ही मूर्खतापूर्ण दमननीतिपर डटे रहनेका निश्चय किया है जिसका उद्देश्य नष्ट होनेके सिवा कोई फल नहीं हो सकता, जब जनताका बिलकुल ही अविश्वास किया जाता है जिससे कठिनाइयां बढ़ती हैं और जब खुफिया पुलिस विभागमें विश्वास किया जाता और उसीके भरोसे काम किया जाता है जिससे जनता और गवर्नमेण्टका भेद घटनेकी जगह बढ़ता ही जाता है, तब हम इस विषयमें क्या कर सकते हैं यह समझना असम्भवसा ही है। हम प्रचारके ढङ्गपर ही काम कर सकते हैं। इसके लिये बड़ा भारी हेतु यह है कि, नवयुवकोंको समझा दिया जाय कि, भारतके लिये स्वराज्य बिलकुल ही वैध उपायों और शान्तिपूर्ण कार्योंसे प्राप्त करना होगा। हम खूनखराबी करके अपना उद्देश्य न सिद्ध कर सकेंगे। आत्मवादी बननेका दावा करते हुए हम कैसे ऐसे पापपूर्ण मार्गपर चलनेको तैयार हो सकते हैं।

ऐक्यकी आवश्यकता।

हममें और अधिक ऐक्यका अभाव ही स्वराज्यप्राप्तिमें वास्तविक बाधक है। इस सम्बन्धमें हालैण्डके राजघरानेकी एक महिलाकी कुछ समय पहले वहां गये हुए एक भारतीयसे कही हुई बात उल्लेख योग्य है। भारतमें हमें हथियार रखनेकी स्वतन्त्रता नहीं है जिसके लिये हम बराबर शिकायत किया करते हैं। इस सम्बन्धमें उक्त महिलाने कहा कि "तुम किस लिये हथियार चाहते हो? ३० करोड़ भारतीयोंके डंडोंका ही सामना कौन कर सकता है?" उक्त महिलाके इस बिल्कुल ही सत्य कथनपर विचार करना चाहिये। निश्चय ही हमारे इतने अधिक प्रदेशोंकी विशाल जनसंख्याके अधिकांशमें भी वह शक्ति है जो बहुतसी तोपोंमें भी नहीं हो सकती। जिस दिन यह बात हृदयमें धंस जायगी उसी दिन स्वराज्य हमारी जेबमें आ जायगा। दूसरोंको हानि पहुंचानेवाले पशुबलसे काम लेनेसे मुक्ति, सद्भाव लिये नहीं तो बहुत दिनोंके लिये स्थगित हो जायगी अवश्य ही हमारे इस कथनकी ओर देशके उन अनेक भागोंके लोगोंका विशेष ध्यान आकृष्ट न होगा जहांके लोग आधा पेट भरनेको अन्नके लिये तथा लज्जानिवारणके हेतु वस्त्रके लिये आज असह्य कष्टभोग रहे हैं और इसमें भी सन्देह नहीं कि ऐसे कष्टपीड़ित देशवासियोंको शान्तिका पाठ पढ़ाना अनुचित प्रतीत होगा। तो भी मुझे ऐसा जान पड़ता है कि यह अवस्था थोड़े दिनोंतक ही रहेगी। इस लिये राजनीतिक अपराधोंके कंटकपूर्ण विषयकी ओर उपर्युक्त ढंगसे कर्त्तव्य पालन करनेमें हमें विलम्ब न करना चाहिये। इसी लिये देश तथा उनप्रतिनिधियोंके विचारार्थ हमने राजनीतिक अपराधोंके मूलोच्छेदके यत्नके लिये यह प्रस्ताव उपस्थित किया है जो कौरवों और पांडवोंके मिलनेके प्राचीन स्थान कुरुक्षेत्रमें जमा होंगे। परमात्मा करे वह कांग्रेस अपने बुद्धिमत्तापूर्ण निश्चयोंसे मातृभूमिके शीघ्र उत्थानमें सहायक हो।

स्वभाव क्यों त्यागा

लोगोंको यह आश्चर्य होता है कि ब्रिटेनकी वर्तमान सरकार लिबरल या उदार है तो भी उसके काम आजकल टोरी अथवा यूनियनिस्ट या अनुदार दलवालोंसे कम स्वेच्छाचारितापूर्ण नहीं होते है। ब्रिटेनमें कई राजनीतिक दल हैं और जब जिस दलका प्राधान्य होता है तब उसी दलके किसी योग्य पुरुषको ब्रिटेनके महाराज प्रधान सचिव बनाते और वही शासनकार्य चलानेको साम्राज्यके उच्चपदोंपर अपनी इच्छाके अनुसार योग्य व्यक्तियोंको नियुक्त करता है। वह बहुधा अपने ही दलवालोंको दायित्वपूर्ण पदोंपर नियुक्त करता है। पर इस समय अवस्था ही कुछ और है। इस समय ब्रिटेनमें संयुक्त मन्त्रिमण्डल है जिसमें वहांके सभी मुख्य दलोंके प्रतिनिधि हैं। प्रधान मन्त्रीके पदपर लार्ड नार्थक्लिफके पत्रोंके प्रभावसे इस समय लिबरल या उदारदली मि० लायड जार्ज विराजमान हैं पर मन्त्रिमण्डलमें उन्होंने अधिकांश टोरियों और यूनियनिस्टोंको ही भर रखा है। इसका फल यह हुआ है कि, लिबरलोंका प्राधान्य होनेपर भी आज ब्रिटिश साम्राज्यकी शासन व्यवस्थामें यूनियनिस्टोंका ही पूरा हाथ है। इस दलके लोग स्वभावसे ही अनुदार होते हैं इसीका फल है कि, आयर्लैण्ड और भारत दोनों ही देशोंकी न्याय्य आकांक्षाएं पूरी नहीं होने पातीं। यही कारण है कि भारतीय स्वराज्यके विरोधी सिडेनहम कम्पनी और डा० नायर ब्रिटेनमें स्वतन्त्रतापूर्वक धूम मचा सकते हैं, पर भारतकी प्रतिनिधिसभाओं कांग्रेस और मुसलिम लीगके डेपुटेशनोंको अपने अधिकारोंके लिये आन्दोलन करनेको इङ्गलैण्ड जानेके लिये पासपोर्टतक नहीं दिये जाते।

प्रधानमन्त्री मि० लायड जार्ज उदारदलके हैं और इस दलवाले स्वभावसे ही प्रायः सुधारोंके पक्षपाती होते हैं, यद्यपि भारतके सम्बन्धमें सदा यही बात ठीक नहीं मानी जा सकती है। परंतु जिन लोगोंको प्रधानमंत्रीने अपना सहकारी बना रखा है वे प्रसिद्ध सुधारविरोधी हैं। सबसे पहले एक्सचेकरके चान्सलर और कामन सभाके लीडर मि० बानर लाको लीजिये। ये आयरिश स्वराज्यके कट्टर विरोधियोंके एक नेता हैं। पार्लमेण्टसे आयर्लैण्डके स्वराज्यका बिल पास हो जानेके कारण समरारम्भमें आयरिश स्वराज्यवादियोंके नेता मि० रेडमण्ड जब सब प्रकारसे सरकारको सहायता दे रहे थे उस समय मि० बानर ला स्वराज्यविरोधी सर एडवर्ड कार्सनके साथ अलस्टरवालोंको इङ्गलेण्डके विरुद्ध बलवा करनेको उत्तेजित कर रहे थे। जैसा आयर्लैण्ड सम्बन्धी नीतिपर वादविवादके समय उस दिन नेशनलिस्टोंके नेता मि० डिलनने कामन सभामें कहा था, १९१४ को २८ वीं सितम्बरको बेलफास्ट नगरकी बड़ी भारी सभामें मि० बानर लाने अपने भाषणमें अलस्टरके बागियोंसे प्रतिज्ञा की थी कि, "यदि बलवा करनेका निश्चय करोगे तो मैं टोरीदल सहित तुम्हारा साथ दूंगा।" मन्त्रिमण्डलके दूसरे प्रमुख सदस्य लार्ड कर्जन हैं जो लार्ड सभाके लीडर हैं। सभी भारतीय इनके सुधारविरोधी स्वभावसे भलीभांति परिचित हैं; इसलिये इनके सम्बन्धमें

यहां विशेष कुछ कहनेकी आवश्यकता ही नहीं जान पड़ती। तीसरे प्रभावशाली मेम्बर मि० चेम्बरलेन हैं जो भारत सचिव पदपर रहकर अपने सुधारविरोधी स्वभावका भलीभांति परिचय हालमें ही दे चुके हैं। एक मजूरदली मेम्बर हैं और वे अपने दलके सिद्धान्तोंके अनुसार सुधारके विरोधी नहीं हैं।

पाठक ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलकी वर्तमान रचनासे समझ सकते हैं कि, उदारदली सरकार होनेपर भी किस प्रकार मन्त्रिमण्डलमें सुधारविरोधियोंका ही मताधिक्य है। यही कारण है कि वर्तमान मन्त्रिमण्डलके प्रायः सारे कामोंपर सुधारविरोधियोंके मतोंकी ही मुहर लगी दिखाई देती है। मन्त्रिमण्डलकी इस प्रकारकी रचनासे ही भारतका बहुत कुछ अहित हो सकता है, पर यदि उसका प्रभाव भारतके उच्च पदोंकी नियुक्तिपर न पड़े तो भी बहुत बुरी बात न हो। किन्तु जब हम देखते हैं कि मि० लायड जार्जकी सरकार भारतके प्रादेशिक शासक पदपर भी कंजर्वेटिवोंहीको नियुक्त करती जा रही है तब विशेष चिन्ता होती है। इतने सुधारविरोधियोंके बीच रहकर यदि उदारदली प्रधानमंत्री मि० लायडजार्जके स्वभावमें अन्तर दिखने लगे तो आश्चर्य ही क्या है?

लड़ाईका खर्च।

इस महासमरके आरम्भसे गत चौथी अगस्ततक अर्थात् ४ वर्षमें कुल लड़नेवाले राज्योंका ३२ अरब पौण्ड या ४ खरब ८० अरब रुपया खर्च हुआ है! एक अमेरिकन गृहयुद्धमें जितना खर्च हुआ था इस महासमरके प्रति १२ हफ्तेमें उसका दूना खर्च हुआ है। जितना खर्च फ्रांस और प्रशियाकी लड़ाईमें हुआ था उतना तो इस महासमरके प्रति हफ्तेमें हुआ है। जितना खर्च इस महासमरके चार वर्षोंमें हुआ है उससे पनामा नहरकी तरह ४०० नहरें तैयार करायी जा सकती हैं! उतनेसे कुल संसारकीचारों ओर ६२ रेल लाइनें बनवायी जा सकती हैं। यदि इन ४ खरब ८० अरब रुपयोंके एक एक डालरके (१ डालर मूल्यमें कोई ३॥)के बराबर होता है।) नोट भुना लिये जायं और उनके सिरे एक दूसरेसे मिलाकर संसारकी चारों ओर फैलाये जायं तो वे कुल संसारकी चारों ओर ७५ बार बिछाये जा सकते हैं।

विविध विचार।

अनुचित हुआ—

हमें यह जान बड़ा दुःख हुआ है कि, मि० लायड जार्जका मन्त्रिमण्डल बम्बईके स्वेच्छाचारी गवर्नर लार्ड विलिंगडनको अब भी भारतसे नहीं बुलाना चाहता है। लार्ड विलिङ्गडन १९१३की १४वीं अप्रेलको बम्बईके गवर्नर नियुक्त हुए थे। पीछे उनका कार्यकाल समाप्त हो चुकनेपर वह ६ महीनेके लिये और बढ़ा दिया गया था। अब सूचना निकली है कि, अगली वसन्त ऋतुमें वे बम्बईकी गवर्नरीका चार्ज कप्तान ऐम्ब्रोस लायडको दे कुछ महीनोंके लिये इङ्गलैण्ड चले जायंगे और वहांसे लौट मद्रासके गवर्नर लार्ड पेण्टलैण्डसे वहांकी गवर्नरीका

चार्ज लेंगे। इस नियुक्तिके सम्बन्धकी सरकारी सूचनामें कहा गया है कि, बढ़ाये हुए कार्यकालके बाद उन्हें मद्रासका गवर्नर बनाना एक असाधारण कार्य है, पर ब्रिटिश सरकारको इस बातसे सन्तोष है कि उनके परिपक्व अनुभव तथा देशके ज्ञानसे उनकी वर्त्तमान नियुक्तिका समय समाप्त होनेपर भी भारत वञ्चित न होगा। खूब कही! लार्ड विलिङ्गडनकी सरकारने जिस प्रकार दमन नीतिसे काम लेनेके विचारसे कुछ दिन पहले श्रीमती बेसेण्टको बम्बईमें प्रवेश-निषेधकी आज्ञा दी थी, लो० तिलकपर उनके तीन व्याख्यानोंके कारण जमानतका मामला चलाया था, देशभक्त परांजपेका भाषणस्वातन्त्रय छीना था, उस दिन बम्बईकी भरी परिषद्में स्वराज्यवादियोंको बुला भारतीयोंके हृदयसम्राट् लो० तिलककी उपस्थितिमें उनका घोर अपमान किया था और हालमें हीभर्त्तीमें वाधा पहुंचानेके बहाने लो० तिलकका भाषणस्वातन्त्र्य छीना है, उससे स्पष्ट है कि, इंगलैण्डके उदारदलसे सम्बन्ध रखते हुए भी वे भारतमें किसी यूनियनिस्ट अथवा टोरी दलवालेसे काम स्वेच्छाचारी नहीं हैं। ऐसी अवस्थामें उन्हें और अधिक समयके लिये भारतमें रखना अत्यन्त अनुचित हुआ है।

बंबईके नये गवर्नर—

अगली वसन्त ऋतुमें लार्ड विलिङ्गडन बम्बईकी गवर्नरीका कार्यभार कप्तान ऐम्ब्रोज लायडको सौंपेंगे। कप्तान लायड १६०१ ई० से स्टैफर्ड शायरकी ओरसे पार्लमेण्टके युनियनिस्ट मेम्बर हैं। इन्होंने ईटन और कैम्ब्रिज युनिवर्सिटियोंमें शिक्षा पायी है और कहा जाता है कि, पूर्वी राजनीतिके ये अच्छे जानकार हैं। ये कुछ दिनोंतक कुस्तुन्तुनियाके राजदूतके साथ काम कर चुके हैं और रूम, मेसोपोटामिया और फारसकी खाड़ीके भावी बृटिश व्यापारके सम्बन्धमें जो कमीशन बैठा था उसके एक कमिश्नर ये भी थे। इस महासमरमें ये मिश्र, गेलीपोली, मेसोपोटामिया और हजाजमें लड़ चुके हैं तथा युद्धक्षेत्रमें वीरता दिखानेके कारण गत वर्ष ये डी० एस० ओ० की उपाधि पा चुके हैं। हालमें पार्लमेण्टमें मांटेगू स्कीमपर जो बहस हुई थी उस समय विचार प्रकट करते हुए इन्होंने कहा था कि भारतको स्वराज्यके अधिक अधिकार मिलने चाहिये, पर सावधानतापूर्वक और बिवेकसे पग बढ़ाना चाहिये। कप्तान लायड चाहते तो हैं कि भारतीय शासनमें सुधार हों, पर अबतकके भारतके बृटिश शासनके लिये उन्हें भी गर्व है। हमको कप्तान लायडके विचारोंके विषयमें कुछ आश्चर्य नहीं है, क्योंकि जब बड़े बड़े उदारदली लोग भारतकी गवर्नरीपर आते ही अनुदारताके चश्मे लगा लेते हैं तो कप्तान लायड बेचारे तो युनियनिस्ट दलके ही ठहरे जिसका काम ही सब प्रकारके सुधारोंका विरोध करना है। कहनेको तो इस समय ब्रिटिश शासनकी बागडोर उदारदली लायड जार्जके हाथ हैं, और सभी दलवालोंका मन्त्रिमण्डल है, पर उसमें जिस प्रकार टोरी और युनियनिस्ट भरे हुए हैं उससे वर्तमान मन्त्रिमण्डल एक प्रकारसे टोरियों और युनियनिस्टोंका ही हो रहा है। फलस्वरूप इन्हीं दलोंके लार्ड चेम्सफोर्ड और लार्ड रोनाल्डशे मि० लायड जार्जके कार्यकाल समय आचुके हैं और कप्तान लायड आरहे हैं। उदारदली लार्ड बिलिंगडनने जो किया वह सबकी नजरोंके सामने है। अब देखना है कि अनुदारदली कप्तान लायड कैसी करतूत दिखाते हैं।

देशकी दशा—

(राय कृष्णजीका भाषण)

एक जमाना वह था कि हिन्दुस्तानका एक एक गांव उद्योगमें स्वतन्त्र था। लोगोंकी जरूरतें बहुत कम थीं और उन्हें पूरा करनेका सब सामान उनके पास था। किसान खेती करके अन्न, ईख, रुई, सन और तिलहन इत्यादि पैदा करते थे। गांवके जुलाहे वहांकी जरूरतसे कुछ ज्यादा ही कपड़ा बुनते थे। बढ़ई और लोहार अपने अपने कामोंमें होशयार थे। कुम्हार मिट्टीके बर्तनों का काम पूरा करते थे। गाय भैंससे दूध दही और घीका काम बखूबी चलता था। जो चीजें वहां वालोंकी जरूरतसे ज्यादा होती थीं उन्हें दूसरोंके हाथ बेंचकर धन कमाते थे। जहां जहांके कारीगर अपने काममें अधिक निपुण थे वहां वहांकी चीजें विदेशोंमें भी जाया करती थी, इसलिये विदेशों से भी बहुत धन देशमें आया करता था। कौन ऐसा मुल्क था जिसमें काश्मीरके दुशाले और ढाकेकी मलमल मशहूर न्ही थी? कौन ऐसा बहादुर था जो हिन्दुस्तानके लोहेकी तलवार के लिये उसका दूना चौगुना सोना देनेमें जरा भी हिचकता था?

अब यहांकी हालत बिलकुल बदल गयी है। अब यहांसे प्रायः कच्चा माल ही विदेशोंको जाता है और विदेशोंसे तैयार माल यहां आता है। सन् १९०६—७ से १९१३—१४ तक अर्थात लड़ाइसे पहले—का औसत निकाला जाय तो २१०६८८-१०००) का माल हरसाल हिन्दुस्तानसे विदेशोंको जाता है उसमें से तैयार माल ६७७३८४०००) का कच्चा माल १३५८६२००००) का और सोना—चांदी ७३८७७०-००) का और १८५८३६२०००) का माल विदेशोंसे हरसाल यहां आता है जिसमें तैयार माल १३६२१०८०००) का कच्चा माल ६४२४२०००) का और ४३२०१२-०००) का सोना—चांदी। इसमें २५१५१६०००) का माल हिन्दुस्तानसे हरसाल जो आमदनी से ज्यादा जाता है वह कर्जके सूदमें अङ्गरेज अफसरोंकी तनखाह और पेन्शनमें स्टेट सेक्रेटरी की तनखाह और उनके आफिस खर्चमें देना पड़ता है। उसके बदलेमें कुछ नहीं मिलता जितना माल विदेशोंसे हिन्दुस्तानमें आता है उसमें से रुईके सूत और कपड़ों की कीमत का सालाना औसत ४६३६४७·०० यानी एक चौथाई से कुछ ज्यादा है। इस लिये इसपर ध्यान देना जरूरी है। यहांसे हर साल ४११००० टन रुई जाती है और २४२०००टन कपड़ा और सूत आता है। यद्यपि तौलमें सिर्फ आधेसे कुछ ज्यादा माल तैयार होकर आता है लेकिन उसका दाम ड्योढ़ेसे ज्यादा होता हैं यानी २६२३११०००) रुई का दाम पाकर कपड़े और सूत के लिये ४६३६४७०००)देना होता हैं।

पंजाब और माडरेट—

शिमलेमें कौंसिलकी बैठकें समाप्त हो चुकनेपर मि० श्रीनिवास शास्त्रीने पञ्जाबके नगरोंमें दौराकर पञ्जाबको सुरेन्द्रनाथ वाचा एण्ड कम्पनीकी ओर मिलानेकी इच्छा थी। शायद आरम्भमें उन्होंने सोचा होगा कि, वीरभूमि पञ्जाब सर ओडायर जैसे निरंकुश शासकके कारण आत्मविस्मृत होगया है, क्योंकि उसके पञ्जाबके नेता लाला लाज

भाग्यके पहिये पर ।

व्यापारियोंने इस महासमरमें काफी आमदनी की है बेचारे किसा
ही सब तरहसे मुसीबतका सामना कर रहे हैं ।

पतरायने भारतसे प्रस्थान किया। तबसे पञ्जाब एक प्रकारसे सार्वजनिक जीवनशून्य हो रहा है। यही मि० शास्त्रीकी भारी भूल थी। उन्हें पहलेसे ही समझ लेना चाहिये था कि, सिंह भूखों भले ही मर जाय, पर वह तृण खाकर पेट नहीं भर सकता। पञ्जाब सर ओडायरकी नादिरशाहीके कारण नेता विहीन होनेसे कुछ समयके लिये भले ही सुप्तावस्थामें पड़ा रहे, पर जिस समय पञ्जाबी वीर राजनीतिक क्षेत्रमें पधारेंगे वे किसीसे पीछे न रहेंगे। आज जब सारा देश ही राष्ट्रीय दलके सिद्धान्तोंको अपना रहा है तब वीरभूमि पंजाबसे सुरेबाबू जैसे दब्बू माडरेटके पक्षमें होनेकी आशा दुराशामात्र है।

नेक सलाह—

उस दिन अमृतसरके बन्देमातरम् हालमें डा० किचलूकी अध्यक्षतामें मि० शास्त्रीने भाषण किया। लोगोंने बड़ी शान्तिसे उनकी बातें सुनी। उनके भाषण उपरान्त डा० किचलूने कहा कि, पञ्जाब कान्फरेंस इसी हालमें पञ्जाबवासियोंके विचार स्पष्ट शब्दोंमें प्रकट कर चुकी है। यद्यपि वे विचार मि० शास्त्री और उनके दलवालोंके विचारोंसे भिन्न हैं, पर मैं समझता हूं कि, यदि मि० शास्त्री तथा उनके साथी अन्य माडरेट बम्बईकी स्पेशल कांग्रेसमें गये होते, तो वहां उनकी बातें इसी तरह सुनी जातीं जिस तरह आज यहां सुनी गयी है। अन्तमें डा० किचलूने मि० शास्त्रीसे कहा कि, आप अमृतसरकी जनताकी ओरसे माडरेट कान्फरेंसको यह संदेशा सुनाइयेगा कि, यद्यपि कुल अमृतसर कांग्रेसके मतभेदपर घोर खेद प्रकट करता है तो भी वह चाहता है कि दिल्लीकी कांग्रेस सब दलवालोंकी काँग्रेस हो और उसके प्रकट किये विचार संयुक्त भारतके हों! अवश्य ही लाहोर और अमृतसरमें जिस प्रकार मि० शास्त्रीकी बातोंका जवाब दिया गया है उससे शायद वे अब पंजाब की ओर से बिल्कुल ही निराश हो गये होंगे। पर क्या हम आशा कर सकते है कि मि० शास्त्री अमृतसरकी उपर्युक्त शुभ सम्मति स्वयं स्वीकार कर अपने अन्य मतिमंद नेताओंको ठीक राहपर ला आगामी कांग्रेसमें उपस्थित होनेकी बुद्धि[illegible]नी दिखावेंगे, हम हृदयसे चाहते हैं कि, भगवान कांग्रेससे फूटे हुए नेताओंको भविष्यके लिये सुमति देगा।

अन्नका कंट्रोल

वैसे तो महासमर छिड़नेकी बादसे ही दिनपर दिन जीवनकी आवश्यक वस्तुओंकी दर चढ़ती जा रही है, पर इधर अन्न जिस प्रकार एकाएक महंगा हो गया है उससे तो सर्वसाधारण और निम्न श्रेणीके मनुष्योंको जीवन निर्वाह करना भी असम्भव सा हो गया है। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि, अन्नकी ऐसी महंगी कृषिप्रधान भारतमें कभी नहीं हुई और यदि सरकार बुद्धिमानीसे काम ले तो कभी हो भी नहीं सकती। एक महीने पहले कलकत्तेमें आटेका भाव ६ सेर था। पर आज रुपयेमें चार पौने चारही सेर आटा आता है। इसी तरह दाल आदिकी भी अवस्था है। सोचिये तो सही कि जो गरीब आठ या दस रुपये महीनेकी नौकरी कर रहा है वह इस भावका आटा खरीदकर कैसे अपना पेट भर सकता है? अब

निर्धन मनुष्यपर बोझा ।

निर्धन मनुस्यपर ही सब तरहका भार है। गोरे हिन्दुस्तानी सभी व्यापारी किसानोंकी बदौलत मौज करते हैं रेलवे कम्पनियाँ भी उन्हींसे लाभ उठाती और जमींदार महाजन उन्हींकी कमाईसे मोटे होते हैं।

यह हो इधर कई सालोंसे अतिवृष्टि या अनावृष्टिके कारण फसल अच्छी नहीं होती हैं पर एक इसीसे इतनी महंगी नहीं होनी चाहिये। कारण यह कि जहां एक दो प्रदेशमें उक्त कारणोंसे फसल मारी जाती है वहां साथ ही भारतके अन्य प्रदेशोंमें इतना अधिक नाज पैदा होता है कि यदि विदेशी व्यापारी भारतीयोंके मुंहको रोटी न छीनने पावें तो सारा देश पेट भर भोजन कर सकता और पीछे देशकी पैदावारका बहुत कुछ भाग बच भी सकता है। पर भारत तो 'बौरहैकी गाय'की तरह समझा जाता है जिसके दुहनेमें विदेशी व्यापारियोंको किसी प्रकारकी रुकावट ही नहीं होती है। भारतके नाजसे विदेशियोंका तो पेट भरे, पर उसे पैदा करनेवाले भारतीय दिनभर तारे गिन गिनकर सड़कोंपर पड़े कुत्तेकी मौत मरें। क्या ऐसी अवस्था किसी अन्य देशवालोंकी भी सुनी गयी है?

'मरता क्या न करता' की कहावतके अनुसार मद्रासके कितने ही स्थानोंमें अन्नकी लूट हो गयी हैं जिससे मद्रास सरकारको सुलभ मूल्यमें वहांवालोंके पेट भरनेकी व्यवस्था करनी पड़ी है। बम्बई सरकारने दूरदर्शितासे काम ले समय रहते सस्ते नाजकी दुकानें खोलने आदिका प्रबन्ध कर लिया है। युक्तप्रदेशकी सरकारने भी ५० मन या अधिक नाज रखनेवालोंको अपने यहांके नाजका ब्योरा जिला मजिस्ट्रेटके सामने पेश करनेकी आज्ञा दी है और खरीदे हुए भावसे नाजकी दूकानें खुलवानेकी चिन्तामें है। पर प्रादेशिक सरकारकी व्यवस्था तो प्रदेशभरके लिये ही हो सकती है और अन्नकी महंगी कुल भारतको सता रही है। हर्षकी बात है कि भारत सरकारको अवस्थाकी गंभीरताका पता चल गया है और अब उसने विदेशोंको भेजनेके लिये अन्नकी खरीद बन्द करने तथा अन्नका कंट्रोल या नियंत्रण कर आवश्यकतानुसार उसके एक प्रदेशसे दूसरे प्रदेशको भेजनेका प्रबन्ध करनेका दृढ़ निश्चय किया है। उपर्युक्त बातोंके प्रबन्धके लिये भारत सरकारने एक फुड स्टफ्स या खाद्य पदार्थोंका कमिश्नर नियुक्त करनेकी घोषणा की है और यह कार्य मि० गुब्बे जैसे अनुभवी व्यक्तिको सौंपा गया है। सरकार किस ढंगसे काम करेगी, इस सम्बन्धकी सरकारी सूचना अन्यत्र प्रकाशित है।

सरकारी सूचनासे स्पष्ट है कि विदेशोंको भारतसे नाज भेजना बन्द किया जायगा। परन्तु जैसा पहले सुना गया था कि मेसोपोटामियाके सिवा और कहीं नाज न भेजा जायगा। वैसा नहीं किया गया है। मेसोपोटामियाकी युद्धक्षेत्रके प्रबन्धमें तो और भी ही भारतका बहुत अधिक हाथ था। एक प्रकारसे उसका सारा प्रबन्ध भारतकी ओरसे ही होता है। इसलिये वहांकी सैनिक आवश्यकता पूरी करनेके लिये भारतसे खाद्य पदार्थोंके भेजनेके औचित्यपर हमें विशेष कुछ कहना नहीं है। पर उसके सिवा सेना और गवर्नमेण्टकी वह कौन सी अत्यन्त आवश्यकता है जिसकी पूर्तिके लिये गेहूंका बाहर भेजना सरकारने बन्द नहीं किया है, यह हमारी समझमें कुछ नहीं आया है। यदि सेनाकी आवश्यकतासे उसका अभिप्राय यूरोपीय युद्धक्षेत्रोंकी सैनिक आवश्यकतासे है तो हम सरकारके उक्त प्रस्तावका तीव्र

बूढ़े बाबा करें व्याह ।

बूढ़ेको अपनी प्यारी लड़की देकर लालची माता पिता रुपयेकी थैली संभाल नर्कका द्वार अपने लिये खोल रहे हैं । धिक्कार है इस धनतृष्णाको।

कान उमेठ दिया ।

व्यापारी कपड़ेका दाम बराबर बढ़ा रहे थे । परन्तु भारत सरकारने कड़ेपका भाव निश्चित कर रंगमें भंग कर दिया ।

प्रतिवाद करते हैं। भारतने कुल संसारको रोटी खिलानेका ठेका नहीं ले रखा है। मित्रराष्ट्रोंके लिये यदि भारतसे सरकार भेजना चाहती है तो उसमें भी हमें तब कोई आपत्ति नहीं, हो। जब हमारे मुंहकी रोटी छीनकर विदेशियोंके मुंहमें डाली जाय। भारतीयोंके पेट भरनेका समुचित प्रबन्ध करनेके बाद भी यदि कुछ नाज बच रहे तो सरकार उसे खुशीसे वहाँकी सैनिक आवश्यकता पूरी करनेको भेज सकती है। लेकिन भारतीयोंकी आवश्यकताकी पूर्तिका प्रबन्ध किये बिना स्वयं ब्रिटेनवालोंके पेट भरनेके लिये भी भारतसे नाज भेजना अन्याय है, फिर अन्य मित्रराष्ट्रोंकी तो बात ही क्या।

जो हो, सरकारको शीघ्र यह स्पष्ट कर देना चाहिये कि, वह सैनिक और सरकारी आवश्यकता कौनसी है जिसकी पूर्त्तिके लिये वह गेहूं भेजना बन्द नहीं करना चाहती। जिस प्रदेशमें वहांकी आवश्यकतासे अधिक खाद्य पदार्थ है उससे उन प्रदेशोंको अन्न मिलनेकी व्यवस्था स्तुत्य है जिनमें आवश्यकतासे कम अन्न है। एक प्रदेशसे दूसरे प्रदेशको अन्न भेजने और प्रत्येक प्रदेशमें अन्नका भाव निश्चित कर देनेसे अन्नकी चढ़ी हुई दर बहुत कुछ गिर जायगी। पर साथ ही सरकारको सभी प्रदेशोंके लिये युक्तप्रदेशकी सरकारकी तरह ऐसी व्यवस्था करनी होगी जिससे अनुचित रूपसे लाभ उठानेके उद्देश्यसे कोई नाजका अधिक स्टाक अपने पास न जमा कर सके। निश्चित दरपर अन्न बेचनेके लिये नगर नगरमें सरकारकी ओरसे दूकानें खोलने या दूकानदारोंको लैसन्स देनेसे मंहगीकी प्रायः सभी शिकायतें दूर हो जायंगी। हम समझते हैं कि सरकारको अपनी स्कीमके अनुसार तुरंत काम शुरू कर देना चाहिये। नवम्बरके आरम्भमें तो मि० गुब्बे नियमानुसार कार्य शुरू ही करेंगे पर अन्नकी महंगी जैसी असह्य हो रही है उसे देखते हमारा सरकारसे अनुरोध है कि तबतक स्कीमके अनुसार कुछ न कुछ काम शुरू हो जाना चाहिये जिससे लोगोंकी रक्षा हो।

नया सुभीता ।

जो हमारे दैनिक विश्वमित्रको असमर्थताके कारण नहीं पढ़ सकते वे एकबार कड़ा दिलकर दो रुपया भेज दें । एक साल तक बराबर पत्र पायेंगे । यदि वे चाहें तो १) ही भेजकर ६ महीने तक पत्रका आनन्द लूटें । साप्ताहिकमें दैनिककी सभी विशेषतायें रखनेका खास ध्यान रखा जाता है ।

सेवा और मेवा ।

हिन्दी साहित्यके सेवी पत्रकी एजेन्सी लेकर २५) सैकड़ा घर बैठ कमा सकते हैं उन्हें डाक व्यय भी न देना होगा पहले ५) जमा करा ने होंगे । एजेण्टोंको यह बड़ा सुभीता है, कि उन्हें एक पैसे हीमें पत्र बेचनेको मिलता है । एक पैसा देकर भला कौन इस जमानेमें हर रोज पत्र न पढेगा एक शहर या कस्बेमें कमसे कम पचास प्रतियां आसानीसे बिक सकती हैं ।

पुस्तक विभाग ।

हम दूसरेकी पुस्तकें विज्ञापन देकर बेचते हैं जिन्हें पुस्तकें बिकवानी हों हमसे लिखा पढ़ीकर सब बातें तय करलें हम उचित पारितोषिक देकर पुस्तकें प्रकाशित करते हैं ।

आफिसका पता—मेनेजर विश्वमित्र कार्यालय,

बडा बाजार कलकत्ता ।

तारका पता—'VISHWAMITR'

पंच रत्न देखिये

भारत शासन सुधार—यह भारतसम्बन्धी शासन और वर्तमान सुधार स्कीम जाननेके अद्वितीय पुस्तक है। मूल्य ॥)

स्वराज्यकी धूम—देशके नेता स्वराज्यके सम्बन्धमें क्या कहते हैं यदि यह जानना हो तो मनोहर पुस्तकका एक बार अवलोकन कीजिये। मूल्य ॥)

जर्मनीकी राज्य व्यवस्था—जर्मनीका शासन किस प्रकारका होता है यह इस महासमरके कारण जानना बहुत जरूरी हो गया है। हिन्दी संसारमें यह सर्वथा नयी पुस्तक है। मूल्य ॥)

तिलककी जीवनी—भारतके हृदयसम्राट् देशके परमपूज्य नेताका जीवनचरित्र पढ़नेसे मन प्रसन्न और आत्मा बलवान् होती है। ऐसा जीवन चरित्र अभीतक हिन्दी संसारने शायद न पाया होगा। मूल्य ॥)

ऐयर चरित्र—देशभक्त डा० ऐयरने वर्तमानकालमें जो निर्भीकता दिखायी वह इतिहासमें स्मरणीय रहेगी। आपका जीवन आदर्श है। यह पुस्तक बड़ी खोजके साथ लिखी गयी है। मूल्य ॥)

चार आनेमें उत्तम पुस्तिकायें—तिलकका भाषण ≠) सत्याग्रहकी धूम -) ऐयर पत्र -)

अभागिनी—उपन्यासोंमें सर्वोत्तम। मूल्य १)

मेनेजर—'विश्वमित्र कार्यालय।'

बड़ाबाजार कलकत्ता।

'बनर्जी प्रेस' १३ नारायण प्रसाद बाबू लेन कलकत्तामें श्री आशुतोषबनर्जी द्वारा मुद्रित।

Registered No. C.877

कामये दुःख तप्तानाम् प्राणिनामार्त्ति नाशनम् ॥

वर्ष १ संख्या २

विश्व मित्र

प्रकाशक—

विश्वमित्र कार्यालय

कलकत्ता।

एक वर्षका मूल्य १)

एक प्रतिका मूल्य =)

देश सेवा ही प्रधान उद्देश्य　　　　निर्भीकता ही विशेषता

रखता हुआ

दैनिक विश्वामित्र

सरकारको जमानत देकर निकाला गया है। इस पत्रने जन्मकालसे हीं अपने प्रेमी पाठकोंको सहानुभूति प्राप्त की है। इसकी विशेषताएं सर्वथा आपको पसन्द आयेंगी। विशेषताएं एकबार सुन लीजिये।

प्रजा सेवा।

प्रजाके हितके लिये दृढ़ आन्दोलन करना इसका पहला काम है आप एक प्रति कोई भी मंगा देखिये। आपको पता लग जायगा कि किस प्रकारके निर्भीक विचार प्रकट किये जाते है। किसीका अनुचित पक्ष ग्रहण नहीं किया जाता। झूठी हिमायत भी नहीं की जाती।

ताजे समाचार।

आप हिन्दीका एक दैनिक पत्र उठाकर मिलान कर लीजिये। सच झूठका पता लग जायगा। हिन्दी दैनिकोंमें इससे जल्दी ताजे समाचार मुफस्सिलवालोंको और कोई नहीं दे सकता। यह हर रोज शामको निकलकर कलकत्तेमें बेढब घूम मचाये रहता है।

भावपूर्ण चित्र।

सप्ताहमें एक दो बार इसमें भावपूर्ण चित्र भी निकला करते हैं जो बड़े सामयिक होते हैं और पाठकोंपर बिजलीके समान असर डालते हैं।

सबसे सस्ता।

इस दैनिकसे सस्ता और कोई भी दूसरा दैनिक पत्र नहीं है। वार्षिक मूल्य सबसे कम रखा गया है।

अल्प कालके लिये।

एक महीने तकका ग्राहक बड़ी खुशीसे बना लिया जाता है, क्योंकि यह निश्चित हैं कि एक बार जिसने पत्र पढ़ा वह उसका दिल ग्राहक न रहनेको कभी न चाहेगा।

आपकी इच्छा हो तो इस नवीन उद्योगको अपनानेमें विलम्ब न कीजिये।

व्यापारियोंको सूचना।

दैनिक विश्वमित्रमें व्यापारियोंके लाभ की सभी बातें रहेगी। यदि वे सालमें १० खर्च भी) कर देंगे, तो किसी समय हजारों पा जायेंगे। वार्षिक १०) छ मासका ५) तीन मासका ३)

॥ श्रीहरिः ॥

विश्वमित्र

॥ कामये दुःख तप्तानां प्राणिनामार्त्तिनाशनम् ॥

वर्ष १ | मार्गशीर्ष सं० १९७५ वि० । नवम्बर सन् १९१८ । | संख्या २

सहाय—याचना ।

दयानिधि बेगिहिं सब दुख टारो ।
इस आरत गारत भारतको फिरसे आप उबारो ॥
जो कछु भूल भयी हो यहिसों ताकहं नाथ बिसारो ।
करुणा करि अब बन्धन यहिके काटि सकल तुम डारो ॥
देहु सुमति भारतवासिन कहं कुमतिहिंनाथ पछारो ।
जेहितें शक्ति ऐक्यकी मिलि हो भारतको निस्तारो ॥
पराधीन भारतको दुख लखि करुणाहस्त पसारो ।
शक्तिमान् यहि शक्ति दान करि शक्तिवान करि डारो ॥
ऐसी कृपा होय जेहितें यह भारत दीन बेचारो ।
रहे न किसी देशसे पीछे लहि तब नाथ सहारो ॥
दया निधि बेगहिं सब दुख टारो ॥

युद्धका अन्त ।

सारा संसार आज इस चिन्तामें है कि कौनसे उपाय किये जायं जिसमें भविष्यमें फिर किसी प्रकारका युद्ध न छिड़ सके । अमेरिका तो इसी उद्देश्यको लेकर लड़ाईमें हो पड़ा था, पर साथ ही मित्रराष्ट्रोंके राजनीतिज्ञ भी समय समयपर अपना यही उद्देश्य प्रकट करते रहे हैं । इस नरसंहारी संग्रामके कारण प्रायः चार वर्षतक संसारके प्रत्येक देशके लोगोंको जो असंख्य कष्ट झेलने पड़े हैं उनके कारण ही यह चर्चा जोरोंपर है । रा० विलसन तथा मि० लायडजार्ज आदि

रात दिन सन्धिकी ऐसी शर्तें बनानेकी चिन्तामें निमग्न हैं कि जिनके कारण संसारमें स्थायी शान्ति स्थापित हो और भविष्यमें युद्धोंका कोई कारण हो न उप-स्थित हो सके। मि० लायड-जार्ज और इनके साथी मि० बा-नरलाने तो पार्लमेण्टके नये चु-नावके अवसरपर निर्वाचकोंसे इसी सिद्धान्तको महत्ता बताते हुए अपील भी की है। पर दे-खना तो यह है कि अपने इस सदुद्देश्यमें मित्रराष्ट्रोंके इन राज-नीतिज्ञोंको कहांतक सफलता प्राप्त होती है।

इस समय किसी विषयमें भी वस्तुस्थितिका ठीक पता नहीं चल सकता। कारण यह कि चार वर्षसे अधिक समयतक समरके भीषण सङ्कट सहनेके बाद जिन पश्चिमी देशोंको अब दम लेनेकी फुर्सत मिली है वे भीतर ही भी-तर धन और जनसे एक दम पोले पड़ गये हैं। अपने किसी एक सम्बन्धीकी मृत्युके पश्चात् मूर्खसे मूर्ख पुरुषको भी वैराग्य सूझने लगता है। फिर जिस महास-मरमें लड़ाके राष्ट्रोंको प्रायः १००। लाख चुने हुए जवानोंकी बलि देनी पड़ी है उनके राजनीतिज्ञों-के हृदयमें लोकैषणाओंके प्रति वैराग्य पैदा हो तो आश्चर्य ही क्या है। पर वैराग्य तो वही स्थायी होता है जो सुखसम्पत्तिके दिनोंमें किसीके हृदयमें पैदा होता है। धनजनके नाशके का-रण पैदा हुआ वैराग्य उसी समय समाप्त हो जाता है जिस समय नाशका दुःख भूल जाती है। इसी लिये अभी यह नहीं कहा जा सकता कि आज जो राष्ट्र 'वसुधैव कुटुम्बकम्'का सिद्धान्त स्थापित करनेके उद्योगमें हैं उनके ऐसे विचार कबतक बने रहेंगे।

जितने राज्य संसारसे युद्धका नाम निशान ही मिटा देनेकी चिन्तामें हैं वे सबके सब पश्चिमी सभ्यताके शिष्य और ईसाई राष्ट्र हैं। पश्चिमी सभ्यता जिस प्रकार भौतिक पदार्थोंकी उपासक है वह संसार भली भांति जानता है। पिता, पुत्र और पवित्रा-त्माका अस्तित्व माननेपर भी ईसाई राष्ट्र एकमात्र प्रकृतिके ही उपासक हो सांसारिक विषयवास-नाओंमें इस महासमरके पहले इतने लिप्त थे कि उन्हें अपने पि-ता पुत्र और पवित्रात्माकी सुध-तक न थी। पर महासमरने उ-नकी विषयलोलुपताकी बुराइयां उनकी नजरोंके सामने ला खड़ी कर दी हैं और अब वे ही जड़-वादी अध्यात्मिक बातें कह रहे हैं। जो राष्ट्र समरके पहले अपने पड़ोसी राज्योंकी भूमि ह-ड़पने और संसारमें सबसे अधिक शक्तिशाली होनेकी चिन्तामें नि-मग्न रहते थे वे ही आज उदार चरित पुरुषोंके समान बातें कह रहे हैं। इतना होनेपर भी हमें यह विश्वास नहीं होता कि संसा-रके सारे राष्ट्र मिलकर भी कोई ऐसा मार्ग निकाल सकते हैं जि-ससे जगत्से युद्धोंका अन्त हो हो जाय। हां, यदि सन्धिकी शर्तें न्यायपूर्ण और वास्तविक स्वभा-ग्य निर्णयके सिद्धान्तके अनुकूल हों तो यह सम्भव है कि बहुत दिनोंतक संसारमें युद्धके कारण न उपस्थित होनेसे शान्ति बनी रहे।

हम समझते हैं कि जबतक मनुष्य मनुष्य है तबतक सांसारिक विषयवासनाओंसे वह सर्वथा मुक्त नहीं हो सकता। यह सभी जा-नते हैं कि अन्यायसे दूसरेकी वस्तु हरण करना बुरा है, पर मौका मिलनेपर विरला ही दूसरेका स्वर्णका पदार्थ भी मिट्टीके ढेलेके समान समझता है। दूसरेकी

अधिकार अन्यायपूर्वक छीननेकी निन्दा सभी करते हैं, पर कभी कभी ऐसा देखनेमें आता है कि जो दूसरेके अधिकारकी रक्षाके महत्वके गीत गाते रहते हैं वे ही दूसरेके अधिकारोंको पैरों तले रौंदनेमें सङ्कोच नहीं करते। ऐसे मनुष्य या राज्य भी स्वतन्त्रताकी प्रशंसाके पुल बांधते प्रायः देखे जाते हैं जो दूसरे मनुष्य या देशका सर्वस्व हड़पकर उसे अपनी ही अधीनतामें रखना अपने कर्त्तव्यकी चरमसीमा समझते हैं। संसारमें नित्य प्रति यही लीलाएं देखनेमें आती हैं। फिर कोई कैसे विश्वास कर सकता है कि मनुष्यका स्वभाव ऐसा बदल जायगा कि किसीके हृदयमें किसीके प्रति ईर्ष्या और द्वेषका भाव रहेगा ही नहीं और इससे युद्धका कारण न उपस्थित होगा।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' सिद्धान्तका नाममात्रका ही महत्व घोर ईर्ष्या द्वेषके कुपरिणामसे पीड़ित पश्चिमी सभ्यताभिमानी राष्ट्रोंको अब हुआ है, क्योंकि पूर्ण आध्यात्मिकता आये बिना उसका पूरा महत्व ज्ञात ही नहीं हो सकता। पर उन्हें जो कुछ भी महत्व ज्ञात हुआ है उसीसे वे फूले नहीं समा रहे हैं और दावेके साथ कह रहे हैं कि अब संसारमें फिर कभी युद्ध न छिड़ सकेगा। लेकिन जो भारतवर्ष अनादि कालसे सांसारिक सुख भोगोंको क्षणभंगुर समझता आया है वह इन पश्चिमी राष्ट्रोंकी बातें लड़कपनकी बातें समझ रहा है, क्योंकि इसने उन्हें रात दिन सांसारिक सुख समृद्धिकी ही चिन्तामें फंसे देखा है। सारा संसार मानता है कि भारतवर्ष सदा आध्यात्मिक ज्ञानका भंडार है। वसुधाकी सम्पत्तिको लात मार परमार्थकी चिन्तामें लगनेवाले किसी समय यहां घर घर विद्यमान थे। जिस समय यहांकी अध्यात्म विद्या पराकाष्ठाको पहुंची हुई थी उस समय भी बड़े बड़े दार्शनिकों और नीतिज्ञोंके ध्यानमें यह कल्पना नहीं उठी थी कि ऐसे भी उपाय कार्यमें आ सकते हैं जिनसे कभी संसारमें युद्ध ही छिड़े नहीं पर जिसको प्राचीन कालके लङ्गोटबन्द त्यागी महात्मा असम्भव समझते थे वही कार्य आही महलोंमें रहनेवाले टकेके दास ईसाई राष्ट्रोंके राजनीतिज्ञ सम्भव बनानेकी चिन्तामें हैं। उनका यह प्रयत्न स्तुत्य है, इस लिये कि इतना ऊंचा लक्ष्य रखकर न्यायपूर्वक कार्य करनेसे वे बहुत दिनो तक संसारमें शान्ति रख सकते हैं। पर हम यह माननेको तैयार नहीं हैं कि, सदाके लिये वे संसारसे युद्धोंका नाम निशान ही मिटा सकेंगे। इसीसे हम हृदयसे चाहते हैं कि, भगवान इन सभ्यताभिमानी राष्ट्रोंको सुबुद्धि दें जिससे वे संसारके प्रत्येक भाग्यमें स्वभाग्यनिर्णयका सिद्धान्त स्थापित कर बहुत अधिक समयके लिये भिन्न भिन्न देशोंके पारस्परिक ईर्ष्याद्वेषके कारण दूर करनेमें समर्थ हों।

घोर निराशा।

महासमरमें भारतने ब्रिटिश साम्राज्यके लिये जो असंख्य स्वार्थत्याग किये हैं उनके फलस्वरूप यूरोपकी कितनी ही जातियों और देशोंको शीघ्र ही स्वतन्त्रता प्राप्त होती दिखाई देती है। पर भारतकी सारी आशाओंपर पानी फिरता दिखाई पड़ता है। इस समरकालमें ब्रिटिश और अमेरिकन राजनीतिज्ञोंके

मुखसे उठते बैठते स्वतन्त्रता और स्वभाग्यनिर्णयके सिद्धान्तकी प्रशंसामें बड़ी लम्बी चौड़ी बातें सुन भारतको भी आशा हो चली थी कि; यदि आस्ट्रियाकी छोटी-मोटी जातियोंको स्वतन्त्र करनेके लिये मित्रराष्ट्र इस प्रकार सचेष्ट हैं तो ३० करोड़ भारतवासियों-को स्वतन्त्रता प्रदान करनेमें शायद अब ब्रिटेनको विशेष आपत्ति न होगी। पर वह आशा दुराशामात्र सिद्ध होना चाहती है। लक्षणोंसे ऐसा ही जान पड़ता है कि, हमसे कम उन्नत और असभ्य जातियोंको यहाँतक कि जर्मनीके उपनिवेशों और राज्योंतकको स्वभाग्यनिर्णयके अधिकार दिलानेमें ब्रिटेन जी-जानसे प्रयत्न करेगा, पर भारतके लिये उसकी उदारता और न्याय-शीलताका खजाना खाली ही सिद्ध होगा। नहीं तो इसका क्या अर्थ होता है कि; संसारभर-के छोटे बड़े देशोंको तो स्वत-न्त्रता और स्वभाग्यनिर्णयके अधिकार देनेकी तैयारी की जा रही है, पर साम्राज्यके भीतर भा-रतवर्षको स्वराज्य देनेके लिये भी आनाकानी की जाती है?

भारतके सम्बन्धमें ब्रिटिश अधिकारी ठीक अपने समरो-द्देश्यके विरुद्ध कार्य करना चाह-ते हैं, यह बात मि० लायड जार्ज और मि०बानरलाके सूचनापत्रसे भी स्पष्ट है। उसमें कहा गया है कि "समरमें भारतीय राजाओं और जनताने जो सहायता दी है ब्रिटिश जनता उसे भूली नहीं है। भारतमें क्रम क्रमसे उत्तर-दायित्वपूर्ण शासन स्थापित करना है, यह घोषणा मन्त्रि-मण्डलकी ओरसे की जा चुकी है और हम उसके अनुसार कार्य करना चाहते हैं।" इससे स्पष्ट है कि, यदि पार्लमेण्टके नये चुनावके फलस्वरूप वर्त्तमान मन्त्रिमण्डल ही बना रहा तो इससे भारतीयोंको अधिकसे अधिक उन्हीं अधिकारोंकी आशा करनी चाहिये जिनके लिये मि० मांटेगू और लार्ड चेम्सफोर्डने अपनी रिपोर्टमें सिफारिश की है। पर प्रश्न यह है कि; यदि आस्ट्रियाकी जेंच और स्लेव जातियोंसे ब्रिटिश राजनीतिज्ञ यह नहीं कहते कि; क्रम क्रमसे तुम्हें स्वतन्त्रता दी जायगी, तो वेभारतको स्वराज्य देनेके लिये ऐसी अनुचित पख क्यों लगाते हैं? यदि जेंच और स्लेव जा-तियां तथा रूमके ईराक, फिल-स्तीन आदिके निवासी तुरन्त स्वभाग्यनिर्णयके अधिकार पाने योग्य हैं तो हम दावेसे कह सकते हैं कि, भारतवासी स्व-राज्य करनेके लिये उनसे अधिक योग्य हैं। ब्रिटिश राजनीतिज्ञ भले ही सोचते हों कि, भारत-वासियोंकी ओरसे तो कोई दबाव नहीं पड़ रहा है, इस लिये जो जीमें आयेगा वही अधि-कार उन्हें दे दिया जायगा, पर उन्हें समझ रखना चाहिये कि, वे दिन गये जब उनकी कृपासे प्राप्त छोटेसे टुकड़ेसे ही भार-तीय सन्तुष्ट हो जाते थे। संसार-भरके देशों और जातियोंको स्व-तन्त्रता प्राप्त होनेपर भी जो यह आशा करते हैं कि, भारतवासी छोटेमोटे शासनसुधारोंसे ही सन्तुष्ट हो पतितावस्थामें पड़े रहेंगे उन्हें मनुष्य स्वभावका कुछ भी ज्ञान नहीं है और वे असम्भवको सम्भव समझ बैठे हैं।

भारतवासियोंके विचार किस तेजीसे बदल रहे हैं, यह यहांके अधिकारिवर्गको भले ही न दिखाई पड़े और इसके मारे ब्रिटिश जनताको भी उसका पता

न चलने पावे, पर भारतीयोंके जो विचार १९०९में मार्ले-मिण्टो सुधारोंके समय थे वे आज न जाने किस लोकको चले गये हैं। अबसे १० वर्ष पहलेकी तो बात ही जाने दीजिये जो विचार तीन चार महीने पहले स्पेशल कांग्रेसके समय थे आज उनमें भी परिवर्त्तन हो गया है। स्पेशल काँग्रेसके समय भी यद्यपि राष्ट्रीय दलवाले बहुत शीघ्र ही साम्राज्यके भीतर भारतमें पूर्ण स्वराज्य चाहते थे, पर कुछ नरमदली नेताओंके आग्रहसे पारस्परिक मेल बनाये रखनेके विचारसे काँग्रेसमें अधिकसे अधिक १५ वर्षके भीतर पूर्ण स्वराज्यकी इच्छा प्रकट की गयी थी। आज भारतवासी स्वभाग्यनिर्णयका अधिकार मांग रहे हैं और उस दिन कलकत्तेमें कांग्रेसकी प्रेसिडेण्ट श्रीमती बेसेण्टने स्पष्ट ही ही कह दिया है कि, 'राष्ट्रके माने हुए प्रतिनिधियोंको यह निश्चय करनेका अधिकार होना ही स्वभाग्यगिर्णय कहाता है कि, राष्ट्रके लिये किस प्रकारकी सरकारकी व्यवस्था की जाय। कुल भारतवासी स्वभाग्यनिर्णयका यही अर्थ लगाते हैं और यही रा० विलसनके स्वभाग्यनिर्णयके सिद्धान्तका भी अर्थ है। आज चारों ओर भारतवासी इसी स्वभाग्यनिर्णय के अधिकारकी इच्छा प्रकट कर रहे हैं। पर ब्रिटिश अधिकारी आज भी १९१७ की २० वीं अगस्तवाली घोषणाको ही बज्ररेख मान रहे हैं तभी तो मि० लायड जार्ज और मि० बानरला भारतमें धीरे धीरे उत्तरदायित्व पूर्ण शासन स्थापन करनेकी बात कह रहे हैं। अधिकारियोंकी इस प्रकारकी बातोंसे ही भारतीयोंके हृदयमें घोर निराशा पैदा हो गयी हैओर वे अपने न्यायसिद्ध अधिकारके लिये आन्दोलन करनेकी आवश्यकता धीरे धीरे समझने लगे हैं।

भारतवासी २० वीं अगस्तवाली घोषणाके जिम्मेदार नहीं हैं। ब्रिटिश मंत्रिमण्डलने वह घोषणा भारतीयोंकी सम्मति लिये बिना की थी, इस लिये वही उसका जिम्मेदार है। भारतवासी तो उसे तभी स्वीकार कर सकते थे जब वह स्वभाग्य निर्णयके सिद्धान्तके अनुकूल ठहरती। पर उस घोषणामें ही कहा गया है कि "कितनी तेजी से भारतमें उत्तरदायित्वपूर्ण शासनकी स्थापनाकी ओर पग बढ़ाया जायगा, इसके निर्णयका एकमात्र अधिकार ब्रिटेन और भारतकी सरकारोंको होगा।" अब भारतवासी नहीं चाहते कि हमारे भाग्यका निर्णय ब्रिटेन और भारतकी सरकारें करें इसीसे वे २० वीं अगस्तवाली घोषणा स्वीकार करनेमें असमर्थ हैं। पर एकमात्र उक्त घोषणाके अस्वीकार कर देनेसे ही भारतीयोंको स्वराज्य न मिल जायगा। उसके लिये न्यायकी लड़ाई लड़ ब्रिटिश जनताको विश्वास करा देना होगा कि यदि इतना बड़ा देश भारत स्वतंत्रता और स्वभाग्यनिर्णयके अधिकारोंसे वंचित ही रह गया, तो ब्रिटेन संसारके सामने सिर ऊंचाकर दावेके साथ यह नहीं कह सकेगा कि जर्मनीपर विजय प्राप्त कर जगत्से स्वेच्छाचारिताका अन्त कर दिया है। जगत्की अवस्था इधर जिस प्रकार बदल गयी है उससे भारतीयोंका कर्त्तव्य हो गया है कि वे १५ वर्षकी राह न देख साम्राज्यकी पुनः रचनाके समय ही स्वराज्य माँगें और अपने अधिकार ब्रिटिश जनतापर प्रकट करने

के लिये यदि सम्भव हो तो लन्दन में सन्धिसभाके समयस्पेशल कांग्रेस करें। यदि वैसा न कर सकें तो दिल्ली कांग्रेसमें स्वभाग्यनिर्णयके अधिकारका प्रस्ताव पास कर कुछ नेता तो अवश्य ही बिलायत चले जायं और कुछ भारतमें ही रह घोर वैध आन्दोलन जारी कर दें।

जापानकी अवस्था।

मित्रराष्ट्रोंमें होकर भी जापानसे अभीतक विजयके उपलक्ष्यमें खुशियां मनानेके समाचार नहीं आये हैं, यह बड़े आश्चर्यकी बात है। जापान ऐसा क्यों चुप है, यह तो पता नहीं चलता, पर जापानके सम्बन्धमें जर्मनीमें जो धारणा है वह गत मई महीनेमें जर्मन पत्र 'प्रूशिश जहरबूचर'में प्रकाशित डा० जे० विटके एक लेख पढ़नेसे मालूम हो सकती है। अवश्य ही जापान और अमेरिका दोनों ही इस लड़ाईमें जर्मनीके दुश्मन रहे हैं। इससे सम्भव है कि उक्त लेखमें कही बातें किसी चालसे लिखी गयी हों। पर उससे जापानके प्रति जर्मनीकी धारणाका पता भली भांति लग सकता है इस लिये पाठकोंके मनोविनोदार्थ विलायतके सुप्रसिद्ध पत्र 'रिव्यू आफ रिव्यूज'में उस लेखके प्रकाशित अंशका भाषानुवाद यहां देते हैं;—

डा० जे० विट लिखते हैं कि "जापान समरके बाद पूर्वी एशियामें सब राष्ट्रोंसे प्रधान शक्ति बनना चाहता है, यह बात गत जनवरीमें जापानी पार्लमेण्ट खोलते समय दिये हुए काउण्ट टेरौची और बैरन मोनोटोनोके भाषणोंसे स्पष्ट है। वह अपनी शान्तिकालीन सेनामें वृद्धि करना चाहता है और जलसेनाकी वर्तमान शक्ति दूनी करनेवाला है। उसके अपनी शक्तिमें इतनी वृद्धि करनेसे पता चलता है कि उसने जो पिछले दिनों अमेरिकासे मेल किया है वह मित्रता स्थायी न होगी। यहां क्यों समरके बाद दोनोंमें भारी झगड़ा होनेकी सम्भावना है।

समरकालमें इङ्गलैण्डके विरुद्ध जर्मनीकी सफलताओंसे जापानकी अवस्था अमेरिकाकी ओर अधिक अनुकूल होती है। मतलब यह कि जापानकी उन्नति जर्मनीकी सफलताओंके कारण है क्योंकि इङ्गलैण्डकी परेशानीसे अमेरिकाकी आवश्यकता बढ़ती है इससे स्पष्ट है कि जापान अन्तमें इङ्गलैण्डकी कमजोरीसे अत्यन्त प्रसन्न होगा। इसीसे उसने युरोपमें लड़नेसे बराबर इनकार किया है यद्यपि इङ्गलैण्ड और फ्रांस उसे भय दिखाते दिखाते या उसकी चापलूसी करते करते थक गये। वह बहुत अच्छी तरह जानता है कि यदि जर्मनी द्वारा इङ्गलैण्ड तथा अमेरिकाकी जीत हुई तो दोनों ऐंग्लो सेक्सन राष्ट्र हमारे विरुद्ध मिल जायंगे। जापानको अकेले अमेरिकासे भय नहीं है। पर यदि अमेरिका और इंगलैंड उसे दबानेको मिल जायं तो उनकी सम्मिलित शक्तियोंसे उसे भय है।

भविष्यमें जापानका भाव जर्मनीकी ओर कैसा होगा, यह जपान तथा उनके अमेरिकाके उसके सम्बन्धके विषयमें बड़े महत्वका होगा। कारण यह कि यद्यपि जापान और जर्मनीमें युद्ध होनेकी बिलकुल सम्भावना नहीं है पर जर्मनीका यदि इङ्गलैण्ड और अमेरिकासे समझौता हो जाय तो वह (जर्मनी) ऐंग्लो सेक्सन शक्तियोंकी मदद कर

जापानके ऊपर भारी सङ्कट उपस्थित कर सकता है। इसलिये यह बात मानी जा सकती है कि यदि यूरोपमें इङ्गलैण्डको अधिक सफलता हुई तो जापान जर्मनीसे मित्रता गांठनेका पूरा प्रयत्न करेगा। जर्मनीको जापानकी जितनी आवश्यकता हैं उससे बहुत ही अधिक आवश्यकता जापानको जर्मनीकी है।

इस समरके कारण यह निश्चय है कि जर्मनी बड़ा शक्तिशाली हो जायगा। पर जापानको अपनी उस बढ़ी हुई शक्तिकी रक्षा करनी होगी जो दूसरोंके मत्थे उसने प्राप्त की है और जिसे छीननेके प्रयत्न किये जायंगे। प्रशान्त महा सागरका अध्यक्ष कौन होगा अमेरिका या जापान? अभी यह प्रश्न हल होनेहीको पड़ा है। जापान एशियाकी ही बड़ी शक्ति बना रहेगा या प्रशांत महासागरके सब तटवर्ती देशोंमें भारी प्रभाव पैदाकर वह संसारकी एक बड़ी शक्ति बनेगा? संसारकी बड़ी शक्ति बनना जापानका विचार है। पर उसकी पूर्त्तिमें अमेरिका बाधक है। यदि इङ्गलैण्ड और अमेरिका अबकी तरह ही मिले हुए जर्मनीके प्रतिद्वन्द्वी बने रहे तो जर्मनी प्रसन्नतापूर्वक जापानसे घनिष्टता बढ़ा सकता है, क्योंकि दोनों देशोंके अनेक स्वार्थोंमें दोनोंका मेल है और परस्पर कलहकी कोई बात नहीं है।

रमता योगी।

सरकार अध्यापकोंका आदर करना खूब जानती है। वह उन्हें इसीसे काम तनख्वाह देती है जिससे कि वे मदान्ध न हो जायं। दूरदर्शिता इसे कहते हैं।

जान पड़ता है कि अब भारतमें सभी चोर डाकू हो गये हैं। तभी तो पुलिससे सब डरते हैं। भले आदमीको पुलिससे डरनेका काम ही क्या है।

विवाहशादियोंमें खूब धन लुटाना चाहिये। खाया पिया संग जाता है। पीछे कौन देखने आता है कि वंशकी क्या दशा है।

किसानोंको चाहिये कि अब गेहूं खाना शुरू कर दें। वे चना खाकर एक दम कमजोर पड़ गये हैं। कमजोर आदमियोंका कहां मान हुआ है।

ज्वरदेव और उनके बड़े भाई अकालराम अभीतक भारतसे प्रस्थान नहीं कर पाये हैं। कमसे कम इन बेचारोंको तो जहाजपर बैठनेकी आज्ञा मिल जानी चाहिये।

भारतके किसान इस लड़ाईमें मालामाल हो गये हैं। परन्तु धनियोंकी तरह वे शायद लालची हो गये हैं। तभी तो वे और उनके परिवार वाले अब बदनपर चिथड़े लपेटे फिरते हैं। क्या सरकारको अब उनकी खबर लेनेका समय नहीं है।

भारतीयोंने इस लड़ाईमें खून बहाकर अपनी राजभक्तिका परिचय दे दिया। यदि भगवान भी भक्तोंके सेवक होते हैं तो क्या हमारी सरकार अपनी इच्छा पूर्ण न करेगी।

भारत सरकार ही नहीं ब्रिटिश सरकार भी बड़ी कृतघ्न है। बूढ़े सुरेन्द्र बाबूने कांग्रेससे

भी सम्बन्ध तोड़ लिया परन्तु सरकारने उन्हें सन्धिसभामें न भेजा।

——

भारतको हरगिज स्वराज्य नहीं मिलना चाहिये। यदि वह स्वतन्त्र बन गया तो फिर वह भूखे युरोपकी खबर ही क्यों लेगा।

——

लड़कोंको विद्या कभी न पढ़ानी चाहिये। पढ़लिखकर वे माता पिताकी सेवा नहीं करते और पढ़ी सन्तान बड़ा सुख देती है।

——

यदि संसारमें कोई धनवान देश है तो इस समय भारत है। और देशोंका धन तो लड़ाईमें लग गया परन्तु भारतकी सम्पत्ति अभीतक जमीनमें ही गड़ी बिलख रही है। अब जमीन खोदनेमें कौन देर हो रही है।

——

सन्धिसभामें बैठनेके लिये दो भारतीय भी बुलाये गये हैं। लो. तिलक विलायतमें ही थे, परन्तु वे योग्य नहीं समझे गये। वे हो भी कैसे सकते हैं। सन्धिसभामें देशी जूता और मराठी अंगरखा कैसे अच्छा मालूम होता।

——

भूखे युरोपको अब भारतकी ओर क्यों नहीं झपटना चाहिये। संसारमें जो दूसरेका आसरा खोजे उसे क्यों सुख दिया जाय।

——

घरका अपमान असह्य होता है। तभी तो भाईकी बात भी न सहकर लोग अदालतोंमें चपरासियोंकी लातेंतक सहते हैं।

——

ईश्वर यदि जन्म दे तो किसी ब्राह्मणके घर। विना विद्या पढ़े ही कमसे कम यजमानके घरसे पेट भरनेको रोटी तो मिलेगी। यदि चेला आज्ञाकारी मिल गया तब तो लड्डू मलाई रखी ही है।

——

आलसी ही संसार में मजा लूटा करते हैं। जभी भर पेट खानेको न मिला भगवानको अच्छी तरह कोसा करते हैं। मिहनत करनी ही नहीं पड़ती।

——

हिन्दुओंमें यदि बालविवाह जारी हुआ तो फिर वृद्धविवाह क्यों न होता। बूढ़े क्या बच्चोंसे किसी बातमें कम होते हैं।

मारवाड़ी सच्चे राजभक्त हैं। तभी तो वे स्वराज्यवादियोंकी तरह व्यापारियोंकी ओरसे मत प्रकट करनेके लिये सन्धि सभामें अपने प्रतिनिधि भेजनेकी मांग कर सरकारको तंग नहीं करना चाहते।

——

सन्धिसभामें व्याख्यान फटकारनेकी आशापर सुरेन्द्र बाबूने कांग्रेस छोड़ा था। पर इतने बड़े हितैषीको छोड़ सरकारने सरसिंहको वहां भेज दिया। इस तरह दोनों जहानसे गये हुए बूढ़े बाबू शायद अब तपस्याके लिये जङ्गलमें जानेके विचारमें हैं।

——

मिसेज बेसेंट यदि पार्लमेंटकी मेम्बर चुन ली गयीं तो सिडेनहम साहब अपने दोस्त लार्ड कर्जनके द्वारा कोशिशकर उन्हें मद्रासमें नजरबन्द करा देंगे क्योंकि जैसे यहांके कितने ही ऐंग्लो-इंडियन अपनी बला टलनेसे खुश हैं वैसे ही सिडेनहम साहब अपने सिर बला आती देख दुःखी होंगे।

——

जर्मनीसे शर्तें ।

११ वीं नवम्बरको भारत सचिवने वायसरायके पास जर्मनीसे की हुई क्षणिक सन्धिकी वे कुल शर्तें भेज दीं जो ब्रिटिश प्रधानमन्त्रीने कामन सभामें सुनायी थीं। वे नीचे दी जाती हैं :—

(क) पश्चिमी रणक्षेत्र ।

१—क्षणिक सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर होनेके ६ घण्टे बाद युद्ध क्षेत्र तथा आकाशमें लड़ाई बन्द हो। (२) आक्रान्त देशों, बेलजियम, फ्रांस, अलसेस लोरेन और लक्सेमबर्गके तुरन्त खाली करनेका ऐसा प्रबन्ध हो कि खाली करनेका काम क्षणिक सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर होनेके १४ दिनके भीतर पूरा हो जाय। जो जर्मन सैनिक निश्चित समयके बाद उपर्युक्त प्रदेशोंमें रह जायंगे वे कैद कर लिये जायंगे। प्रदेशोंके खाली करनेके साथ ही मित्रराष्ट्रों और अमेरिकाकी सम्मिलित सेनाएं उनपर अधिकार करती जायंगी। इन भागोंके खाली करने और अधिकार करनेकी व्यवस्था पहले परिशिष्टके अनुसार होगी। (३) उक्त देशोंके निवासियों, शरीरबन्धकों तथा उन मनुष्योंके लौटानेका काम तुरन्त शुरू होकर १४ दिनके भीतर खतम कर दिया जायगा जिन पर मुकद्दमा चल रहा है या जो सजा पा चुके हैं। (४) जर्मन सेनाएं २५०० भारी और २५०० मैदानी तोपें, ३० हजार मेशीन तोपें, ३००० गैस छोड़नेके यंत्र २००० हवाई जहाज तथा बम बरसानेवाले विमान आदि देंगी और ये सब चीजें बढ़िया होंगी। ये चीजें ज्योंकी त्यों मित्रराष्ट्रों और अमेरिकाकी सेनाओंको पहले परिशिष्टकी टिप्पणीमें कही शर्तोंके अनुसार दी जायंगी। (५) राइन नदीके बायें किनारेकी भूमि जर्मन सेनाएं खाली कर देंगी। इनका शासन प्रादेशिक अधिकारी अधिकार करनेवाली मित्रराष्ट्रों और अमेरिकन सेनाओंकी निगरानीमें करेंगे। इन देशोंपर मित्रराष्ट्रों और अमेरिकाकी वे सेनाएं अधिकार करेंगी जिनका राइन नदी पार करनेके मुख्य स्थानों—मेज कोवलेंज और कोलोन तथा इनस्थानोंपर बने हुए राइनके दाहने किनारेके प्राय: १८ मील अर्द्ध व्यासके घेरेके पुलरक्षक और राइन प्रान्तोंके सैनिक महत्वके स्थानों पर अधिकार होगा। राइनके दाहने किनारे एक निरपेक्ष सीमा नियत की जायगी, जो नदी और उस प्रांतके बीच होगी जो हालैंडकी सीमासे शुरू होकर कोई ६ मील दूरपर खींची जायगी। क्षणिक सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर होनेके पहले इन प्रदेशोंके निवासियोंने जो सैनिक कार्योंमें भाग लिया है उसके लिये किसीके ऊपर मामला न चलाया जायगा। साधारणतया या सरकारी ढंगका कोई ऐसा काम न होगा जिससे उद्योगधन्धों तथा उनमें काम करनेवालोंमें किसी तरहकी कमी हो। राइन प्रदेशको शत्रु इस तरह खाली करेगा जिससे क्षणिक सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर होनेके ३० दिनके भीतर खाली हो जाय। खाली करने और अधिकार करनेकी व्यवस्था पहले परिशिष्टकी टिप्पणीके अनुसार होगी। (६) शत्रुके खाली किये हुए प्रदेशोंसे वहांके निवासी न हटाये जायंगे। निवासियोंके जानमालको किसी तरहकी हानि

न पहुंचायी जायगी। खाली करनेके लिये निश्चित समयके भीतर जो खाद्य पदार्थ, गोलाबारूद और सामान न हटाये जा सकेंगे वे तथा सैनिक स्थान अभङ्ग रूपमें जर्मनी मित्रसेनाओंको सौंप देगा। असैनिकों, पशुओं आदिका सब तरहका खाद्य सासामान ज्योंका त्यों छोड़ देना होगा। उद्योगधन्धोंमें, कुछ गड़बड़ न करनी होगी और उनमें काम करनेवाले न हटाये जायंगे। (७) सड़कें तथा सब तरहके गमनागमनके मार्ग, रेलें, जलमार्ग, खास सड़कें, पुल, तार और टेलीफोन ज्योंके त्यों रहने देने होंगे, और उनके कामोंमें लगेहुए सब सैनिक और असैनिक बने रहेंगे। ठीक काम देनेवाले ५००० इंजन, डेढ़ लाख किराचियां और ५००० मोटरें तथा उनको मरम्मतके आवश्यक सामान बेलजियम और लक्सेमबर्ग, खाली करनेके लिये निश्चित समयके भीतर अलसेस लोरेनकी रेलें, समरके पहले उनमें काम करनेवालों तथा रेलके कामके लिये आवश्यक सामानके साथ जर्मनी मित्रराष्ट्रोंको देगा। राइनके पश्चिमी तटके प्रदेशमें जमा सब कोयला और सामान ज्योंका त्यों स्थायी मार्ग ठीक रखनेको छोड़ जाना होगा। सिगनल और मरम्मत करनेके कारखाने ज्योंके त्यों छोड़ जाने होंगे और जर्मनी क्षणिक् सन्धि कालतक गमनागमनके मार्गोंको ठीक रखेगा। मित्रराष्ट्रोंके छीने हुए बजड़े उन्हें लौटा दिये जायंगे। इन नियमोंकी व्यवस्था दूसरे परिशिष्टके अनुसार होगी। (८) जर्मन सेनाके खाली किये भूभागोंमें, जो सुरङ्ग आदि मिलंगी उनके उत्तरदाता जर्मन सेनानायक होंगे। जर्मनीको उनके पता लगाने और नष्ट करनेमें सहायता देनी होगी। जर्मन सेनापतिको ऐसे नाशक कार्य भी बता देने होंगे जैसे जहरीले या खराब किये कुएं और सोते यदि नबतावेंगे तो उपर्युक्त बातोंका बदला लिया जायगा। (९) अधिकृत प्रदेशमें मित्रराष्ट्रों और अमेरिकाकी सेनाओंको अपनी आवश्यकताके पदार्थोंके मांग लेनेका अधिकार होगा, पर वे चीजें न मांगी जा सकेंगी जो किसी अधिकारी व्यक्तिके हिसाब चुकानेके लिये हैं। अलसेस-लोरेनके सिवा राइन प्रदेशपर अधिकार करनेवाली मित्रसेनाओंका खर्च जर्मन सरकारके मत्थे पड़ेगा। (१०) निश्चित होनेवाली शर्त्तोंके अनुसार मित्रराष्ट्रों और अमेरिकाके कुल समर कैदी जर्मनी बिना किसी प्रकारके बदलेके लौटा देगा। मित्रराष्ट्र और अमेरिका इन कैदियोंका चाहे जैसा बन्दोबस्त कर सकेंगे। हालैण्ड और स्वीजर्लैण्डमें नजरबन्द जर्मन कैदियोंके लौटनेका काम यथापूर्व होता रहेगा। सन्धिकी बातचीत छिड़नेपर जर्मन समरकैदियोंके छोड़नेका निश्चय होगा। (११) खाली किये हुए प्रदेशोंसे जो बीमार और घायल नहीं हटाये जा सकते उनकी सेवाशुश्रूषाका प्रबन्ध जर्मनीके आदमी करेंगे जो आवश्यक दवादारू सहित उन प्रदेशोंमें छोड़ दिये जायंगे।

(ख) पूर्वसम्बन्धी शर्तें।

(१२) समरके पहले जो प्रदेश रूस, रूमानिया या रूमके थे उनमें इस समय जितनी जर्मन सेनाएं हैं वे सब जर्मनीकी उस सीमाके भीतर लौट आवेंगी जो १९१४ की पहली अगस्तको थी। जो प्रदेश समरके पूर्व रूसके थे उनमें जो जर्मन सेनाएं हैं वे भी जर्मनीकी उपर्युक्त सीमाके भीतर

स्थ ही लौट आवेंगी ज्योंही मित्र-राष्ट्र इन प्रदेशोंकी भीतरी अवस्थाको ध्यानमें रख उनका लौटना उपयुक्त समझेंगे। (१३) जर्मन सेनाएं तुरन्त प्रदेशोंका खाली करना शुरू कर दें और जो जर्मन शिक्षक, कैदी और असैनिक तथा सैनिक एजेण्ट १९१४ की पहली अगस्तके रूसके प्रदेशोंमें हैं वे बुला लिये जायं। (१४) जर्मन सेनाओंको १९१४ की पहली अगस्तके रूस और रूमानियाके प्रदेशोंसे जर्मनीके लिये खाद्यपदार्थ भेजनेके कार्य तथा सैनिक आवश्यकताकी पूर्तिके लिये मांग और जबर्दस्ती छीननेका काम तुरन्त बन्द कर देना होगा। (१५) बुखारेस्त, और ब्रेस्ट लिटोस्ककी संधियां तथा अतिरिक्त सन्धियां रद्द कर देनी होंगी। (१६) जर्मन पूर्वी सीमाके निकटके जो प्रदेश खाली कर देंगे उनमें मित्रराष्ट्रोंको डैनजिग और विसचुलाके मार्गसे उन प्रदेशोंके निवासियोंके लिये खाद्य पदार्थ ले जाने तथा शान्ति बनाये रखनेके लिये स्वतन्त्रतापूर्वक जानेका अधिकार होगा।

(ग) पूर्व अफ्रिका संबंधी।

(१७) जो जर्मन सेनाएं पूर्व अफ्रिकामें लड़ रही हैं वे बिना किसी शर्तके एक महीनेके भीतर स्थान खाली कर दें।

(घ) साधारण शर्तें।

(१८) बिना किसी प्रकारके बदलेके अधिकसे अधिक एक महीनेके भीतर जर्मनी आगे निश्चित होनेवाली शर्तोंके अनुसार उन सब असैनिकोंको लौटा देगा जिन्हें उसने निर्वासित या नजरबन्द कर रखा है और जो उन मित्रराष्ट्रोंके प्रजाजन हैं जिनके नाम तीसरी शर्तमें नहीं आये हैं। (१९) की हुई हानि पूरी करनी होगी। क्षणिक् संधिकी अवधितक ऐसे सरकारी कागज न हटाये जायंगे जो हानि पूरी करनेमें काम आ सकें। बेलजियमके नेशनल बैंकमें जमा की हुई रकमें तुरन्त चुकानी पड़ेंगी। सब दस्तावेज, शेयर और नोट तथा उनके बनानेके कल पुर्जे लौटा देने होंगे। रूमानियाने जो सोना जर्मनीको दिया है या जर्मनीने उससे लिया है वह लौटा दिया जायगा। सन्धि होनेके समयतकके लिये यह सोना मित्रराष्ट्रोंके पास ट्रस्टकी भांति जमा रहेगा।

(ङ) समुद्र सम्बन्धी।

(२०) सब प्रकारकी समुद्री लड़ाइयां तुरन्त बन्द हों और सब जर्मन जहाजोंके स्थान और गतिकी पक्की सूचना दी जाय। जर्मनी निरपेक्ष राष्ट्रोंको सूचना दे कि जर्मनीके समुद्र-भागमें मित्रराष्ट्रों और अमेरिकाको जहाज चलानेकी स्वतन्त्रता दी गयी है ; निरपेक्षिता सम्बन्धी कोई अड़चन नहीं रहेगी। (२१) मित्रराष्ट्रोंकी जल सेना तथा व्यापारिक जहाजोंके जो लोग जर्मनीमें कैद हैं वे बिना किसी प्रकारके बदलेके लौटाने होंगे। (२२) मित्रराष्ट्रों और अमेरिकाके बताये हुए बन्दरोंमें उपस्थित सब गोताखोर, गोताखोर क्रूजर तथा सुरङ्ग बिछानेवाले जहाज मित्रराष्ट्रों और अमेरिकाको सौंप दिये जायं। जो समुद्रमें नहीं चल सकते वे मांझी और सामानसे रहित कर दिये जायंगे और मित्र-राष्ट्रों तथा अमेरिकाकी निगरानीमें रहेंगे। जो गोताखोर समुद्री यात्राके लिये तैयार हैं वे बेतारका तार पाते ही समर्पणके बन्दरको रवाना करनेके लिये तैयार रखे जायंगे। बाकी भी यथासम्भव शीघ्र रवाना होंगे। इसकेअनुसार क्षणिक् संधिपत्रपर हस्ताक्षर होनेके बाद १४ दिनके भीतर

काम करना होगा। (२३) मित्रराष्ट्रों और अमेरिकाके बताये हुए नीचे लिखे जर्मन लडाऊ जहाज तुरन्त निरस्त्र करके निरपेक्ष राष्ट्रोंके बन्दरोंमें नजरबन्द किये जायंगे। यदि ऐसा न हुआ तो मित्रराष्ट्रोंके बताये मित्रराष्ट्रोंके बन्दरोंमें अमेरिका और मित्रराष्ट्रोंकी निगरानीमें वे रखे जायंगे। उनपर निगरानी रखनेके लिये ही आदमी रख छोड़े जायंगे;—६ लड़ाऊ क्रूजर, १० लड़ाऊ जहाज, ८ हल्के क्रूजर जिनमें दो सुरङ्ग बिछानेवाले जहाज होंगे, और बिल्कुल ही नये ढंगके बने ५० नाशक जहाज। अन्य सब लड़ाऊ जहाज नय नदीमें चलनेवाले जहाजोंके मित्रराष्ट्रों और अमेरिकाके बताये जर्मन अड्डोंमें एकत्र किये जायंगे। वे बिल्कुल निरस्त्र हो अमेरिका और मित्रराष्ट्रोंकी निगरानीमें रहेंगे। नजरबन्द किये जानेवाले ऊपर कहे सब जर्मन जहाज क्षणिक संधिपत्रपर हस्ताक्षर होनेके सात दिनके भीतर जर्मन बन्दर छोड़नेको तैयार रहेंगे। यात्राके लिये उन्हें सूचना बेतारके तारसे दी जायगी। मित्रराष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंने इस आशयके एक घोषणापत्रपर हस्ताक्षर कर उसे जर्मन प्रतिनिधियोंको दिया है कि यदि बेड़के उपद्रवोंके कारण जहाज मित्रराष्ट्रोंको न दिये गये, तो उन्हें हेलिगोलैण्डपर इस लिये अधिकार कर लेनेका अधिकार होगा कि जिससे वे इस शर्तके अनुसार काम करा सकें। जर्मन प्रतिनिधियोंने एक ऐसे पत्रपर दस्तखत किये हैं जिसमें उन्होंने लिखा है कि हम चांसलरसे यह स्वीकार करनेको सिफारश करेंगे। (२४) मित्रराष्ट्रों और अमेरिकाको जर्मनीके समुद्र भागके बाहर उसके द्वारा बिछायी हुई सब सुरङ्गों तथा अन्य रुकावटोंके हटानेका अधिकार होगा और उनके स्थान जर्मनी बतावेगा (२५) मित्रराष्ट्रोंके जहाजोंको बालटिक समुद्रमें आनेजानेकी स्वतन्त्रता देनी होगी। इसके लिये अमेरिका और मित्रराष्ट्रोंको उन सब किलों, बैटरियों आदि पर कब्जा करनेका अधिकार होगा जो जर्मनीने कैटेगेटसे बालटिक समुद्रके सब मार्गों पर बना रखी हैं और उन्हें जर्मनीके समुद्र भाग तथा उसके बाहरके समुद्रकी सब सुरङ्गों तथा रुकावटोंको हटानेका अधिकार होगा। निरपेक्षिताकी कोई अड़चन न खड़ी की जायगी और जर्मनी सुरङ्गों आदिके स्थान बता देगा। (२६) मित्रराष्ट्रोंने जो समुद्री घिराव डाल रखा है उसकी अवस्था ज्योंकी त्यों बनी रहेगी और समुद्रपर जो जर्मन व्यापारिक जहाज मिलेंगे वे छीने जा सकेंगे अमेरिका और मित्रराष्ट्रोंका क्षणिक संधिकी अवधितकके लिये जर्मनीके वास्ते आवश्यक खाद्य पदार्थका प्रवन्ध कर देनेका विचार है। (२७) सब समुद्री हवाई जहाज मित्रराष्ट्रों और अमेरिकाके बताये जर्मन अड्डोंमें एकत्र कर निरस्त्र कर दिये जायंगे। (२८) बेलजियन तटके किले खाली करते समय जर्मनीको व्यापारिक, खींचनेवाले, रोशनीके तथा अन्य जहाज और बन्दरके सामान, नदियोंमें जहाज चलानेके सामान सब विमान तथा माल, सब हथियार और सब तरहके कल पुर्जे छोड़ जाने होंगे। (२९) काले सागरके सब बन्दर जर्मनीको खाली कर देने होंगे। काले सागरमें जर्मनीने रूसके जो सब प्रकारके जहाज छीन रखे हैं उन्हें वह मित्रराष्ट्रों और अमेरिकाको सौंप देगा। निरपेक्ष

राष्ट्रोंके पकड़े हुए सब व्यापारिक जहाज छोड़ने होंगे। उन बन्दरोंमें लड़ाईके योग्य जो सामान छीने गये हैं वे सब लौटा देने होंगे और २८ वीं शर्तमें कहे सामान जर्मनीको छोड़ जाने होंगे। (३०) बिना किसी प्रकारके बदलेके जर्मनी मित्र-राष्ट्रोंके व्यापारिक जहाजोंको अमेरिका और मित्रराष्ट्रोंके बताये बन्दरोंको पहुंचा देगा। (३१) खाली करने, समर्पण करने या लौटानेके पहले जहाज या सामान न नष्ट किये जाने पावें। (३२) जर्मनी नियमानुसार संसारके सब निरपेक्ष राष्ट्रों और विशेषकर स्वीडेन डेनमार्क तथा हालैण्डको सूचना दे देगा कि जर्मन गवर्नमेण्ट या जर्मनीकी किसी प्राइवेट संस्थाने उनके जहाजोंके मित्रराष्ट्रोंके साथ व्यापार करनेमें जो रुकावटें खड़ी की हैं वे तुरन्त रद्द की जाती हैं। (३३) क्षणिक् सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर होनेके बाद जर्मन व्यापारिक जहाज निरपेक्ष राष्ट्रोंके हाथ न बेचे जा सकेंगे।

(च) क्षणिक् संधिकी अवधि

(३४) क्षणिक् सन्धिकी अवधि ३६ दिन है जो बढ़ायी जा सकती है। इस अवधिके भीतर उपर्युक्त शर्तोंमें किसीके अनुसार काम न होनेपर किसी भी पक्षकी ओरसे पहले ४८ घण्टेकी नोटिस देकर क्षणिक् सन्धि तोड़ी जा सकती है।

(छ) उत्तरके लिये अवधि

३५—यह क्षणिक् सन्धि जर्मनीको मालूम होनेके ७२ घण्टेके भीतर स्वीकार या अस्वीकार करनी होगी।

नयी फेशनके बाबू।
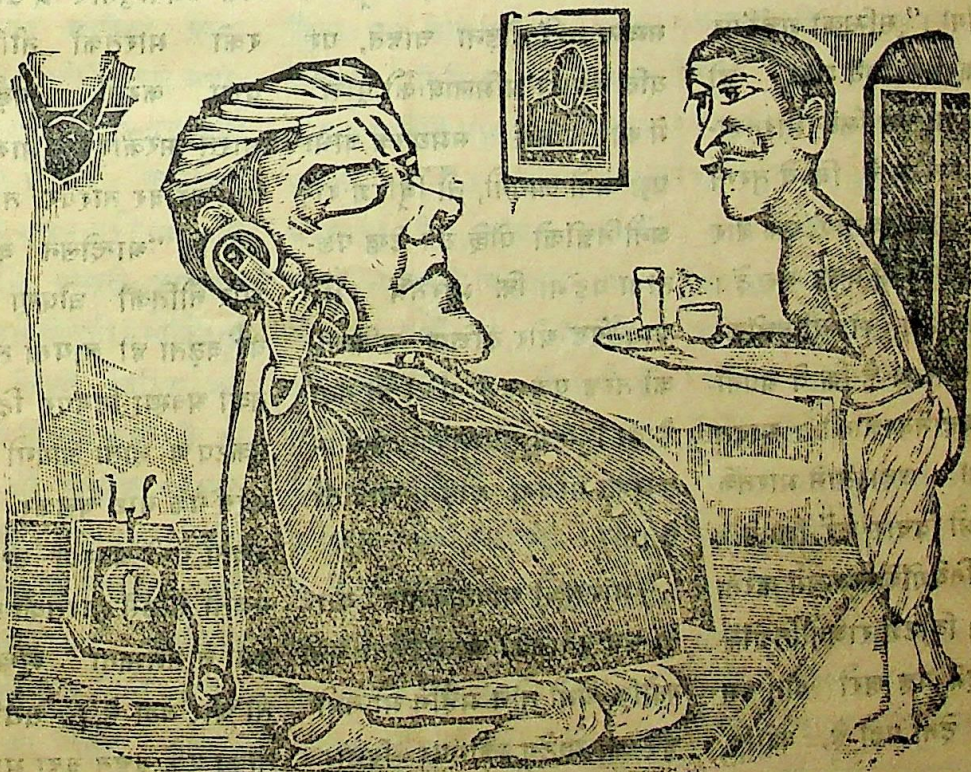
हुआ सवेरा लाओ चाय। सन्ध्या पूजा दई भगाय॥

हमारी आवश्यकता

उस दिन लण्डनके लार्ड मेयरके भोजमें ब्रिटिश प्रधान सचिव मि० लायड जार्जने स्पष्ट शब्दोंमें स्वीकार किया है कि "भारतने उपनिवेशोंके समान ही वीरता दिखायी है। विशेषकर भारतकी सहायतासे ही हमने वे लड़ाइयां जीती हैं जिनसे हमारे शत्रुओंका अङ्ग भङ्ग होना प्रारम्भ हुआ है।" इसीसे उन्हें कहना पड़ा है कि 'सन्धिसभामें भारतकी आवश्यकताएं कदापि न भुलानी होंगी।". सन्धिको शर्तों पर विचार करनेके लिये शीघ्र ही सभा जुड़ेगा, इस लिये भारतवासियोंका कर्त्तव्य है कि वे तुरन्त ही अपनी आवश्यकताएं एक बार फिर स्पष्ट शब्दोंमें प्रकट कर दें। साथ ही ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंका भी परम कर्त्तव्य है कि वे अपनी सदाकी बहानेबाजीकी आदत छोड़ उसी उदारतासे भारतके सम्बन्धमें भी विचार करें जिससे वे जर्मन उपनिवेशोंके सम्बन्धमें करना चाहते हैं। ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंके सम्बन्धमें हमें यह खरी बात इस लिये कह देनी पड़ी है, क्योंकि हम समझते हैं कि मीठी बातोंसे हमें खुश करनेकी उनकी आदत पड़ गयी है और दुर्भाग्यवश हम भी अभीतक उनकी वैसी बातोंसे खुश भी होते रहे हैं। पर अब हम स्पष्ट शब्दोंमें बता देना चाहते हैं कि मीठी बातें सुनते सुनते हमारा जी भर गया है। अब हम बातें नहीं, बल्कि काम चाहते हैं। संसारके स्वतन्त्र राष्ट्रोंकी उन्नति देख हमारे हृदयमें भी अब अपनी सब प्रकारकी उन्नति करनेके लिये स्वतन्त्रता प्राप्त करनेकी उत्कट अभिलाषा पैदा हो गयी है। हम ब्रिटेनसे सम्बन्ध नहीं तोड़ना चाहते, पर यदि हमारी अभिलाषाकी पूर्त्ति में और अधिक समयतक बाधा पहुंचायी जायगी, तो ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंको पीछे यह देख पछताना पड़ेगा कि भारतमें भी आयर्लैण्ड और दक्षिण अफ्रिकाकी तरह एक दल पैदा हो गया है जो ब्रिटिश साम्राज्यसे सब प्रकारका सम्बन्ध छोड़ना चाहता है।

भारतकी आवश्यकताएं क्या हैं, यह बतानेकी आवश्यकता नहीं क्योंकि अभी तीन महीने भी नहीं हुए जब मांटेगू स्कीमपर विचार करनेके लिये बम्बईमें भारतकी राष्ट्रीय कांग्रेसका विशेष अधिवेशन हुआ था तब स्पष्ट शब्दोंमें भारतकी आवश्यकताएं प्रकटकर दी गयी थीं। जो लोग कांग्रेसको भारतकी प्रतिनिधिसभा नहीं समझते हमारी समझसे या तो उनके हृदयकी आंखें फूटी हुई हैं या उनका स्वार्थ उन्हें वैसा नहीं करने देता। कारण यह कि भारतमें राजनीतिक आन्दोलनका केन्द्र कांग्रेस ही है। उसीके आन्दोलनके फलस्वरूप अबसे कुछ समय पहले लार्ड इसलिंगटनके कथनानुसार ब्रिटिश सरकारको भारतकी नीतिकी घोषणा करनी पड़ी थी। भारत सरकारको भारतसचिवके पास बराबर तारपर तार भेजने पड़े कि "आन्दोलन बढ़ रहा है और नीतिकी घोषणा न करनेसे वह बढ़ता ही जायगा तथा भारतकी अवस्था दिनपर दिन अधिक संकटपूर्ण होता जायगी।" जिस कांग्रेसके साथ चलकर भारतीय जनता ऐसी अवस्था उत्पन्न कर सकती है उसे भारतकी प्रतिनिधि सभा न समझना मूर्खता नहीं तो और क्या है? यद्यपि जनताका एक बहुत बड़ा भाग अधि-

कसे अधिक १० वर्षके भीतर ही पूर्ण स्वराज्य चाहता है, पर विशेष कांग्रेसने सर्वसम्मतिका ध्यान कर इसके लिये १५ वर्षकी अवधि रखी है। इतने अधिक समयके भीतर भी यदि ब्रिटिश राजनीतिज्ञ भारतको उसका न्यायसिद्ध अधिकार देनेमें आगापीछा करेंगे तो निश्चय है कि वे भारतमें भारी अशान्ति पैदा करनेके कारण होंगे जिसका परिणाम साम्राज्य और भारत दोनोंहीके लिये बुरा सिद्ध होगा।

स्वराज्यकी हमारी योग्यताके सम्बन्धमें अब किसीको कुछ चींचपड़ करनेका स्थान नहीं रहा है, क्योंकि इस महासमरमें भारतीय वीरोंने वह कार्य कर दिखाया है जो कदाचित् औरोंके लिये सम्भव नहीं था। यदि कहा जाय कि समरके आरम्भसे अन्ततक भारतीयोंनेही ऐसी वीरता दिखायी है जिससे ब्रिटिश साम्राज्य आज विजयी हुआ है तो इसमें कुछ भी अत्युक्ति न समझनी चाहिये। फ्रांसकी ब्रिटिश सेनाके भूतपूर्व सेनाध्यक्ष लार्ड फ्रेंचने राजकुमारी सोफिया दलीपसिंहको कुछ दिनों पूर्व एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने मुक्तकण्ठसे भारतीय सेनाकी वीरताकी प्रशंसा करते हुए कहा है कि 'जब भारतीय सेना १९१४ के अक्तूबरमें पहले पहल (फ्रांस) पहुंची अवस्था ऐसी विकट थी कि उसे तुरन्त लड़कर प्रबल जर्मन सेनाका बढ़ना रोकनेको भेजना पड़ा। वाइप्रेसकी पहली लड़ाईमें उसने बड़ी दृढ़ता और सहनशक्ति दिखायी। उसकी वीरता इसलिये और भी प्रशंसनीय है कि वह एकाएक वर्षकी अत्यन्त बुरा ऋतु, में गरम देश भारतसे पश्चिमी बर्फीले देशमें भेजी गयी थी।" इसके सिवा इस समरकालमें समय समयपर ब्रिटिश राजनीतिज्ञों और जेनरलोंने भारतीय वीरोंकी प्रशंसा की है। क्षणिक् सन्धिके अवसरपर मि० लायड जार्जने अपने भाषणमें विजयका प्रधान श्रेय भारतको ही दिया है। इन बातोंसे यह तो सिद्ध ही है कि जो भारतीय वीर सात समुद्र पार जा संसारकी सबसे प्रबल शक्तिपर विजय प्राप्तकर सकते हैं वे स्वदेशकी रक्षा करनेमें असमर्थ नहीं सिद्ध हो सकते। जब हथियारोंके कानून तथा अन्य रुकावटोंके होते हुए भी थोड़े ही समयकी सैनिक शिक्षासे वे इतनी करामात दिखा सकते है तब थोड़ा भी सुभीता हो जानेसे वे क्या नहीं कर सकते? इसीसे हम दावेके साथ ब्रिटिश सरकारसे कहते हैं कि हम भारतीय स्वराज्य करनेके लिये भली भांति योग्य हैं इस लिये हमें स्वराज्य देनेमें अब अधिक टालमटोल न होनी चाहिये। मि० लायड जार्जने उस दिन कहा है कि, "ब्रिटेनकी कठिनाइयोंका आरम्भ तो उस दिन होगा जब सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर हो जायंगे। अगले चार वर्षों में ब्रिटेन और उसके साम्राज्यके भाग्यका निर्णय होगा।" यदि ब्रिटेन उन कठिनाइयोंकी ओरसे निश्चिन्त होना चाहता है तो उसका कर्त्तव्य है कि वह भारतकी स्वराज्याकांक्षा पूरी कर दे। सन्तुष्ट भारत ब्रिटिश साम्राज्यको कठिनसे कठिन संकटोंसे भी बचानेमें समर्थ होगा। पर यदि सन्धिके पश्चात् साम्राज्यकी पुनः रचना होनेके समय भी भारतकी न्यायसिद्ध आकांक्षा न पूरी की जायगी तो भारतीयोंके हृदयसम्राट लो० तिलकके शब्दोंमें "ब्रिटिश साम्राज्य हानि उठावेगा।"

विविध विचार

अब आंखें खुलीं—

इस महासमरसे यदि किसी देशने लाभ उठाया है तो वह जापान है। पाठकोंको यह बतानेकी आवश्यकता नहीं कि समरके पूर्व भारतके बाजारोंमें प्रायः जर्मनी और आस्ट्रियाकी बनी चीजें ही बहुतायतसे बिकती थीं। ब्रिटेनकी उन देशोंसे शत्रुता होने तथा उनपर समुद्री विराव पड़नेसे समरारम्भसे ही उन देशोंका माल आना बन्द हो गया है। इस सुअवसरसे दूरदर्शी जापानने कितना लाभ उठाया है, यह बतानेकी आवश्यकता नहीं जान पड़ती, क्योंकि आज हमें बाजारोंमें प्रायः सभी तरहकी चीजें जापानकी ही बनी दिखाई पड़ती हैं। यद्यपि जापानका बना माल जर्मनी और आस्ट्रियाके बने मालसे बहुत ही घटिया होता है, पर बढ़िया पदार्थके अभावमें घटियासे ही काम लेनेको लाचार होना पड़ता है। यहांके कपड़ेके बाजारोंपर जापानने जैसा अपना प्रभुत्व जमा लिया है वैसा शायद और किसी बाजारपर नहीं। इसीसे मेञ्चेस्टरके कपड़ेके व्यापारियोंकी अब आंखें खुली हैं और वहांकी चेम्बर आफ कामर्सने काटन कण्ट्रोल बोर्डका ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा है कि, जापान तथा अन्यत्रके बने कपड़े भारत और चीनमें इतने सस्ते बिक रहे हैं जितने सस्ते ब्रिटेनके बने नहीं बेचे जा सकते और अभीतक जो नये पदार्थ एकमात्र ब्रिटन ही भेजता था अब उन सबको जापानने अपने हाथमें कर लिया है। भारतवासी जापानको भारतके बाजारोंपर अधिकार जमाते देख आरम्भसे ही भारतीय उद्योग धन्धोंकी उन्नति करनेके लिये सरकारसे अनुरोध करते आ रहे हैं पर उसने अभीतक कानोंमें तेल डाल रखा था। अब व्यापार छिनता देख गोरे व्यापारियोंको चिन्ता हुई है सही, पर हमें भय है कि भारतीय बाजारोंसे अब जापानी मालका प्रभुत्व मिटाना विलायती व्यापारियोंके लिये असम्भव नहीं तो महाकठिन अवश्य है। यदि अब भी भारतीय उद्योग धन्धोंको सरकार सहायता दे उन्नत करे तो अलबत्ता कुछ दिनोंमें जापानी माल स्वदेशी मालकी प्रतियोगितामें दब सकता है।

अन्याय इसे कहते हैं—

उस दिन विलायतमें मद्रासके 'हिन्दू' पत्रके सम्पादक श्रीयुक्त कस्तूरीरङ्ग आयङ्गरने एक भोजमें कहा कि, 'हिन्दू', 'न्यू इण्डिया', 'बाम्बे क्रानिकल' और 'अमृतबाजार पत्रिका' के विलायत भेजनेमें रुकावट की गयी है। कामन सभामें मि० मांटेगूने कहा कि, जांच की जायगी। हमें विलायती पत्रोंके जो अवतरण पढ़नेको मिलते हैं उनमें ऐसी ऐसी कड़ी बातें निकलती हैं जैसी उक्त भारतीय पत्रोंको लिखनेका साहस भी नहीं हो सकता। पर विलायती पत्रोंका प्रचार नहीं रोका जाता। ऐसी दशामें उक्त पत्रोंके प्रचारमें रुकावट खड़ी करनी अन्याय नहीं तो क्या है? अभीतक बर्मा और पञ्जाबकी सरकारोंने ही अपने प्रदेशोंमें कई पत्रोंका आना रोका था पर अब मालूम हुआ है कि उनका विलायतमें जाना भी रोका गया है। सरकारकी यह नीति अत्यन्त निन्द्य है।

अकालका भूत ।

दानव पास खड़ा मुंह बाय ।
निर्धन जनको रहा सताय ॥

करतब तेरा पापी पेट ।

इस पापी पेटको भरनेके लिये धर्मप्राण हिन्दू गोमाता तकको कसाईके हाथ बेचते जरा नहीं लजाते . यदि गौएं बेचना सब बन्द कर दें तो भारतमें गोहत्याका नाम न रहे ।

कमर कस लो।

इतने दिनोंके बाद नरसंहारी समरका अन्त होनेसे पराजित राष्ट्रोंके सिवा संसारके सभी राष्ट्रोंमें आनन्द मनाया जा रहा है। जो देश जर्मनी तथा उसके साथी अन्य देशोंसे लड़ रहे थे उन्हें अपार हर्ष होना स्वाभाविक ही है, क्योंकि समरका अन्त ऐसे समय हुआ है जब उनका पक्ष विजयी था। पर संसारके अन्य देशोंको इसलिये हर्ष हुआ है क्योंकि एक तो महासमरके कारण उन्हें जो अनेक प्रकारके कष्ट सहने पड़ते थे उनका बहुत कुछ अन्त हो गया और दूसरे समरमें जीत ऐसे पक्षकी रही जिसने संसारकी प्रत्येक जनताको स्वभाग्यनिर्णयके सिद्धान्तके अनुसार परतन्त्रतासे छुड़ानेका उद्देश्य इस समर कालमें अनेक बार प्रकट किया है। हमारा भारतवर्ष इस समय इङ्गलैण्डकी अधीनतामें है इसलिये उसे कदाचित् अन्य देशोंसे अधिक हर्ष हुआ है। कारण यह कि एक तो इसने समरमें वृटिश साम्राज्यको धनजनसे जो सहायता दी है मुख्य करके उसके कारण ही वृटेनको आज यह शुभ दिन देखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है; दूसरे इसे आशा हो रही है कि, अपने पवित्र ग्रन्थ बाइबिलके उपदेशको मान इङ्गलैण्ड "घरवालोंके हिस्सेकी रोटी पहले घरवालोंको दे तब कुत्तोंको डालेगा।" अर्थात् स्वभाग्यनिर्णयका सिद्धान्त सबसे पहले वह भारतके सम्बन्धमें काममें लावेगा जिसकी पूर्ण राजभक्ति और सहायताके कारण ही वृटिश साम्राज्यका स्थान आज संसारके राष्ट्रोंमें इतना उच्च हो गया है। परन्तु दुर्भाग्यवश भारतके सम्बन्धमें महारानी विक्टोरिया तथा अन्य वृटिश राजनीतिज्ञोंने समय समयपर जो प्रतिज्ञाएं की थीं उनमें अधिकांश अभीतक पूरी नहीं की गयीं, इसीसे प्रधान मन्त्री मि० लायड जार्जकी आशाजनक बातोंको सुनकर भी भारतीयोंके हृदयमें इनकी पूर्तिके सम्बन्धमें कुछ न कुछ सन्देह अवश्य है। यही कारण है कि, भारतवर्षमें समरसमाप्तिके लिये जो हर्ष मनाया जा रहा है वह इस समय मुख्य करके भारतीयोंकी राजभक्तिका प्रदर्शक ही है। सच्चा हर्ष तो उस समय मनाया जायगा जब भारतीय देख लेंगे कि, सन्धिपरिषद्की शर्तोंके अनुसार भारत ब्रिटिश साम्राज्यका अधीन देश होनेके स्थानमें उसके मित्र पदको प्राप्त हो गया और ब्रिटेनने अपने ही अधीन भारतको वह अमृत फल—स्वभाग्य निर्णयका अधिकार—देनेमें सङ्कोच नहीं किया जो उसने अपने शत्रुदेशोंकी जनताओंको दिया है। कारण यह कि राजभक्तिके नाते तो भारतका अपने राजाकी जीतके उपलक्ष्यमें खुशी मनाना कर्तव्य ही है, पर यदि संसारको स्वतन्त्रताका दान देते हुए भी मित्रराष्ट्र भारतको उसका न्यायसिद्ध अधिकार—स्वराज्य—न दिला सके, तो भारतके सारे हर्षोत्साहोंपर पानी फिर जायगा और समरकालके अपने स्वार्थत्यागोंका कुछ फल होता न देख उसे घोर निराशा और दुःख होगा।

चार पांच दिन पहले मि० लायड जार्जने रा० विलसनके बधाईके तारका उन्हें जो उत्तर भेजा है उसमें भी उन्होंने कहा है कि "मुझे निश्चय है कि राष्ट्रोंकी पुनः रचनाके सम्बन्धमें ब्रिटेन और अमेरिकाके उद्देश्य मुख्य करके एकसे ही हैं। मुझे पूरा वि-

श्वास है कि सन्धिसभामें हम दोनों कुल संसारके लिये शान्ति, स्वतन्त्रता और सच्ची प्रजासत्ताकी वृद्धिमें सहयोग देंगे।" रा० विलसनने इस समरकालमें स्वभाग्यनिर्णय और प्रत्येक राष्ट्र और जनताकी स्वतन्त्रताके पक्षमें अनेक अवसरोंपर जो उदारतापूर्ण बातें कही हैं वे सभी भारतीयोंको भली भांति ज्ञात हैं और उनके लिये वे अमेरिकाके राष्ट्रपतिके सदा कृतज्ञ रहेंगे। सन्धिके लिये रा० विलसनने जो कार्यविधि निश्चित की है उसके समर्थनमें अमेरिकाकी मजूरदली संस्था अमेरिकन फीडरेशन आफ लेबरने पांच मुख्य सिद्धान्त निश्चित किये हैं। उसका पहला सिद्धान्त यह है कि स्वतन्त्र राष्ट्रोंका एक संघ बनाया जाय जिसमें सम्मिलित राष्ट्र सच्चे दिलसे न्यायके कामोंमें योग दान करें। दूसरा यह कि राजनीतिक या आर्थिक ऐसी रुकावटें न खड़ी की जायं जो कुछ राष्ट्रोंके लाभके लिये और अन्य राष्ट्रोंकी उन्नति रोकनेवाली हों। तीसरा यह कि बदला लेने या जानबूझकर किसी राष्ट्रको हानि पहुंचानेके उद्देश्यसे हर्जाना न लिया जाय। हां, अनुचित रूपसे जो हानि पहुंचायी गयी है उसकी पूर्त्ति करायी जाय। चौथा यह कि छोटे राष्ट्रोंके अधिकार तथा यह सिद्धान्त स्वीकार किया जाय कि "जो जनता किसी राज्यके अधीन नहीं रहना चाहती वह उसके अधीन जबर्दस्ती न रखी जाय।" पांचवां सिद्धान्त यह कि किसी सीमाके भीतर बसनेवाली जनताओंके कल्याण तथा संसारकी शान्तिवृद्धिके उद्देश्यके सिवा सीमाओंमें परिवर्त्तन न किया जाय।

रा० विलसन, मि० लायड जार्ज, अमेरिकन मजूर दली संस्था तथा अन्य सभी स्वातंत्र्य प्रेमी कह रहे हैं कि स्वतंत्रताका सिद्धांत किसी देश या जाति विशेषके लिये नहीं, बल्कि कुल संसारके लिये काममें लाया जायगा। यदि न्यायकी हत्या नहीं करनी है और संसारमें अशान्तिकी एक बहुत बड़ी जड़ नहीं रख छोड़नी है, तो ब्रिटिश साम्राज्यके भीतर आयर्लैण्ड और भारतको भी स्वतंत्रताके वे ही अधिकार देने होंगे जो कुल संसारको देनेकी तैयारी मित्रराष्ट्र और अमेरिका बहुत दिनोंसे कर रहे हैं, क्योंकि ये दोनों देश भी संसारके ही भाग हैं। जो लोग भारतको स्वराज्य करनेके अयोग्य बताते हैं उन्हें वास्तवमें ही स्वतंत्रताके दुश्मन कहना चाहिये। हम दावेके साथ कह सकते हैं कि यदि भारतको स्वराज्य मिल जाय तो वह दस ही पाँच वर्षमें इतनी उन्नति कर लेगा कि अकेला भारत ही सारे संसारमें अटल शांति स्थापित कर सकता है, क्योंकि उसके पास असंख्य प्राकृतिक साधन विद्यमान हैं और आध्यात्मिक शक्तियोंका तो वह एकमात्र भाण्डार है जिनके बलपर वह इतनी सरलतासे जगत्‌में शान्तिका राज्य स्थापित कर सकता है जितनी सरलतासे भौतिक उन्नतिकी पराकाष्ठापर पहुंचे हुए पश्चिमके ईसाई राष्ट्र नहीं कर सकते।

यह सब होनेपर भी यदि भारतको अपना जन्मसिद्ध और न्यायसिद्ध अधिकार—स्वराज्य—प्राप्त करना है तो उसे एकमात्र परमुखापेक्षी ही न रह उसकी प्राप्तिके लिये स्वयं कमर कसकर उद्योग करना चाहिये। सारे संसारमें आज स्वतन्त्रताकी चर्चा है। अमेरिका और ब्रिटेनके रा-

जनीतिज्ञ मुक्तकण्ठसे जगत्की भावी स्वतन्त्रताके गीत गा रहे हैं। पर यदि भारत इतनेसे ही स्वराज्यप्राप्तिकी आशा कर चुपचाप बैठा रहेगा तो निश्चय है कि उसकी यह आशा सफल न होगी। जिस ब्रिटेनसे भारतको स्वराज्य लेना है वह उन ईसा मसीहका चेला है जिनका सिद्धान्त है कि "मांगोगे तो दिया जायगा और खटखटाओगे तो खोला जायगा।" पर दीनतापूर्वक मांगनेसे तो भिखमंगोंको सदा भीख भी नहीं मिला करती इसी लिये ब्रिटेनसे अपना अधिकार मांगनेके साथ ही भारतीयोंको न्यायकी लड़ाई लड़कर उसे लेनेके लिये कमर कस लेनी चाहिये क्योंकि परमात्मासे भी उन्हींको सहायता मिलती है जो अपनी सहायता आप कर सकते हैं। दिसम्बरके अन्तिम सप्ताहमें कांग्रेस होगी और उसके बाद ही जनवरीके आरम्भमें सन्धिसभा बैठेगी। कांग्रेसको यह बड़ा अच्छा अवसर हाथ लग गया है। उसमें एकत्र नेता भलीभांति विचार कर स्वराज्य प्राप्त करनेके उद्योगमें लग सकते हैं। यदि कांग्रेसके पहले कुछ प्रबन्ध हो सके तो और भी अच्छा है पर यदि न हो सके तो कांग्रेसमें तथा उसके बाद समस्त भारतमें स्वराज्यके लिये प्रबल आन्दोलन कर संसारको दिखा देना चाहिये कि भारतीय वास्तवमें ही स्वराज्य लेनेको उत्सुक हैं। साथ ही किसी उपायसे कुछ और नेताओंको इङ्गलैण्ड पहुंच ब्रिटिश जनता और विशेषकर मजूर दलकी सहानुभूति प्राप्त करनी चाहिये। समस्त भारतीय जनताको कमर कसकर स्वराज्यान्दोलनमें नेताओंका साथ देना चाहिये, क्योंकि स्वराज्यके लिये वैध आन्दोलन करना कोई अपराध नहीं और इसी लिये किसी प्रकारके भयका कोई कारण नहीं है।

भारतका संकट।

कामन सभामें मेजर न्यूमनके प्रश्नके उत्तरमें मि० मेकफर्सनने कहा कि "बाकूमें शान्ति है और साधारण तौरपर कारबार हो रहा है। तुर्क कमाण्डरने दाणिक् सन्धिकी शर्तके अनुसार ट्रांस-कास्पियनकी तुर्क सेनाको लौटनेकी आज्ञा दे दी है। क्रसनोडस्कके पूर्वकी रेल हमारे नियंत्रणमें है बोलशेविक मर्वके पूर्व लौट गये हैं। अवस्था हमारे अनुकूल है।" पाठकोंको स्मरण होगा कि बाकू बन्दर कास्पियन सागरके पश्चिमी तटपर है और ब्रिटिश सेनाके पहुंचनेपर भी उसपर तुर्कोंने पिछले दिनों अधिकार कर लिया था। बाकूसे कास्पियन समुद्र पार करनेके बाद उसके पूर्वी तटपर क्रसनोडस्क बन्दर है जहांसे काबुलको सीमाके निकट मर्व तक सीधी रेल गयी है जो पर्वसे हेराततक जाती है। इसी मार्गसे जर्मनोंके भारतपर आक्रमण करनेका भय पिछले दिनों हो रहा था। यद्यपि रूटरने समाचार नहीं दिया था, पर हमारा अनुमान था कि ईधर शत्रुकी सेनाएं अपने प्रयत्नमें लग रही हैं। इसीसे हमने आशंका थी कि जर्मनोंका इस जाड़ेमें भारतपर आक्रमण करनेका विचार है। मि० मेकफर्सनके उपर्युक्त उत्तरसे स्पष्ट है कि तुर्क सेना या तो कास्पियन पारकर या रूसकी राह ट्रांस-कास्पियन प्रदेशमें पहुंच भी गयी थी। कास्पियन

अदालती पहलवान।
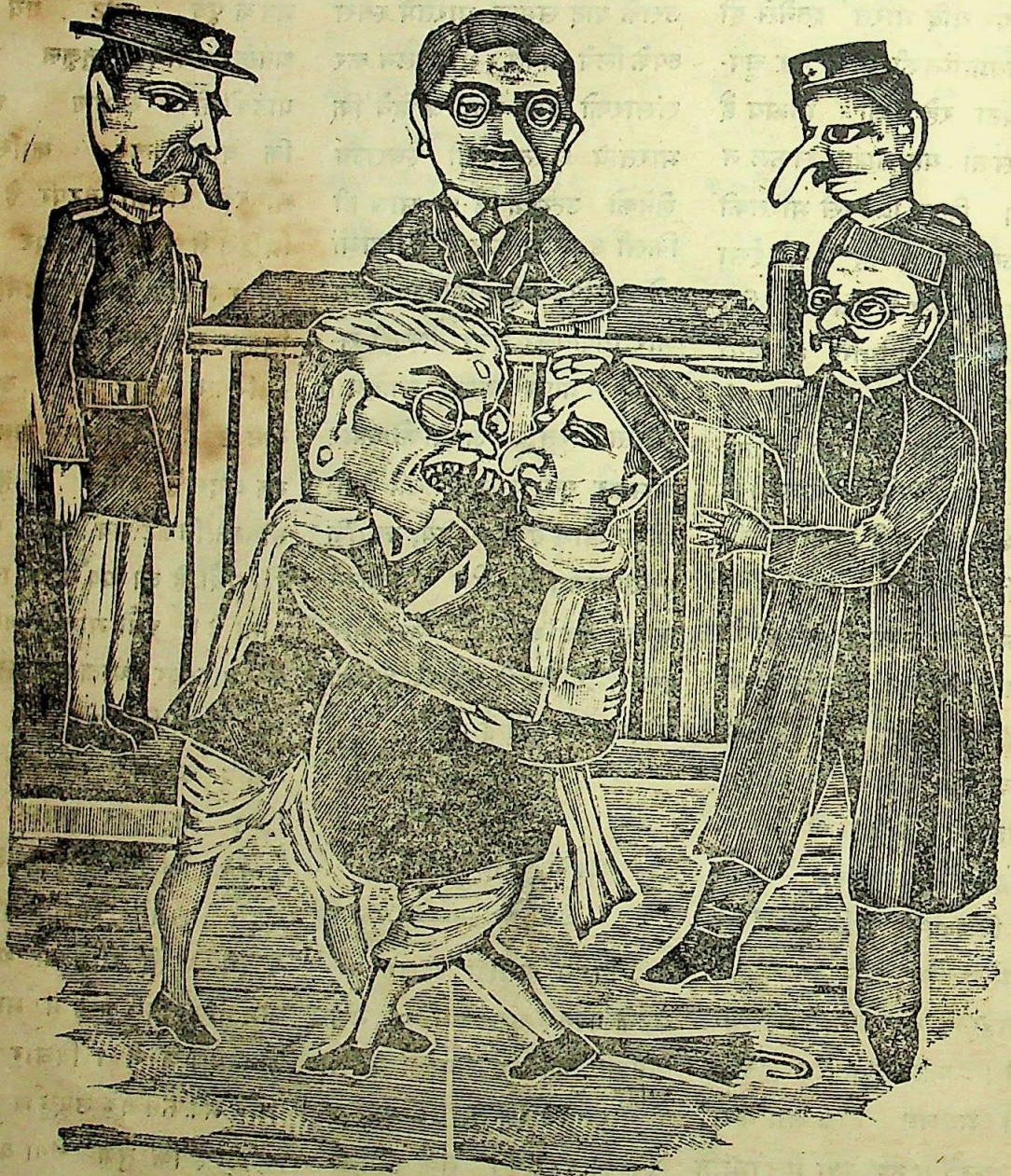
भाई भाईसे नाराज होकर अदालतोंमें मुकद्दमा चलाते हैं। गांठका पैसा खर्चकर दूसरोंकी खुशामद करते हैं। यह कलियुगी दृश्य है।

बस अब छोड़ दो।

जिस समय जर्मन अधिकारी सारे युरोपको अपने फन्देमें जकड़ रहे थे, शांतिदेवीने अपने आगमनसे संसारको प्रफुल्लित कर दिया।

के पूर्वका देश ट्रांस कास्पियन कहाता है। प्रदेशमें ही नहीं उक्त उत्तरसे यह भी स्पष्ट है कि रूसके बोलशेविक मर्वतक पहुंच गये थे जो काबुलकी सीमाके बहुत ही पास है। बोलशेविकोंके मर्वके पूर्व हटनेका समाचार है और मि० मैकफर्सनने कहा है कि क्रासनोडस्कके पूर्वकी रेल ब्रिटिशोंके नियंत्रणमें है, इससे तथा मित्र-सेनाओंसे हारनेके कारण शत्रु राष्ट्रोंको एक प्रकारसे आत्म-समर्पण करना पड़ा। इसी लिये भारतके बहुत निकट पहुंचकर भी शत्रु सेना उसपर संकट न डाल सकी। यद्यपि बोलशेविक भी मित्रराष्ट्रोंके दुश्मन हैं, पर उनमें ऐसी शक्ति नहीं जान पड़ती कि वे काबुलकी सीमाके निकट होनेपर भी विशेष कुछ कर सकें। इसीसे उन्हें भी मित्रराष्ट्रोंसे लड़ाई बन्द करनेका प्रस्ताव करना पड़ा है।

मनोहर वार्ता।

११ वीं नवम्बरको विश्वव्यापी महासमरका अन्त हो गया।

—०—

युरोपीय महासमरमें सभी लड़ाके राष्ट्रोंका कुल व्यय ६ सौ हजार करोड़ रूपया अन्दाजा जाता है।

—*—

दिल्ली कांग्रेसके सभापति माननीय मालवीयजी चुने गये हैं।

—*—

सर एस० पी० सिंह और बीकानेर नरेश सन्धि सभामें उपस्थित होनेके लिये भारतसे बुलाये गये हैं।

—*—

सन्धि सभा वर्सेलीजमें होगी।

जर्मनीके सम्राट् कैसर और उनके ज्येष्ठ पुत्र जर्मनीसे चले गये हैं वे हालेण्डमें बताये जाते हैं।

—*—

सारे संसारमें अभी २ करोड़ टन कागज खर्च होता है। हर दसवें साल २५ सैकड़ा मांग बढ़ती है।

—*—

समस्त संसारमें केवल इङ्गलेण्ड, इटाली, और जपानमें ही राजा रह गये हैं।

लो० तिलक विलायतमें सकुशल हैं।

—*—

हवड़ेमें एक ७० वर्षके सन्यासीने मुकदमा चलाया है। वह एक ६ वर्षकी लड़कीसे अपना विवाह हुआ बताता है।

———

इस वर्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन बम्बईमें होने वाला है।

—:*:—

दिल्ली कांग्रेस २८, २९ ३० वीं दिसम्बरको होगी।

—:*:—

कटारपुर जिला सहारनपुर में है। बकरीदके समय वहां हिन्दू मुसलमानों में दंगा हो गया था। हिन्दुओं पर भारत रक्षा कानूनका प्रयोग हुआ है।

—*—

बम्बई मद्रास के गवर्नरों के स्मारक बनानेका विरोध हो रहा है।

—*—

सन्धि सभामें भारतको भी स्वभाग्यनिर्णयका सिद्धान्त प्राप्त हो इसपर भारतके गण्यमान्य नेता पूरा जोर देंगे।

—*—

सन्धि ही जानेसे कपड़ा सस्ता हो गया है। इधर उसकी दर बेतरह चढ़ गयी थी।

—*—

नया सुभीता ।

जो हमारे दैनिक विश्वमित्रको असमर्थताके कारण नहीं पढ़ सकते वे एकबार कड़ा दिलकर दो रुपया भेज दें। एक साल तक बराबर पत्र पायेंगे। यदि वे चाहें तो १) ही भेजकर ६ महीने तक पत्रका आनन्द लूटें। साप्ताहिकमें दैनिककी सभी विशेषतायें रखनेका खास ध्यान रखा जाता है।

सेवा और मेवा ।

हिन्दी साहित्यके सेवी पत्रकी एजेन्सी लेकर २५) सैकड़ा घर बैठ कमा सकते हैं उन्हें डाक व्यय भी न देना होगा पहले ५) जमा करा ने होंगे। एजेण्टोंको यह बड़ा सुभीता है, कि उन्हें एक पैसे हीमें पत्र बेचनेको मिलता है। एक पैसा देकर भला कौन इस जमानेमें हर रोज पत्र न पढेगा एक शहर या कस्बेमें कमसे कम पचास प्रतियां आसानीसे बिक सकती हैं।

पुस्तक विभाग ।

हम दूसरेकी पुस्तकें विज्ञापन देकर बेचते हैं जिन्हें पुस्तकें बिकवानी हों हमसे लिखा पढ़ीकर सब बातें तय करलें हम उचित पारितोषिक देकर पुस्तकें प्रकाशित करते हैं।

आफिसका पता—मेनेजर विश्वमित्र कार्यालय,

बडा बाजार कलकत्ता।

तारका पता—'VISHWAMITR'

पंच रत्न देखिये

भारत शासन सुधार—यह भारतसम्बन्धी शासन और वर्तमान सुधार स्कीम जाननेके अद्वितीय पुस्तक है। मूल्य ॥)

स्वराज्यकी धूम—देशके नेता स्वराज्यके सम्बन्धमें क्या कहते हैं यदि यह जानना हो तो मनोहर पुस्तकका एक बार अवलोकन कीजिये। मूल्य ॥)

जर्मनीकी राज्य व्यवस्था—जर्मनीका शासन किस प्रकारका होता है यह इस महासमरके कारण जानना बहुत जरूरी हो गया है। हिन्दी संसारमें यह सर्वथा नयी पुस्तक है। मूल्य ॥)

तिलककी जीवनी—भारतके हृदयसम्राट् देशके परमपूज्य नेताका जीवनचरित्र पढ़नेसे मन प्रसन्न और आत्मा बलवान् होती है। ऐसा जीवन चरित्र अभीतक हिन्दी संसारने शायद न पाया होगा। मूल्य ॥)

ऐयर चरित्र—देशभक्त डा० ऐयरने वर्तमानकालमें जो निर्भीकता दिखायी वह इतिहासमें स्मरणीय रहेगी। आपका जीवन आदर्श है। यह पुस्तक बड़ी खोजके साथ लिखी गयी है। मूल्य ॥)

चार आनेमें उत्तम पुस्तिकायें—तिलकका भाषण ≈), सत्याग्रहकी धूम -) ऐयर पत्र -)

अभागिनी—उपन्यासोंमें सर्वोत्तम। मूल्य १)

मैनेजर—'विश्वमित्र कार्यालय।'

बड़ाबाजार कलकत्ता।

'बनर्जी प्रेस' १३ नारायण प्रसाद बाबू लेन कलकत्तामें श्री आशुतोषबनर्जी द्वारा मुद्रित।

Registered No. C.877

कामये दुःखतप्तानाम् प्राणिनामार्त्तिनाशनम् ॥

वर्ष १ संख्या ३

प्रकाशक—

विश्वमित्र कार्यालय

कलकत्ता

एक वर्षका मूल्य १)

एक प्रतिका मूल्य ≈)

॥ श्रीहरिः ॥

विश्वमित्र ।

॥ कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्ति नाशनम् ॥

खण्ड १ } पौष संवत् १९७५ दिसम्बर १९१८। { संख्या ३

हमारा कष्ट ।

कृषि प्रधान और शान्तिसेवी होनेपर भी भारत आज किन आर्थिक कष्टोंका सामना कर रहा है इसे विचारते ही कलेजा कांपने लगता हैं और परतन्त्रताको हजार बार धिक्कारना पड़ता है। देशमें भयङ्कर दुर्भिक्ष होनेपर भी यहांका अधिकारिवर्ग अपनी करुणाशून्य नीति त्यागनेको तयार नहीं है। विलायतका गल्ला और जावा आदि देशोंको खाद्य सामग्री भेजनेका अब भी साहस किया जाता हैं। यदि हमारे प्रभुओंको हमारी जरा भी चिन्ता होती, वे हमारे राष्ट्रीय स्वत्वोंके नहीं, कमसे कम शारीरिक सुखके रक्षक ही होते तो आज यह नौबत न आती। ऐसी अदूरदर्शितापूर्ण नीतिको काममें लाते हुए यदि अधिकारी शान्तिप्रिय भारतीयोंको भी उपद्रव मचाते देखें तो आश्चर्य हो क्या है। भूखा मनुष्य क्या नहीं कर बैठता। इतना कष्ट झेलनेपर भी यदि भारतीय राजभक्त बने हुए हैं तो यह शासकोंके कारण नहीं, बल्कि अपनी प्रकृतिके कारण ही ऐसे बन रहे हैं, परन्तु रस्सी उतनी ही तानी जानी चाहिये कि वह टूटे नहीं। इस समय सारे संसारको अन्न कष्टका सामना करना पड़ रहा है, परन्तु सम्पन्न देशोंमें यह कष्ट उतना विकराल रूप धारण नहीं कर सकता। साथ ही सुदूर बसे हुए अमेरिकाको युरोपकी चिन्ताहुई और हम समझते हैं यह स्पष्टरूपसे जना दिया गया है कि यदि चिन्ता न की जायेगी तो एक घोर महा प्रलयका सामना करना पड़ेगा! इङ्गलैण्ड अमेरिका आदि सम्पन्न देशोंमें जब इतनी आर्थिक चिन्ता हो रही तो बेचारे निस्सहाय भारतको अपनी दुख कहानी कहनेका क्यों न मौका दिया जाये। हम प्रश्न करते हैं कि विदेशीय सरकारों वृटिश सरकार या हमारी भारत सरकारने ही हमारा पेट भरनेका क्या उद्योग किया है। हमारे स्त्री बच्चोंके भूखे विलखते हुए भी क्या यह कहकर विदेशोंको अन्न नहीं जा रहा है कि वे बहुत दिनोंसे भारतका सहारा तकते रहे। अब भी उनकी मदद करनी होगी। इस रुखको भी भला कोई विवेकी मनुष्य प्रशं-

सा कर सकता है। सहारा पाने वाले देशोंने भारतसे हर साल करोड़ों रुपया खींचकर भी क्या एक फूटी कौड़ी हमारे लिये खर्च की है जब स्वार्थपरता यहांतक बढ़ी चढ़ी है तो हमारी सरकारको ऐसा रुख प्रकट करना बहुत ही अनुचित है यदि शासनकार्यमें हमारा कुछभी प्रभाव होता तो हम इस रुखको बदलवानेकी पूरी चेष्टा करते। जबतक लड़ाई जारी थी सरकारको यह कहनेका बहाना था कि इस समय उद्देश्यपूर्तिपर ही ध्यान रखो, परन्तु अब किस मुंहसे अन्नकी रफतनी की जारही है। देशवासियोंके हजार चिल्लानेपर भी जहाजी कम्पनियां और रेलवे कम्पनियां अपना पेट भरने में लगी हुई हैं, परन्तु सरकार उनका कान उमेंठना न जाने क्यों पसन्द नहीं करती। लड़ाईके पहले जो जहाजी भाड़ा था उसका साढे चार गुना अबतक बना हुआ है। इस वृद्धिको जारी रखनेका कारण क्या है क्या भारतमें कोयला नहीं मिलता या समुद्र बलवा करने लगा है जिसका सामना करनेके लिये कम्पनियोंको विशेष प्रबन्ध करना पड़ता है। प्रजाको सताकर अनुचित लाभ उठाना भी तो ठीक नहीं है। सरकार रातदिन भारतीय व्यापारियोंको कड़ाईकी धूम मचाया करती है, परन्तु इन नाहरोंका सामना करते हुए उसे भी भय होता है।

सरकारका ध्यान इस ओर कई बार आकर्षित किया गया है कि सिविल सप्लाईके डाइरेक्टरोंको परामर्श देनेके लिये कुछ भारतीय भी नियुक्त किये जायें, परन्तु सरकारने इन डाइरेक्टरोंको हीस्वेच्छाचार दिखानेके सभी अधिकार दे रखे हैं। लोकमतकी कहीं भी कदर नहीं की जाती। प्रजाके रुपयेसे अपना पेट भरनेवालोंको इतनी स्वतन्त्रता नहीं मिलनी चाहिये। रेलवे कम्पनियोंने मालकी चलानीका जैसा रद्दी प्रबन्ध कर रखा है उसका पता उन्हींको है जिनके शिरपर बीतती है। यदि प्रजाके अधिकारोंकी मांग की जाती है तो न जाने किस कोनेसे गोरे व्यापारी और उनके पिट्ठू प्रजाके सच्चे हितैषी कहानेवाले निकल पड़ते हैं, परन्तु प्रजाके कष्टोंमें सहायक बननेके लिये वे कभी तैयार नहीं देखे गये। सच पूछिये तो इन गोरे व्यापारियोंके कारण ही हम भूखों मरा करते हैं। अफसरोंके कानोंमें उलटी सीधी बातें डालकर ये अपनी जेबे गर्म किया करते हैं और रातदिन पसीना बहानेवाले हम लोग एक एक दानेके लिये तरसते हैं।

हमें तो लक्षणोंसे यह दिखायी पड़ता है कि अन्नकी यह भयंकर मंहगी अब भारतमें बहुत कालतक अपना डेरा जमाये रहेगी। हमारी महगीका प्रधान कारण सरकार की अधीनतामें रहना ही है। वर्षा चाहे कम हो या ज्यादा हमें खानेभरको काफी अन्न मिल सकता है, परन्तु सरकार किसी न किसी प्रकारके दबावसे हमारे सुख दुखकी अवहेलना की जाती है। हम इस गिरी हुई दशामें भी स्वावलम्बनसे काम ले सकते हैं, परन्तु सरकार हमें स्वावलम्बी बननेका भी तो अवसर नहीं देती। देशमें बड़ी ही भयंकर स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। यदि हम चुप बैठे रहेंगे। इस [illegible] के लिये पूरी तौरसे चिल्लाहट मचानी चाहिये। भूखे मरते हुए भी यदि हम सुखसेवी कहलावें तो इससे बढ़कर और क्या शोक हो सकता है। सरकारका कर्तव्य है, कि वह हमारी रक्षा करे। भारतीय

ग्रामोंकी ओर देखें जहां हमारे भाईबंधु आधा पेट भी नहीं भर सकते। वहां अन्नके लिये कुलीनोंकी कुल लाज और स्वाभिमानियोंका स्वाभिमान नष्ट हो रहा है। बड़े २ शहरोंकी बाहरी चमकदमकसे भारतको सुखी और सम्पन्न मान बैठना भारी मूर्खता होगी और परिणाम अच्छा न होगा।

भारी असन्तोष।

इस समय मुसलमानोंमें भारी असन्तोष पैदा हो गया है क्योंकि उन्हें भय है कि मित्रराष्ट्र सन्धिसभामें स्वभाग्यनिर्णयके बहाने संसारके एकमात्र स्वतंत्र मुसलमान साम्राज्य रूमके अङ्ग भङ्ग कर देंगे। दिल्लीमें मुसलिम लीगके अध्यक्षने इस भयके सम्बन्धमें अपने भाषणमें पूर्ण विचार किया था और मद्रासमें हालमें ही इसी प्रश्नपर विचार करनेको मुसलमानोंकी एक बड़ी भारी सभा हुई थी। सुना गया है कि अन्य नगरोंमें भी इस प्रश्नपर विचार करनेको शीघ्र ही मुसलमानोंकी विराट् सभाएं होनेवाली हैं। मुसलमानोंके भयका मुख्य कारण लार्ड राबर्ट सेसिलकी वह वक्तृता है जो उन्होंने पार्लमेण्टमें दी थी जिसमें कहा था कि "रूमने अधीन जातियोंपर शासन करनेमें बिल्कुल ही अयोग्यता दिखायी है। ब्रिटेनकी इसी धारणाके कारण बहुत दिनोंसे यह बात सुनी जाती है कि, रूमके जिन मेसोपटामिया, सीरिया, फिलस्तीन आदि भागोंपर ब्रिटिश सेनाका अधिकार हो गया है वे अब रूम सरकारको न लौटाये जायंगे, बल्कि उन्हें स्वभाग्यनिर्णयका अधिकार दे रूमसे स्वतन्त्र कर दिया जायगा और ब्रिटेनकी छत्रछायामें स्वराज्य करते हुए उन्हें फूलने फलनेका अवसर दिया जायगा। रूम साम्राज्यके अंगभंग करनेके लिये ब्रिटेन आदिने रूसके साथ बहुत पहले एक गुप्त सन्धि भी की थी जिसमें कुस्तुन्तुनियापर रूसका प्राधान्य होने देनेकी बात तय हुई थी और जो शायद अब रूसके दुश्मन होनेके कारण रद्द हो गयी है। इन बातोंसे रूमके भविष्यके सम्बन्धमें मुसलमानोंको चिन्ता और सन्देह होना कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं है, क्योंकि वे अपनी पवित्र पुस्तककी आज्ञाके अनुसार रूमके सुलतानको अपना खलीफा मानते हैं।

जिस समय रूम जर्मनीका पक्ष ले समरमें कूदा उस समय कमसे कम जर्मनीको पूरी आशा थी कि, भारतके मुसलमान अपने खलीफाका पक्ष ले भारतमें भारी उपद्रव खड़ा कर देंगे। परन्तु भारतीय मुसलमानोंसे जर्मनीकी आशा पूरी नहीं हुई और ये पूर्ण रूपसे राजभक्त बने रहे। यही नहीं भारतसे भेजे हुए हजारों मुसलमानोंने भारतरक्षाके लिये मेसोपोटामिया, फिलस्तीन आदिमें अपने ही सहधर्मी तुर्कोंसे युद्ध करनेमें भी आगापीछा न किया। एक निजामने ही रूमके विरुद्ध लड़नेवाले ब्रिटेनको १॥ करोड़ रुपये युद्धके लिये दिये। परन्तु मुसलमानोंने करोड़ों रुपये और लाखों आदमियोंकी सहायता इसीलिये दी थी क्योंकि वे समझते थे कि हमारे खलीफाने जर्मनीका पक्षले अनुचित किया है और ब्रिटिश सरकार छोटे राष्ट्रोंको स्वतंत्रताके लिये युद्ध कर उचित कर रही है। ब्रिटिश सरकारके सम्बन्धमें यही धारणा होनेके कारण मुसलमानोंमें उस समय भी

असन्तोष नहीं हुआ, जब मक्का मदीना, जरूसलम आदि तीर्थस्थान खलीफाके अधिकारसे छीन मक्काके शरीफके प्रबन्धमें कर दिये गये, क्योंकि उनकी धारणा थी कि युद्धकालतकके लिये ही ऐसा किया गया है और समर समाप्त होने. पर ये पवित्र स्थान फिर सुलतानको सौंप दिये जायगे। अब ऐसी आशंका हो रही है कि रूमको अधीन जातियों पर शासन करनेमें अयोग्य बता उक्त पवित्र स्थान सदाके लिये मक्के के शरीफके अधीन कर दिये जायंगे और सर आगाखां मेसोपोटामियाके शासक बनाये जायंगे। मुसलमान अपने पवित्र स्थानोंको उसी रूमके अधीन रखना चाहते हैं जिसके सुलतानको वे अपने पैगम्बर मुहम्मद साहबके बाद दूसरा नम्बर देते हैं और उसके अङ्ग भङ्ग होना नहीं देख सकते। हमें यह करनेमें कुछ सङ्कोच नहीं होता कि हमारे मुसलमान भाइयोंका असन्तुष्ट होना उचित और आवश्यक है।

हम पूछते हैं कि, यदि रूमने अपनी अधीन जातियोंके ऊपर ठीक शासन नहीं किया, तो किसी को क्या अधिकार है कि, वह उसके प्रदेशोंको स्वराज्य दे अपनी संरक्षकतामें करले? हम मुसलिम लीगके अध्यक्ष मान० मि० फजलुलहकके शब्दोंमें ही पूछना चाहते हैं कि "क्या इंगलैण्डने ही अपनी अधीन जातियोंपर शासन करनेकी कोई विशेष योग्यता दिखायी है?" हम पूछते हैं कि, कोई कैसे दावा कर सकता है कि, ब्रिटिश संरक्षणमें आ जानेसे मेसोपोटामिया, फिलस्तीन आदि तुर्की प्रदेश समृद्धवान हो जायेंगे जब कि उसके डेढ़ सौ वर्षके शासनमें रहनेपर भी एक भारतीयकी वार्षिक आयकी औसत ३०)से अधिक नहीं है और इतने अधिक प्राकृतिक साधन होते हुए भी आधेसे अधिक भारतवासियोंको आधा पेट खाकर ही समय विताना पड़ता और एक सुईतकके लिये उन्हें विदेशियोंका मुंह तकना पड़ता है? भारत इतने दिनोंसे इङ्गलैंडकी अधीनतामें है, पर इससे अधिक दरिद्र देश आज पृथ्वीपर शायद एक भी नहीं है। ब्रिटिश शासनके पहले जहां शायदही कभी भारतमें अकालका नाम सुननेमें आता था वहां अब प्रतिवर्ष वह मुंह बाये खड़ा रहता है और हजारों लाखो दीन भारतीयोंको हड़प जाता है। १९०१की १६वीं अगस्तको उस समयके भारतसचिव लार्ड जार्ज हैमिलटनने पार्लमेण्टमें भारतकी आय व्ययका वार्षिक चिट्ठा पेश करते हुए कहा था कि, "इङ्गलैण्ड तथा भारतमें कुछ लोग सदा कहा करते हैं कि, हमारे शासनमें भारतका इतना खून खिंचत है कि वह मरनेहीको है मैं स्वीकार करता हूं कि यदि यह दिखाया जा सके कि, हमारे शासनमें भारतकी समृद्धिका कुछ भी क्षय हुआ है तो हम निन्दाके पात्र हैं और उस देशके शासनका भार और अधिक समयतक हमारे हाथमें न रहना चाहिये।" भारत पहलेकी तरह समृद्धिवान देश नहीं रहा है, इसका उत्तर प्रायः हर वर्ष पड़नेवाले अकाल और रुपयेमें चार सेरका आटा और नौ दस छटांकका घी दे रहा है। अकबरके समयके भारतकी बात तो देखिये जब १२॥ पैसे मन गेहूं और कोई ढाई रुपये मन घी बिकता था, जरा ६० वर्षके बूढ़ोंके पास जाइये तो उनसे पता चलेगा कि, उनके लड़कपनमें भी रुपयेमें मन भर गेहू और दो तीन सेर घी बिकता था। जब भारतके प्राकृतिक साधन पूर्ववत् बने हुए हैं तब क्या

कारण है कि, दिनपर दिन यहां अकाल, महामारी, महंगी और दरिद्रता बढ़ती जाती हैं ? इसका उत्तर इसके सिवा कुछ भी नहीं हो सकता कि, इङ्गलैण्डकी आर्थिकनीतिके कारण भारतके उद्योग धंधे दिन दिन नष्ट होते गये, हरसाल करोड़ों पोंड विदेशी यहांसे ढोते गये और यहांका वाणिज्य व्यवसाय मिट्टीमें मिल गया। भारतमें इङ्गलैण्डके शासनके लिये इससे अधिक कलंककी बात और क्या हो सकती है कि उसके डेढ़ सौ वर्षके शासनमें रहकर भी भारतीय जनताके समान अशिक्षित जनता संसारमें शायद और कहींकी न होगी। हमारे मुसलमान भाई चाहते हैं कि, रूमकें मेसोपोटामिया, फिलस्तीन आदि प्रदेशोंको संसारके साथ स्वभाग्यनिर्णयका अधिकार अवश्य दिया जाय, पर वे स्वराज्य पानेपर किसी अन्य विदेशी राज्यकी संरक्षकतामें नकर रूम साम्राज्यके ही अङ्ग रखे जायं। न्यायसे देखा जाय तो ब्रिटेन तो उन्हें स्वभाग्यनिर्णयका अधिकार दिलानेका भी दावा नहीं कर सकता, क्योंकि उसने स्वयं ही अपने अधीन देश आयलैंण्ड और भारतको यह अधिकार नहीं दिया है यद्यपि उक्त देशोंके निवासी स्पष्टशब्दोंमें उसकी याचना कर चुके हैं। पर यदि वह उन्हें उक्त अधिकार दिला उनपर अपनी छत्रछाया रखनेका प्रयत्न करेगा तो संसार उससे यह परिणाम निकाले बिना न रहेगा कि दूसरोंकी भूमि हड़पनेके लिये वह युद्धमें कूदा था निर्बल राष्ट्रोंकी स्वतन्त्रताके लिये नहीं। इस कलंकसे बचनेके लिये उसका कर्त्तव्य है कि वह मुसलमानोंकी सम्मतिकी उपेक्षा न करे नहीं तो सदाके लिये उनमें भारी असन्तोष बना रह जायगा जिसका फल अन्तमें किसीके लिये भी अच्छा न होगा।

विविध विचार ।

सीनफोनरोंका कार्य—

आयलैंण्डके सीनफीनरोंने अब अपने दलका नाम सीनफीन की जगह आयरिश प्रजातन्त्री दल रखा है। उन्होंने २१वींको डबलिनमें कंस्टीट्यु एण्ट असेम्बुली या निर्वाचक सभा करनेकी घोषणा कर दी थी। इसका अर्थ यह होता है कि जैसे उन्होंने कुछ दिन पहले ब्रिटिश कानून न मानने और अपनी स्वतन्त्र पार्लमेंट बनानेकी बात कही थी उसके अनुसार वे अब कार्य करते रहे हैं। उनके इस कार्यसे सिद्ध होता है कि वे खुलमखुल्ला बगावत करनेको तैयार हैं। वहां प्रजातन्त्रकी घोषणा कर दी गयी यह तो स्पष्ट ही है कि उन्होंने अपनी घोषणाके अनुसार कार्य करना चाहा होगा तो ब्रिटिश अधिकारियोंने जबर्दस्तीसे रोका होगा और यदि उन्होंने अधिकारियोंसे भय न खाया होगा तो खासी मुठभेड़ हो गयी होगी। जो हो, यदि ब्रिटिश अधिकारियोंने अदूरदर्शिता न दिखायी होती और आयलैंण्डको स्वराज्य दे दिया होता तो आज वहां यह उपद्रव ही न खड़ा होता। आश्चर्य तो यह है कि वही भूल भारतवर्षके सम्बन्धमें की जारही है।

नेताओंका कर्त्तव्य—

रालट कमेटीके आधारपर जो बिल बनाये गये हैं वे अगले महीनेमें कौंसिलमें पेश होंगे। इस समय जो भारतीय नेता और प्रतिनिधि बड़ी कौंसिलमें हैं उन

का कर्त्तव्य है कि वे उन बिलोंका वहां जनताकी ओरसे घोर विरोध करें। भले हो जनताके विरोध-की परवा न कर वे पास कर लिये जायं, पर हमारे प्रतिनिधि योंको एक मत हो उनके विपक्षमें राय देनी चाहिये। इस समय माडरेट नेताओंका कर्त्तव्य है कि वे बिलोंका विरोध करनेमें अपने राष्ट्रीय दलके भाइयोंका साथ दें। यदि वे ऐसा न कर कहीं बिलोंके पक्षमें राय देंगे या मौन धारण कर लेंगे तो देशका भारी अहित तो करेंहीगे साथ ही अपने माथे सदाके लिये कलङ्कका टीका लगावेंगे। जनताको भी चाहिये कि वह अपने इन प्रतिनिधियोंसे स्पष्ट शब्दोंमें कह दे कि बिलोंका पक्ष कदापि न लेना नहीं तो तुम हमारे प्रतिनिधि और प्रेमभाजन न रह सकोगे।

अब क्या कहते हो—

पाठकोंको स्मरण होगा कि दिल्ली कांग्रेसने एक प्रस्ताव पास करके ब्रिटिश कांग्रेस कमेटीको पहलेसे कम सहायता देनेका निश्चय किया था। इससे मिसेज बेसेण्ट और उनके कई साथियों तथा माडरेटोंको बुरा मालूम हुआ था क्योंकि उनका कहना है कि सहायतामें कमी करना कांग्रेसके नियम भङ्ग करनेके समान है। उक्त प्रस्तावके लिये वे लो॰ तिलकके दलको अदूरदर्शी बतला रहे हैं। अब उन्हें जरा इङ्गलैण्डसे लौटे हुए 'हिन्दू' सम्पादक मि॰ कस्तूरी रङ्ग आयङ्गर के कथनपर ध्यान दे ब्रिटिश कांग्रेस कमेटीकी वास्तविक अवस्था जान लेनी चाहिये। मि॰ आयङ्गर कहते हैं कि जब भारतीय सम्पादकोंका डेपुटेशन रणक्षेत्रोंकी दशा देखनेको यहाँसे भेजा गया था तब इङ्गलैण्डमें कई संस्थाओं ने उसके स्वागतमें सभाएं कीं, पर उक्त कांग्रेस कमेटीने कहनेपर भी किसी सभाकी व्यवस्था नहीं की! यही नहीं, कमेटी इधर कुछ भी कार्य नहीं कर रही है यद्यपि सिडेनहम एण्ड कोने सुधारोंका विरोध करनेमें कुछ उठा नहीं रखा हैं। पार्लमेण्टके चुनावके समय भी उक्त कमेटीने कुछ नहीं किया। अन्तमें मि॰ आयङ्गर कहते हैं कि ब्रिटिश कांग्रेस कमेटीको नया स्वरूप देनेके लिये दिल्ली कांग्रेसने जो प्रस्ताव पास किये हैं, वर्तमान अवस्थामें आवश्यक जान पड़ते हैं। अब मिसेज बेसेण्ट बोलें कि एक आवश्यक कार्यका प्रस्ताव पास करा तिलक पार्टीने कौनसा अनुचित कार्य किया! पर शायद वे अब यह कहने लगें कि मि॰ आयङ्गर भी तिलक पार्टीके ही हैं। यदि नहीं तो मिसेज बेसेण्ट तथा उनके साथियोंको मि॰ आयङ्गरकी उक्त बातें पढ़ इस सम्बन्धमें अपने किये हुए आक्षेपोंके लिये राष्ट्रीय दलसे क्षमा मांगनी चाहिये।

मजूरदल और भारत.

मि॰ बैपटिस्टा लण्डनके मजूर बली पत्र 'हेरल्ड'में बराबर लेख दिया करते हैं। उन्होंने उसमें 'संधिसभामें भारत' शीर्षक एक लेख छपा सन्धिसभामें भारतीय जनताके प्रतिनिधि लेनेकी आवश्यकता पर जोर दिया है। उन्होंने मजूर दलसे निवेदन किया है कि अन्तराष्ट्रीय मजूरदली कानफरेंस में अपने साथ भारतीय प्रतिनिधि भी ले चलें। 'हेरल्ड' ने यह स्वीकार किया और कहा है कि, कानफरेन्सके लिये कांग्रेस और लीगसे दो तीन प्रतिनिधि चुनने को कहा जाय।

भगोड़ पल्टन ।
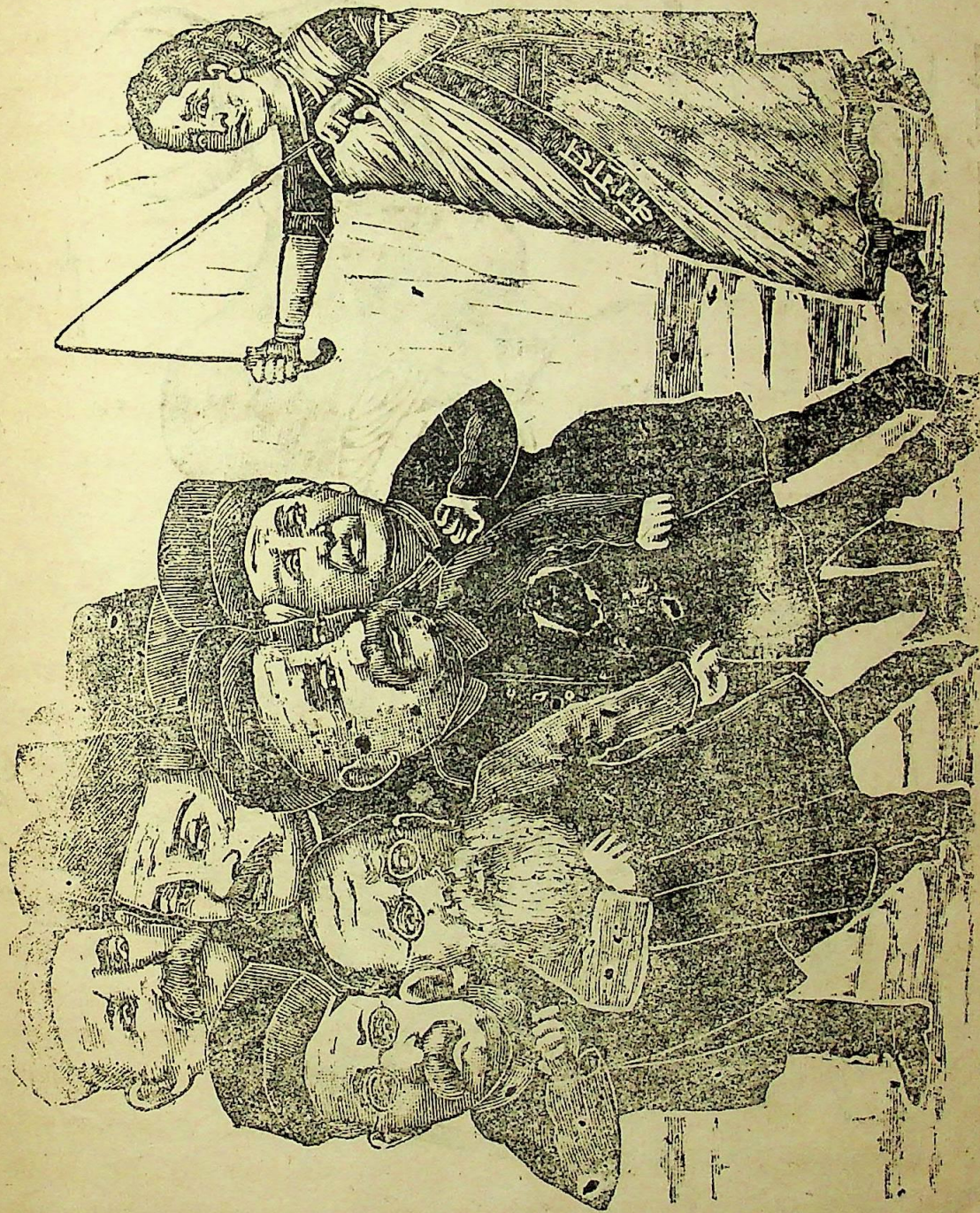
दिल्ली कांग्रेस—हठी सभी तुम कुपुत्र बने हो । छोंड़ मोहि अब पतित बने हो ।
सुरेन्द्र कम्पनी—भागो भागो जान बचाओ । कभी किसीकी सुनो न सुनाओ । देशभक्तिमें धरा क्या है । हठमें सबकुछ मजा भरा है ।

पिता यही जा कन्या दुहवे ।

पापी दुहवे कन्या गाय जाति सहे सब अबला हाय। रे रे कामी पापी बुड्ढे जरूर पड़ेगा अधरम गड्ढे।
पिता पति सब कोसे जायं तयभी राक्षस करें अन्याय। कलियुग शिरपर नाचा आय पंचो सुनलो कान लगाय।
अब भी चीन्हो धर्म सनातन पकड़ो अपनी चाल पुरातन। सब मिल पाप देहु बिनशाय कन्या तन नहिं बेचा जाय ॥

भारतके पास युद्ध।

जिस समय जर्मनीकी सेना फ्रांसमें मित्रसेनाओंसे हारकर पीछे हट रही थी उस समय कितने ही लोगोंका अनुमान था कि, भारतपर आक्रमण करनेके लिये जर्मनोंने अपनी बहुत बड़ी फौज पूर्वकी ओर भेज दी हैं, इसीसे उन्हें पश्चिममें इस तरह हारना पड़ रहा हैं। यद्यपि उस समय रूटरने काबुल या अफगानिस्तानकी सीमाके पास शत्रुसेनाके पहुंचनेका समाचार नहीं दिया था, पर ब्रिटिश राजनीतिज्ञ पूर्वी संकटकी बात कह जिस प्रकार भयसे कांप रहे थे और दक्षिणी रूस तथा काकेशसमें जिस प्रकार जर्मन जीत रहेथेउससे हमने उसी समय अनुमान कर लिया था कि, शत्रुसेना काबुलकी सीमासे बहुत दूर नहीं है और अक्टूबर महीनेके दूसरे तीसरे सप्ताह तक वह भारतके अत्यन्त निकट पहुंच जायगी। इस विषयमें हमने महीनों पहले कई लेख लिखे थे। क्षणिक सन्धि हो जानेके दो ही चार दिनके बाद एक समाचार आया जिसमें स्पष्ट शब्दोंमें बताया गया था कि, शत्रुसेनाको मित्रसेनासे हार मवके पूर्वकी ओर हट जाना पड़ा है। इससे महीनों पहले प्रकट किये हुए हमारे अनुमानकी पुष्टि हो गयी और हम समझते हैं कि यदि महीने ही पन्द्रह दिन और अमेरिकन सेनाके पहुंचनेमें देर हो जाती तथा फ्रांसके रणक्षेत्रमें बर्फ पड़ जानेसे लड़ाई रुक जाती तो फिर कदाचित् जर्मनीकी हार असम्भव हो जाती और अबतक भारतमें कैसे कैसे सङ्कट उपस्थित होते, इसका अनुमान भी नहीं किया जा सकता। जो हो, उस समय मित्रराष्ट्रों और जर्मनीके सामने जीवनमरणका प्रश्न उपस्थित था। मित्रराष्ट्रोंने शीघ्र ही जर्मनीसे अधिक तैयारी कर ली जिसके कारण उनकी जीत और जर्मनीकी हार हो गयी। इसीसे भारतके निकट पहुंचनेपर भी शत्रुसेना भारतपर संकट न उपस्थित कर सकी।

अब शीघ्र ही भारतपर जर्मनी संकट नहीं उपस्थित कर सकता, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है, क्योंकि इस समय मियांकी अपनी ही दाढ़ीकी आग बुझानेमें अनेक कठिनाइयां उपस्थित हो रही हैं। पर हमारा अनुमान है कि, यदि सन्धिसभा ऐसे नियम बनानेमें समर्थ न हुई जो संसारके सभी राष्ट्रोंके लिये एक समान मान्य हों तो बहुत शीघ्र ही फिर दूसरा महासमर छिड़ेगा और आश्चर्य नहीं कि उस समय भारतके बहुत निकट ही सबसे पहले घमासान मचे। ब्रिटिश पार्लमेण्टके नये निर्वाचनमें जिस प्रकार मजूर दलवालों और स्वतंत्र विचारवालोंकी हार होनेसे एक प्रकारसे अनुदारोंका प्राधान्य हुआ हैं उससे यह तो निश्चय ही है कि, सन्धिसभामें उस भारतीय जनताका एक भी प्रतिनिधि लिये जानेकी व्यवस्था न होगी जो कुल संसारकी जन संख्याका पञ्चमांश है। इसके सिवा आधी दुनियांमें फैले हुए रूसके प्रतिनिधित्वकी भी व्यवस्था अभीतक नहीं की गयी है। अवश्य ही रूसकी बोलशेविक सरकारके प्रतिनिधि बुलानेका प्रस्ताव ब्रिटेनने दिसम्बरमें अन्य मित्रराष्ट्रोंसे किया था, पर फ्रांसके विरोध करनेपर वह प्रस्ताव खटाईमें पड़ गया है और जान पड़ता है कि, जिस संसारमें

स्थायी शान्ति बनाये रखनेके लिये मित्रराष्ट्रोंके राजनीतिज्ञ सन्धिकी शर्तें तैयार करेंगे, उसमें वे इतने विशाल रूस साम्राज्य और भारत वर्षकी गिनती न करेंगे। इससे यह तो निश्चय ही है कि, उन्हें अपने उद्देश्यमें सफलता न होगी और रूसको दुश्मन बनाये रखनेसे भारतपर संकट उपस्थित होनेकी उसी प्रकार निरन्तर सम्भावना बनी रहेगी जिस प्रकार अबसे कोई २५ वर्ष पहले रहती थी जब भारतपर रूसके आक्रमणके भयसे सेनाके खर्चमें ३ करोड़की वृद्धि की गयी थी और काबुलके अमीरको आठ लाखकी जगह सालाना १२ लाख रुपये दिये जाने लगे थे। रूसको शत्रु बनाये रखनेमें कमसे कम ब्रिटेनका बड़ा अहित हो सकता है, क्योंकि उसकी सीमा भारतसे एक प्रकारसे मिली हुई है और रूस और नहीं तो कमसे कम सदा एक न एक उपद्रव खड़ा किये रह सकता है।

भविष्यकी बात तो दूर रही इस समय भी रूसके अन्य स्थानोंके सिवा काकेशस औरट्रांस-कास्पियया प्रदेशोंमें लड़ाई हो रही है। ट्रांस-कास्पियया प्रदेश कास्पियन सागरके पूर्व काबुलकी सीमासे मिला हुआ है। इसी प्रदेशसे होकर जर्मनोंके भारतकी ओर बढ़नेकी सम्भावना की जाती थी। इधर पता नहीं चलता कि, मर्वसे जो शत्रु सेना पूर्वकी ओर हटी थी वह इस समय कहां है और मर्वके पास कहांतक ब्रिटिश सेनाका अधिकार है। अब उक्त प्रदेशोंमें जो लड़ाइयां हो रही हैं वे बोलशेविकोंसे ही होती हैं, पर जिस प्रकार बोलशेविक ब्रिटिश सरकारके दुश्मन हो रहे हैं उसे आश्चर्य नहीं यदि निकट भविष्यमें ही वे भारतमें उपद्रव खड़ा करनेके लिये कोई भयंकर षड्यंत्र कर बैठें। पीट्रोग्राडमें जो सैनिक और असैनिक ब्रिटिश अफसर हैं वे सब मास्कोमें कैद कर रखे गये हैं जहां उन्हें भयंकर कष्ट सहने पड़ते हैं। बोलशेविकोंके एक नेता मो० रैडकने दिसम्बरके अन्तमें जर्मन स्पार्टेकस दलकी कांग्रेसमें यहांतक कहा था कि, राइन प्रान्तमें जर्मन ब्रिटिशोंसे लड़ें तो रूसी मजूर उनका साथ देनेको तैयार हैं। इस तरह जर्मनीमें भी बोलशेविकोंकी तरह पार्टेकसदल का जोर बढ़ रहा है और शीघ्र ही उसके पश्चिमकेकुल यूरोपीय देशोंमें उसके बढ़नेका भारी भय हो रहा है। यह केवल खेयाली पुलाव ही नहीं है। बोलशेविकोंके सिद्धान्तके शीघ्रतासे फैलनेके कारण रा० विलसनको भी कहना पड़ा है कि, "बोलशेविकोंके सिद्धान्तका दृढ़तापूर्वक विस्तार पश्चिमकी ओर हो रहा है जो सैन्यबलसे नहीं रोका जा सकता।" जर्मनीमें स्पार्टेकस दलकी ओरसे जब हजारों बोलशेविक लड़ रहे हैं और हजारों उनकी सहायताके लिये बर्लिनकी ओर बढ़ रहे हैं तब क्या आश्चर्य है कि, जर्मन बोलशेविकों अर्थात् स्पार्टेसिस्टोंके भी कुछ आदमी बोलशेविकोंसे मिलकर काकेशस और ट्रांसकास्पियया प्रदेशोंमें लड़ रहे हों।

रूसके बोलशेविकोंको मित्रराष्ट्रोंने बेतरह चिढ़ा दिया है। हम बराबरसे कहते आ रहे हैं कि, रूसमें मित्रराष्ट्रोंका सेना भेजना हानिकर होगा। कुछ रूसी अफसरोंके फेरमें पड़ मित्रराष्ट्रोंने पहले वहां सेना तो भेज दी, क्योंकि वे समझते थे कि, बोलशेविकोंका इस तरह अन्त कर सकेंगे, पर जान पड़ता है कि उन्हें अब अपनी भूल मालूम

हुई है इसीसे ब्रिटिश और जापानी सेनाका बहुत बड़ा भाग रूससे हटा लिया गया है। मालूम होता है कि, सन्धिसभामें रूसके प्रतिनिधित्वके सम्बन्धमें ओरसे अब मित्रराष्ट्रोंके राजनीतिज्ञोंकी आंखें खुल गयी हैं जिससे "उन्हें वहांकी स्थितिके सम्बन्धमें अत्यन्त चिन्ता और परेशानी हो रही है। इस सम्बन्धमें एक उच्च अधिकारी का कहना है कि, आधे यूरोप और आधे एशियाको गड़बड़ अवस्थामें छोड़ रखनेसे शान्ति स्थापित नहीं हो सकती, क्योंकि उससे सहज हीदूसरा युद्ध छिड़ सकता है।"उधर बोलशेविक संसारभरमें उपद्रव खड़ा करनेको तुले बैठे हैं इसी लिये विदेशोंमें प्रचारके काममें कोई ७॥ करोड़ रुपया खर्च करनेका प्रस्ताव रूसकी सोविट सरकारने पास किया है। मास्कोकी एक सभामें बोलशेविकोंकी सहायतासे रूसके चीनी मजूरोंने भारत और चीनमें भी गदर करानेके लिये दूत भेजनेका प्रस्ताव पास किया है। राजभक्त भारतमें जब जर्मनोंकी ही इच्छा पूरी नहीं हुई तो उनकी कहांतक हो सकती है, यहतो समय ही बतावेगा पर यदि भारतके पास युद्धकी सम्भावना दूर करनी है तो ब्रिटिश सरकारको अब भी बोलशेविकोंसे शत्रुता दूर करनेका प्रयत्न करनेमें विलम्ब न करना चाहिये।

भारत क्या चाहता है ?

तिलक स्वराज्यसंघके अध्यक्ष जोजफ बेपटिष्टाने विलायतके 'हेरल्ड' पत्रमें एक लेख छपाया है जिसका अनुवाद नीचे दिया जाता है :—

मेसर्स लायडजार्ज और बानरलाने अपनी नीतिकी घोषणामें भारतीय शासन सुधारोंके सम्बन्धमें १९१७की २०वीं अगस्तकी घोषणा स्वीकार की है। केम्ब्रिजकी अपनी वक्तृतामें मि० मांटेगूने कहा है कि भारतमें स्वराज्यकी स्थापनाके लिये अधिक अवसर दूंगा। वे भारतका भाव स्पष्टरूपसे नहीं समझते हैं। एकमात्र मजूरदलने ही साहसपूर्वक भारतके सम्बन्धमें भी स्वभाग्यनिर्णयका सिद्धान्त काममें लाने और वहां प्रजासत्तात्मक सरकार बनानेकी घोषणा की है। यही होना चाहिये और इसीसे भारतकी आकांक्षा पूरी हो सकती है। इङ्गलैंडमें धनिकों और श्रमजीवियोंमें झगड़ा खड़ा होनेवाला है। भारतमें अधिकारिवर्ग और जनता अर्थात् ऐङ्गलो-इण्डियनों और भारतीयोंके बीच झगड़ा है। भारतका अधिकारिवर्ग स्वभावसे ही अनियन्त्रित अधिकार रखना चाहता है और अपने हाथसे शक्तिभर कोई अधिकार निकलने नहीं देना चाहता। लार्ड सिडेनहमकी संस्थाके कार्योंसे यह भली भांति प्रकट है। भारतमें ब्रिटिश स्वार्थोंकी रक्षाके नामपर वह मानवजातिके पांचवें भागपर सदा अनियन्त्रित शासन बनाये रखनेके प्रयत्नमें हैं और इस तरह महाजनोंको प्रसन्न कर रही है जिनसे चन्दा मांगा गया है। कुछ सन्तोषकी बात है तो यह कि मि० मांटेगूने इन प्रयत्नोंकी निन्दा की है और कहा है कि "यह साम्राज्य बनानेके उपयुक्त कर्म नहीं है और भारी साम्राज्यकीय प्रश्नके हितके लिये इसकी उपेक्षा करनी उचित नहीं हैं।" मि० मांटेगूने कहा कि हमें भारतीय जनताके हितका ध्यान हैं और किसी व्यापारके हितके लिये शासनके हितकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। यह ठीक

और उचित हैं। पर प्रश्न तो यह उठता है कि, फिर अधिकारिवर्गके हितके लिये वैसा क्यों होने दिया जाता है? कहा जाता है कि उन्नति 'क्रम क्रमसे' होनी चाहिये। इससे भारतीय शासनमें जो सुधार किये जायं वे सबसे नीचेसे शुरू किये जायं। अनजान आदमियोंको धोखेमें डालनेके लिये ही यह कोरे शब्द कहे जाते हैं। क्रमबद्ध उन्नति ये शब्द बड़े चित्ताकर्षक हैं पर गुलामी प्रथा दूर करते समय ब्रिटिश पार्लमेण्टने इनसे काम नहीं लिया। हम क्रम क्रमसे गुलामी प्रथा दूर नहीं कर सकते। हम गुलामीकी जञ्जीर एक एक कड़ी करके नहीं दूर कर सकते। स्वतन्त्रता और गुलामीके बीच कोई स्थान नहीं है जिसपर क्रम क्रमसे पग बढ़ाया जाय। बन्धन कटनेके बाद उन्नति होगी। जबतक मनुष्य पहले बन्धनसे मुक्त न कर दिया जायं तबतक उन्नति असम्भव है। पहले स्वतन्त्रता तब उन्नति। उन्नति क्रम क्रमसे हो सकती है पर स्वतन्त्रता एक बार हीमें देनी चाहिये। भारतमें यही आवश्यक है कि भारत उन्नतिके लिये स्वतंत्र किया जाय। मुझे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है कि एक बार स्वतंत्र हो जानेसे भारत धीरे धीरे नहीं बल्कि एक ही छलांगमें सभी बातोंमें उन्नति कर लेगा। एक ही पीढ़ीमें भारतीय वह सब प्राप्त कर लेंगे जो जापानने किया है क्योंकि यह मानी हुई बात है कि भारतीयोंमें जापानियोंके समान ही योग्यता और बुद्धि है। अधिकारिवर्गकी स्वेच्छाचारिताके कारण भारत गिरी अवस्थामें है अयोग्यताके कारण नहीं। मांटेगू स्कीममें इस मुख्य बातकी बिलकुल ही उपेक्षा की गयी है। क्रमबद्ध उन्नतिको लक्ष्य मान उसमें निर्जीव और प्रगतिशून्य सुधारोंको उपयुक्त सिद्ध करनेका प्रयत्न किया गया है। पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसने इस तर्ककी पोल भली भांति खोल दी है। तुम किसी जातिको क्रम क्रमसे बन्धनमुक्त नही कर सकते। तुम प्रधान सरकारको उदार किये बिना स्थानिक और प्रादेशिक सरकारें उदार नहीं बना सकते। मुख्य सरकारमें सबसे पहले स्वतन्त्रताके भावका प्राधम होना चाहिये और मांटेगू स्कीममें यह बात नहीं है। कदाचित् भारतमें प्रजासत्ताकी स्थापनाके लिये मि० मांटेगू अधिकारिवर्गकी स्वीकृतिकी राह देख रहे हैं। यदि वे ऐसा करते हैं तो वे उस बालककी तरह आशावादी हैं जो नदीके किनारे इस लिये धैर्यपूर्वक खड़ा था कि पानी बहकर निकल जाय तो मैं नदी पार करूं। इतिहास नहीं बताता कि इस भोलेभाले लड़केको कितनी सफलता हुई। यदि अधिकारिवर्गकी इच्छाके विरुद्ध भारतमें सुधार न किया जाय तो किसी प्रकारका सुधार हो ही नहीं सकता। साधारणतः मालिक अपने गुलामोंको अपनी इच्छासे स्वतंत्र नहीं किया करते। वैसे ही अधिकारिवर्ग पार्लमेण्ट द्वारा लाचार हुए बिना भारतको बन्धनसे मुक्त न करेगा। यह करना मजूर दलका कर्त्तव्य है। ग्रेट ब्रिटेन और आयर्लैण्डकी जनताको याद रखना चाहिये कि भारतीय जनता पर इङ्गलैण्डकी जनता या वहांके निर्वाचकोंका शासन है। वे हीं उसके जिम्मेवार हैं। पर वर्त्तमान अवस्थामें मुट्ठीभर अधिकारी इङ्गलैण्डके निर्वाचकोंसे अधिकार और शक्ति अपने हाथमें ले भारत पर मुगलोंसे भी अधिक स्वेच्छाचारितापूर्ण शासन करते हैं। पर क्या यह मजूरदलके सिद्धान्तोंके

अनुकूल है? क्या यह संसारको प्रजासत्ताके लिये निष्कण्टक बनानेके महान सिद्धान्तके अनुकूल है? नयी पार्लमेण्टको इसी प्रश्नका उत्तर देना होगा? यदि निर्वाचक चुनावके समय न बोलेंगे तो वह सन्तोषजनक उत्तर न देगी। साधारण चुनावके समय ही इङ्गलैण्डके निर्वाचकोंकी बातका प्रभाव होता है। 'क्रम क्रमसे स्वतन्त्रताके विरुद्ध उन्हें स्पष्ट शब्दोंमें बोलना चाहिये। भारतको स्वतन्त्र करो फिर उन्नति अपने आप होगी। भारत अपने खजानेनर अधिकार और भारत सरकारमें स्विर्वाचित प्रतिनिधि सभा चाहता है। मांटेगू स्कीमको धोखेमें डालनेवाले प्रादेशिक सुधार नहीं। भारतीय जनता कहती है कि हम योग्य हैं। नार्टिंघमकी मजूरदली परिषद कहती है कि हम योग्य हैं। अकेला अधिकारि वर्ग ही क्यों कहता है कि भारतीय योग्य नहीं हैं? सच तो यह है कि शक्तिसे काम लेते लेते आज भी उसी तरह हृदय कठोर और अन्तःकरण दूषित हो जाता है जिस प्रकार हीरोदके समय होता था। भारत आशा करता है कि ब्रिटिश मजूर दल इस समयके हीरोदको स्वाधीनता, समानता और न्यायका पाठ पढ़ायेगा।

जर्मनीकी अवस्था।

यह जाननेको सभी उत्सुक हैं कि, इस समय जर्मनीकी कैसी अवस्था है और वहांपर किसका शासन है। सच पूछिये तो वहांकी ठीक ठीक अवस्था जर्मनीसे बाहरके किसी आदमीको नहीं मालूम है। समरारम्भसे ही अधिकारियोंने अपने यहांकी ठीक अवस्थाका ज्ञान विदेशियोंको कभी नहीं होने दिया। उसी प्रकार वे अब भी जर्मनीसे ऊटपटाङ्ग खबरें ही बाहर जाने देते। स्वयं विलायतवालोंको भी जर्मनीकी भीतरी अवस्थाका इसके सिवा और कोई ज्ञान नहीं है कि, वहां चारों ओर अराजकता फैली हुई है। फिर सात समुद्र पार बैठे हुए हम भारतवासियोंको वहांकी अवस्थाका ज्ञान कैसे हो सकता है जबकि सेंसर तारोंको बेतरह काटछांटकर भेजता हैं। इसलिये जर्मनीकी अवस्था जाननेका एकमात्र साधन हमारे पास यह है कि, हम वहांके सम्बन्धके प्राप्त होनेवाले सच झूठ समाचारोंके आधारपर अपनी अटकल लगावें। अटकलसे तो हमें यही जान पड़ता है कि, जर्मनीको किसी न किसी कारण से हार मान मित्रराष्ट्रोंसे क्षणिक सन्धि करनी पड़ी है और कैसर सकुटुम्ब जर्मनी छोड़ हालैण्ड जा बसे हैं। लड़ाई बन्द होते ही समाचार आये कि, जर्मनीका प्रायः प्रत्येक राज्य प्रजातन्त्र हो गया है और अब जर्मनी स्वेच्छाचारी नहीं बल्कि प्रजासत्तात्मक राज्य हो गया है। हर एबर्ट शीडमन, लैन्सबर्ग आदि कई पुरुषोंका प्रजासत्तात्मक राज्य बननेका उस समय समाचार आया था। पीछे स्थान स्थानमें क्रांति होने तथा रूसके बोलशेविकोंकी तरह स्पार्टकस दलका जोर बढ़ने तथा उक्त प्रमुख व्यक्तियोंको शासन छिन जानेकी खबरें आयीं तबसे बराबर उपद्रव और खूनखराबीकी खबरें प्रायः नित्यप्रति आती रही है और ऐसा जान पड़ता है कि देशके एक सिरेसे दूसरे सिरेतक अराजकता छा रही है। कभी तो वहां स्पार्टकस दलके जोर पकड़ने और कभी नष्ट होनेकी खबरें आतीहैं।

जर्मनीमें भी कुछ लोग ऐसे थे जो लड़ाईसे ऊब गये थे इसलिये वहां भी स्पार्टकस दल या

सिपाहियों और मजूरोंके दलके खड़े होनेमें सन्देह नहीं है। परन्तु अन्तिम समाचारोंसे स्पष्ट है कि आज भी हर एबर्ट, शीडमन इत्यादि राज्यके कर्ताधर्ता बने हुए हैं और जिस प्रकार हर एर्जबर्जरने आरम्भमें क्षणिक् सन्धिपत्रपर जर्मनीके प्रतिनिधिकी हैसियतसे दस्तखत किये थे वैसे ही १६ वीं जनवरीको उन्होंने क्षणिक् सन्धिकी दूसरी बार मियाद बढ़ानेके सम्बन्धमें हस्ताक्षर किये हैं। इससे स्पष्ट है कि जर्मनीमें भयंकर मारकाट मचनेकी जो खबरें आती हैं वे सभी ठीक नहीं हैं। जान पड़ता है कि लड़ाईसे ऊबे हुए कुछ सैनिकोंने मजूरोंसे मिल बोलशेविकोंकी तरह स्पार्टकस नामक दल तैयार कर लिया है, पर उस दिन स्वयं मि० लायड-जार्जने ब्रिटिश सैनिकोंसे कहा था कि, "जर्मन सेना अभीतक भङ्ग नहीं की गयी है।" यह तो नहीं कहा जा सकता कि; कितनी जर्मन सेना बिगड़ गयी है और कितनी बनी हुई है, पर रूटरको पता लगा है कि, पश्चिमी युद्धक्षेत्रपर ही ५ लाखसे अधिक जर्मन सैनिक अब भी शस्त्रास्त्रसे सुसज्जित हैं। जर्मन सेनाके अध्यक्ष आज भी वही जेनरल हिण्डेनवर्ग बने हैं जिन्होंने इस महासमरमें बड़ी बड़ी लड़ाइयां जीतीं थीं। इसके सिवा साइबेरियामें जो बोलशेविक सेना लड़ रही है उसके अफसर भी जर्मन हैं। इन बातोंसे स्पष्ट है कि यदि जर्मन इस समय मित्रसेनाओंसे लड़ते नहीं हैं तो इसका कारण यह नहीं है कि, उनके पास सेना नहीं रही है, बल्कि इसलिये कि वे अपनेको मित्रराष्ट्रोंसे कमजोर समझते हैं और किसी अनुकूल समयकी राह देख रहे हैं। उनका अभिमान अभी दूर नहीं हुआ है और नये परराष्ट्र सचिव मो० रैण्टजो कहते हैं कि, "जर्मनोंको अपने विरोधियोंके पेश किये हुए सन्धिके सभी प्रस्ताव चुपचाप न मान लेने चाहिये।"

जर्मनीके भूतपूर्व कैसर हालैण्डमें हैं। उनके सम्बन्धमें यह न भूलना चाहिये कि, वे संसारके लिये चाहे जैसे बुरे क्यों न रहे हों, पर जर्मन जनताके आराध्य देवता थे। जनताने उन्हें गद्दीसे नहीं उतारा बल्कि उन्होंने स्वयं ही गद्दी छोड़ी थी। कमसे कम जनताका एक बड़ा भाग उनके पक्षमें अब भी है, यह इसीसे सिद्ध है कि, कुछ दिन पहले उनके जानमालकी रक्षाके लिये बर्लिनमें जर्मन पुरुष और स्त्रियोंका एक सङ्घ खुला था। उनपर मामला चलानेको मित्रराष्ट्रोंने हालैण्डसे मांगा था, पर उसने उन्हें राजनीतिक भगोड़ा बतला देनेसे इनकार कर दिया था। पीछे मित्रराष्ट्रों और हालैण्डमें बड़ी लिखापढ़ी हुई और उसके कई दिन बाद समाचार आया कि, हालैण्ड और मित्रराष्ट्रोंमें इस विषयमें समझौता हो गया। समझौताका विवरण नहीं मालूम हुआ है, पर कैसर हालैण्डमें बने हुए हैं इससे स्पष्ट है कि, उन्हे हालैण्डमें रहने देनेकी बात मित्रराष्ट्रोंने मान ली है। क्षणिक् सन्धिकी शर्त्तोंके अनुसार जितना सामान जर्मनीसे मांगा गया था उसका बहुत ही कम भाग उसने अभीतक दिया है यद्यपि एक महीने पहले ही सब सामान उसे दे देना चाहिये था जर्मनीने शर्त्तें नहीं पूरी की हैं यह इसीसे सिद्ध है कि, उससे १५०००० किरानिया और ५००० इंजन मांगे गये थे, पर उसने अभी तक १३०००० किराचियां और ४७०० इंजन नहीं दिये हैं

जर्मन अफसरोंकी अधीनतामें बोलशेविक साइबेरियामें अबभी लड़ रहें हैं। इस तरह जर्मनीके शर्तोंके विरुद्ध कम करने पर भी मित्रराष्ट्रोंने फिर लड़ाई क्यों नहीं छेड़ी, इसका रहस्य कुछ भी समझमें नहीं आता। इसके और कारण जो भी हों, पर लक्षणोंसे जान पड़ता है कि एक यह भी कारण है कि ऐसी बातके लिये मित्रसेनाओंसे फिर हथियार लेनेका प्रस्ताव करनेका साहस राजनीतिज्ञोंको नहीं होता, क्यों कि ब्रिटिश सैनिकोंने सेनासे शीघ्र छुट्टी पानेके लिये पिछले दिनों कई सभाएं की हैं। जो हो, लक्षणोंसे ऐसा जान पड़ता है कि जि प्रकार जर्मनीने चुपचाप मित्रराष्ट्रोंकी सब शर्तें मान लेनेका निश्चय कर लिया है वैसेही मित्रराष्ट्रोंने भी उसके अपराध क्षमा करते रहनेका ही निश्चय कर लिया हैं। इस समय भी जर्मनीमें खूब गोताखोर तैयार हो रहे हैं, पर मित्रराष्ट्र इस लिये नहीं रोकते हैं क्योंकि वे समझते हैं कि तैयार होनेपर तो ये हमें ही मिलेंगे। पर इस प्रकारकी बातें हम व्यर्थ समझते हैं, क्यों कि जर्मन भी तो मित्रराष्ट्रोंको सौंपनेके लिये ही गोताखोर न तय्यार करेंगे। जी हो, हमारा पक्का विश्वास है कि, जर्मनीका जो कुछ स्वरूप बदला दिखता हैं वह एकमात्र इसी लिये है कि जिससे सन्धिकी शर्तें बहुत कड़ी न हों। साथही इस हारसे इंगलैण्डके प्रति जर्मनीके हृदयमें पहलेसे भी अधिक घृणा उतपन्न हो गयीजो अवसर पा कर इस महासमरसे भी अधिक भयंकर समरका कारण सिद्ध होगी। भगवान उससे संसारकी रक्षा करें।

स्वतन्त्रताके शत्रु।

जिस समय जर्मन सेना मित्रसेनाओंको हराती हुई पेरिसकी ओर बढ़ रही थी और मित्रराष्ट्रोंके सामने जीवनमरणका प्रश्न उपस्थित था उस समय ब्रिटिश राजनीतिज्ञ स्वतन्त्रता और स्वभाग्यनिर्णयके सिद्धान्तकी दुहाई देते हुए साम्राज्यको सङ्कटसे बचानेके लिये भारतीयोंसे सहायता मांग रहे थे और भारतीयोंने भी धनजनसे अपनी शक्तिभर पूरी सहायता दी। पर उस समय यह किसे पता था कि, होम करते हाथ जलेगा अर्थात् हमारी सहायतासे जर्मनीपर विजय प्राप्त करनेके बाद भी अधिकारी हमें उस अमृतफल स्वाधीनताके स्वादसे पूर्णरूपसे वञ्चित कर देंगे जिसके लिये हमने अपना सर्वस्व साम्राज्यको अर्पण कर दिया था? उस समय यह कौन जानता था कि स्वतन्त्रता और स्वभाग्यनिर्णय सिद्धान्तकी जो ब्रिटिश राजनीतिज्ञ गले फाड़ फाड़कर प्रशंसा कर रहे हैं वे अन्य देशोंके लिये भले ही स्वतन्त्रताके मित्र बने रहें, पर भारतके सम्बन्धमें वे स्वतन्त्रताके शत्रुकी तरह आचरण करेंगे। हद्द हो गयी निर्लज्जता और धृष्टताकी कि, जिस समय ब्रिटिश राजनीतिज्ञ फ्रांसमें अन्य देशोंके प्रतिनिधियोंके साथ संसारको प्रजासत्ताके लिये निष्कण्टक बनानेके प्रयत्नमें लग रहे हैं उसी समय भारतसचिवकी स्वीकृति लेकर भारतका अधिकारिवर्ग भारतके प्रजासत्तात्मक भावोंका मूलोच्छेद करनेवाले दमनकारी कानून बना रहा है। राउट कमेटीकी सिफारशें पाठकोंने कुछ समय पहले पढ़ ही ली हैं अब उन्हींके आधारपर भा-

रतसरकारने दो बिल तैयार किये हैं जिनके पास हो जानेपर किसी भी व्यक्तिकी स्वतन्त्रता बातकी बातमें छीनी जा सकती है। जब भारतसरकारने निश्चय ही कर लिया है तब उन बिलोंके पास होनेमें सन्देह ही क्या है।

एक बिल तो ताज़ीरात हिन्द और जाब्ता फौजदारीके कानून और भी अधिक कठोर बनानेके और दूसरा एक प्रकारसे भारत-रक्षा कानूनको स्थायी बनानेके लिये रचा गया है। बिल बड़े लम्बे चौड़े हैं इसलिये उन्हें प्रकाशित करनेमें हम असमर्थ हैं, पर उनका उद्देश्य यह है कि, राज्यके विरुद्ध षड्यन्त्र रोकने और षड्यन्त्रियोंको दण्ड देनेके सम्बन्धमें अधिकारियोंको विस्तृत और विशेष अधिकार दिये जायं। इन बिलोंके कानून बन जानेसे लोगोंको जो जो कष्ट झेलने पड़ेंगे उनका कुछ परिचय भारतरक्षा कानूनने भली भांति दे दिया है। हम दावेसे कह सकते हैं कि, इन नये कानूनोंसे वैयक्तिक स्वतन्त्रतापर सदा भारी आघात होगा। इसीसे हम इनके रचनेवालोंको स्वतन्त्रताके मित्र नहीं बल्कि, शत्रु समझते हैं। कारण यह कि, अपराधियोंको दण्ड देनेके लिये जो कानून हैं वे ही काफीसे ज्यादा हैं फिर नये नये कानूनोंकी रचना कर पुलिस और इण्डियन सिविल सर्विसवालोंको असाधारण अधिकार देनेसे लोगोंकी वैयक्तिक स्वतन्त्रता कैसे सुरक्षित रह सकती है? अपराधियोंको आप खुशीसे दण्ड दीजिये, इसके लिये कोई भी विचारशील भारतीय कुछ आपत्ति नहीं कर सकता। पर यदि आप अपराध सिद्ध किये और खुली अदालतमें मुकद्दमा चलाये बिना ही किसीकी स्वतन्त्रता छीनेंगे तो आप स्वतन्त्रताके मित्र कदापि नहीं कहे जा सकते।

क्या कोई अधिकारी इस प्रश्नका उत्तर दे सकता है कि, जब संसारभरके छोटे बड़े राष्ट्रोंको स्वतंत्रता और स्वभाग्यनिर्णय का अधिकार दिया जा रहा है तब भारतमें दमनकारी क़ानूनोंकी सृष्टि क्यों की जा रही है? अवश्य ही जो बिल प्रकाशित हुए हैं उनमें अन्य कानूनोंकी तरह अपराधियोंकी ही स्वतंत्रता छीनने और दंड देनेका विधान है। पर जिनके हाथमें इनके अनुसार कार्य करनेका भार छोड़ा जायगा वे तो वही लोग होंगे जिन्होंने प्रेस एक्ट और भारतरक्षा कानूनका ऐसा दुरुपयोग किया है कि जिसे देखते यह कहनेमें संकोच नहीं होता कि, उनकी नजरोंमें देशभक्त होना ही भयङ्कर राजद्रोह है। इसी लिये हमें भारत सरकारके इस कार्यका घोर प्रतिवाद करना पड़ता है और हम चाहते हैं कि, भारतवासीमात्र इन बिलोंका ऐसा तीव्र प्रतिवाद करें कि, ये सहज ही कानून न बन सकें और बनें भी तो संसार देख ले कि, भारतका अधिकारिवर्ग जनताके विचारोंकी कुछ परवा न कर किस स्वेच्छाचारितासे भारतका शासन करता है।

लक्षणोंसे जान पड़ता है कि, भारतमें स्वतन्त्रताकी जो लहर चल पड़ी है उसे रोकनेके लिये ही इन नये कानूनोंकी सृष्टि की जा रही है, पर हम दावेसे कह सकते हैं कि, स्वतन्त्रताके भाव कभी दबाये नहीं जा सकते और उनके दमनकी चेष्टा करनेवाले उलटे अपने ही मुंहमें कालिख लगायेंगे। हमें इन अधिकारियोंकी बुद्धिपर तरस आती है जो बैठेबिठाये अपनी मूर्खतासे भारतको दूसरा आयर्लैण्ड बना रहे हैं। भारत अभीतक साम्राज्यके भीतर रह स्वराज्य मांग रहा है। पर यदि भारतकी इतनी साधारण मांग भी पूरी न की गयी और इसी तरह स्वतन्त्रताके भाव दबानेके उद्देश्यसे अधिकारिवर्ग नये नये दमनकारी कानून बनाता रहा, तो कौन कह सकता है कि जनता अधिकारिवर्गके अत्याचारोंसे ऊबकर शीघ्र ही ब्रिटेनसे सम्बन्ध त्याग पूर्ण स्वतंत्र होनेके लिये ही इच्छा न करने लगेगी?

———

बूढ़े बाबा करें विवाह ।

जालीन है जाल बिछाया । बूढ़ेने सब धर्म्म गंवाया ।
कलियुगने अब रूप दिखाया । बुड्ढा भी बर बनकर आया ।
सुनलो पंचो कान लगाय । भस्मकरेगी कन्याहाय ।

जापानपर सन्देह।

जापान यद्यपि समरमें मित्र-राष्ट्रोंके पक्षमें था, पर कई कारणोंसे लोगोंको सन्देह होता था कि वह जर्मनीका पक्षपाती है। यह सन्देह खास इङ्गलैण्ड और अमेरिकाके भी बड़े बड़े आदमियोंके हृदयमें रहा है। किन कारणोंसे यह सन्देह पैदा हुआ है, इस सम्बन्धमें जापानकी इम्पीरियल यूनिवर्सिटीके प्रेसिडेंट बैरन यामागावाने गत १२ वीं अक्तूबरको मैट्रिक्युलेटेड विद्यार्थियोंके सामने एक बड़ा प्रभावशाली भाषण किया था। उसका सारांश नीचे दिया जाता है :—

बहुतसे अमेरिकनों और अङ्गरेजोंकी धारणा है कि, अधिक शिक्षित जापानी जर्मनीके पक्षपाती हैं। अङ्गरेजीके कई पत्रोंने यहांतक लिखा है कि, टोकियोके प्रोफेसर जर्मनीकी जीत चाहते हैं। यह असम्भव है कि जापानी जर्मनीसे अपने देशकी हार चाहें। तो भी, बहुतसे अमेरिकनों और अङ्गरेज़ोंको ऐसा संदेह है जो उन देशों और जापानके सम्बन्धोंको हानि पहुंचानेवाला है। इस प्रकारके सन्देहके अनेक कारण हैं। पहला यह है कि, समरारम्भमें जर्मनीकी तैयारीका भेद जाननेवाले कुछ लोग समझते थे कि इङ्गलैण्डके तैयार होनेके पहले ही जर्मन पेरिस ले लेंगे। आरम्भसे लेकर गत जुलाईतक मार्नकी पहली लड़ाईके सिवा जर्मन बराबर जीतते रहे। जर्मनोंकी जीतकी सम्भावना यद्यपि स्पष्ट थी और जान पड़ता था कि, जापान और इङ्गलैण्डकी सन्धिपर बना रहना जापानके लिये संकटजनक होगा। किन्तु जापान उसपर डटा रहा। जो जर्मनीकी जीत होनी निश्चित समझते थे उन्होंने भी कभी उक्त सन्धि तोड़ जर्मनीकी ओर मिलनेकी आवश्यकता नहीं प्रकट की। उन लोगोंको केवल जापानके भावी हितकी चिन्ता थी, पर अङ्गरेजों और अमेरिकनोंने उनकी ठीक अभिप्राय नहीं समझा।

सन्देह और भ्रान्तिका दूसरा कारण यह है कि, समरारम्भमें जर्मनोंने बेलजियम और फ्रांसमें जो अत्याचार किये उनकी जापानियोंने कड़ी निन्दा नहीं की। इसीसे उनपर जर्मनोंका पक्षपाती होनेका दोष लगाया जाता है। पर एक तो वे अत्याचार जापानसे हजारों मील दूरपर किये गये दूसरे जर्मनोंने उनके लिये जो बहाने बताये उनसे जापानियोंको कुछ कुछ सन्तोष हो गया। सबसे बड़ी बात तो यह है कि जापानी जनता अन्य देशोंकी जनतासे नाराज नहीं होती और न दुश्मनी करती है इसीसे उसके हृदयमें जर्मन सैनिकोंके अत्याचारोंके प्रति अङ्गरेजों और अमेरिकनोंकी तरह घृणाके भाव नहीं हैं।

तीसरा कारण सन्देहका यह हो सकता है कि, यद्यपि जर्मनोंमें कई दोष हैं और उन्होंने इस लड़ाईमें घृणित पाप किये हैं, पर जापानी समझते हैं कि हमें उनकी उस सभ्यतासे बहुत कुछ सीखना है जिसके कारण उन्होंने व्यापार, विज्ञान और उद्योगधन्धोंके सम्बन्धमें बड़े २ अनुसंधान किये हैं। मैं समझता हूं कि अमेरिकनों और अंग्रेजोंके भी यही विचार हैं, पर समरके कारण वे प्रकट नहीं करते और जापानी खुल्लमखुल्ला प्रकट कर देते हैं।

चौथा कारण यह है कि, अंग्रेजों और अमेरिकनोंकी समझमें यही नहीं आता कि हमने युनिवर्सिटीके जर्मन अध्यापकोंको

लड़ाईके समय बर्खास्त क्यों नहीं कर दिया। पर मेरी समझसे शत्रुके ऊपर इतना कोप करनेकी आवश्यकता नहीं है और जब जर्मन अध्यापक सचाईसे अपना कर्त्तव्य पालन कर रहे हैं तब वे क्यों बर्खास्त किये जायं। रूस जापानके युद्धके समय भी हमने कई स्कूलोंके रूसी मास्टरोंको बर्खास्त नहीं किया था।

जापानी अपने शत्रुसे घृणा नहीं करते, यह बात जापानके इतिहासकी अनेक घटनाओंसे सिद्ध है। हो सकता है कि कुछ अंग्रेजों और अमेरिकनोंको जर्मनोंके अत्याचारोंके कारण उनकी प्रतिष्ठा करनेकी आवश्यकता न जंचती हो और उनकी प्रतिष्ठा करनेके लिये वे जापानियको जर्मनोंका पक्षपाती समझते हों, पर ऐसा समझना जापानियोंके स्वभावसे अनभिज्ञता प्रकट करना है। इंगलैंड और अमेरिकामें कई संस्थाओंने जर्मनोंके नाम काट दिये और उन्हें दी हुई डिग्रियां लौटा लीं। जापानियोंपर इसका बड़ा प्रभाव पड़ा है, क्योंकि वे समझते हैं कि लड़ाई लड़ाई है और विद्या विद्या है। दोनोंको एक दूसरेसे घिस्ट पिस्ट करना ठीक नहीं।

एक और कारण है जिससे जापानियोंके जर्मनीके पक्षपाती होनेका सन्देह किया जाता है और वह यह है कि मिडिल स्कूलोंमें जर्मन भाषा पढ़ानेके लिये विशेष ध्यान दिया जाता है जो जर्मन कानून या जर्मन साहित्यके विद्यार्थियोंके लिये आवश्यक है। अन्तमें बैरन यामागावाने जापानियोंको उपदेश दिया है कि, सावधानीसे सम्मति प्रकट किया करो जिससे विदेशी सन्देह न करें। असावधानीसे जापान और मित्र राष्ट्रोंके बीच भयंकर भ्रान्ति पैदा हो सकती है।

रमतायोगी।

भूखे भला क्या अतिथिसत्कार कर सकते हैं। इसीलिये कांग्रेसने भावी सम्राट्को अभी भारत आनेके लिये निमन्त्रण नहीं दिया। जो इस प्रस्तावसे बिगड़ते हैं वे हिन्दुओंके अतिथिसत्कारका ढंग ही नहीं जानते। क्या अतिथिको बुलाकर सूखे चने चबवाना चाहिये।

सुरेन्द्र वाचा कम्पनीके शेयर भी बाजारमें बिकने चाहिये। राजभक्तोंकी परीक्षा भी हो जायगी।

जान पड़ता है कि भारतमें राजभक्त तो रह गये हैं परन्तु अधिकारीभक्त कोई नहीं रहा। रईसोंकी भक्ति तो बड़े दिनकी डालीमें ही समाप्त हो जाती है।

गोरे पत्र रेलवे कम्पनियोंका सदा पक्ष लिया करते हैं। ईश्वरने यदि उन्हें किसी भारतीय किसानके घर भविष्यमें जन्म दिया तो उन्हें दूसरोंके कष्टोंका अनुभव हो जायेगा। अभी तो दूसरोंके भरोसे गुलछर्रे उड़ा रहे हैं।

विलायती दवाइयां ही भारतमें खूब बंटने लग गयी हैं। काले आदमी गोरोंकी दवाइयां पीकर जरूर ही सुख मानते होंगे।

अङ्गरेज भारतकी उन्नति करना चाहते हैं परन्तु इस बातको क्या गारण्टी है कि भारतीय धनवान बनकर फिर उनकी इसी तरह खुशामद किया करेंगे।

बिवाह शादियोंमें जितनी भी ज्यादा फिजूल खर्चोंको जाय देशके

लिये लाभदायक है। कञ्जूस भला देशका क्या हितसाधन कर सकते हैं।

——

गोदके लड़के जरूर ही पितृ-भक्त होते होंगे। वे दुखसे सुखके स्थानमें आते हैं।

——

गाँधीजी अस्वस्थ हैं नहीं तो वे बम्बईके मजूरोंकी जरूर मदद करते। मजूरोंने बेमौके क्यों हड़तालकी। अब तो उन्हें स्वावलम्बनसे ही काम लेना होगा।

——

सन्तान यदि ब्रह्मचर्यका पालन करने लगे तो फिर डाक्टरोंकी कैसे गुजर होगी। माता पिताको इसीसे तो ध्यान नहीं रखना चाहिये।

——

देशमें दिनों दिन महंगी क्यों बढ़ने लगी है। क्यों यहाकी भूमि नाराज हो गयी है।

——

सवेरे उठकर चाय बीड़ी जरूर पीनी चाहिये। हिन्दुओंका यह पहला धर्म है।

——

भारत उन्नति कर रहा है। अब यहां ४ सेरका आटा बिकने लगा।

छोटी उम्रमें लड़कोंकी शादी करा देनी अच्छी है। वे बहुत जल्द अपनी जिम्मेदारी समझने लग जाते हैं।

——

स्त्रियोंको शिक्षा न देनी चाहिये। पढ़ लिखकर वे गहना भी पहनना पसन्द नहीं करतीं।

——

राष्ट्रपति विलसन अपने देशके प्रधान कहलाना भी पसन्द नहीं करते। क्या वे संसारसे प्रभुओंका प्रभुत्व ही उठा देना चाहते हैं।

——

कागजकी महंगीमें प्रेसऐक्टने पत्रवालोंको बड़ी मदद पहुचायी। जिसने पत्र निकालनेका साहस भी किया जमानतकी रकम सुनते ही चुपकी साधी।

——

कलकत्ता कार्पोरेशन बड़े बाजारमें सफाई नहीं रखना चाहता उसे शायद यहांसे काफी टेक्स न मिलता होगा।

——

मोती बाबू बुढ़ापेमें भी सरकारको तङ्ग किये रहते हैं। क्या उन्हें ईश्वरभजन अच्छा नहीं लगता।

सुरेन्द्र बाबू अपना पत्र भी कम्पनीके हाथ कर रहे हैं। क्या वास्तवमें सन्यास लेनेकी तैयारियां हो रही हैं या पत्रसे सम्बन्ध त्यागकर सरकारी अदालतोंकी शरण लेना चाहते हैं।

——

हमें स्वराज्यके लिये चिल्लाते देख गोरे व्यापारी बेतरह बिगड़ते हैं। क्या वे स्वतन्त्र अङ्गरेज जातिकी सन्तान नहीं बनना चाहते।

——

स्थानीय चीनापट्टीके बा० द्वारकादास केदारबक्सने सचित्र रामनामामृतका नया संस्करण कई संशोधनोंके साथ फिर बड़ी सजधजसे निकाल दिया है। तृतीय बार ५ हजार प्रतियां छपायी गयी हैं। सर्वसाधारणको बिना मूल्य बांटी जाती है! श्री रामनामाकी महिमा किससे छिपी हुई है। उसका प्रचार उक्त फार्म कर रही है। सर्वसाधारणको लाभ उठाना चाहिये। भक्त जनोंके लाभके लिये सभी बातें पुस्तकमें हैं। पुस्तक पानेका पता :—बा० द्वारकादास केदारबक्स भगत, ४ चीनीपट्टी—कलकत्ता।

३०वींको पञ्जाबके छोटे लाट मुलतानमें दरबार करेंगे।

नया सुभीता।

जो हमारे दैनिक विश्वमित्रको असमर्थताके कारण नहीं पढ़ सकते वे एकबार कड़ा दिलकर दो रुपया भेज दें। एक साल तक बराबर साप्ताहिक पत्र पायेंगे। यदि वे चाहें तो १) ही भेजकर ६ महीने तक पत्रका आनन्द लूटें। साप्ताहिकमें दैनिककी सभी विशेषतायें रखनेका खास ध्यान रखा जाता है।

सेवा और मेवा।

हिन्दी साहित्यके सेवी पत्रकी एजेन्सी लेकर २५) सैकड़ा घर बैठे कमा सकते हैं उन्हें डाक व्यय भी न देना होगा पहले ५) जमा कराने होंगे। दो पैसा देकर भला कौन इस जमानेमें हर रोज पत्र न पढेगा एक शहर या कस्बेमें कमसे कम पचास प्रतियां आसानीसे विक सकती हैं।

पुस्तक विभाग।

हम दूसरेकी पुस्तकें विज्ञापन देकर बेचते हैं जिन्हें पुस्तकें बिकवानी हों हमसे लिखा पढ़ीकर सब बातें तय करलें हम उचित पारितोषिक देकर पुस्तकें प्रकाशित करते हैं।

आफिसका पता—मेनेजर विश्वमित्र कार्यालय,

बडा बाजार कलकत्ता।

तारका पता—'VISHWAMITR'

पञ्च रत्न देखिये

भारत शासन सुधार—यह भारतसम्बन्धी शासन और वर्तमान सुधार स्कीम जाननेका अद्वितीय पुस्तक है। मूल्य ॥)

स्वराज्यकी धूम—देशके नेता स्वराज्यके सम्बन्धमें क्या कहते हैं यदि यह जानना हो तो मनोहर पुस्तकका एक बार अवलोकन कीजिये। मूल्य ॥)

जर्मनीकी राज्य व्यवस्था—जर्मनीका शासन किस प्रकारका होता है यह इस महासमरके कारण जानना बहुत जरूरी हो गया है। हिन्दी संसारमें यह सर्वथा नयी पुस्तक है। मूल्य ॥)

तिलककी जीवनी—भारतके हृदयसम्राट् देशके परमपूज्य नेताका जीवनचरित्र पढ़नेसे मन प्रसन्न और आत्मा बलवान् होती है। ऐसा जीवन चरित्र अभीतक हिन्दी संसारने नहीं पाया था। मूल्य ॥)

ऐयर चरित्र—देशभक्त डा० ऐयरने वर्तमानकालमें जो निर्भीकता दिखायी वह इतिहासमें स्मरणीय रहेगी। आपका जीवन आदर्श है। यह पुस्तक बड़ी खोजके साथ लिखी गयी है। मूल्य ॥)

चार आनेमें उत्तम पुस्तिकायें—तिलकका भाषण ≠) सत्याग्रहकी धूम -) ऐयर पत्र -) **स्वराज्यवीणा** ॥≠)

मेनेजर—'विश्वमित्र कार्यालय।'

बड़ाबाजार कलकत्ता

'बनर्जी प्रेस' १३ नारायण प्रसाद बाबू लेन कलकत्तामें श्री आशुतोषबनर्जी द्वारा मुद्रित।

Registered No. C.877.

कामये दुःखतप्तानाम् प्राणिनामार्त्तिनाशनम् ॥

वर्ष १ संख्या ४

विश्व मित्र

प्रकाशक—
विश्वमित्र कार्यालय
कलकत्ता

एक वर्षका मूल्य १) एक प्रतिका मूल्य

* श्रीहरिः *

विश्वमित्र ।

* कामये दुःख तप्तानां प्राणिनामार्ति नाशनम् *

खण्ड १ } माघ संवत् १९७५ वि० जनवरी सन् १९१९ { संख्या ४

बेसेण्टका पतन ।

तुलसी निज कीरति चहैं,
पर कीरतिको खोय ।
तिनके मुंह मसि लागि है,
मुए न मिटि है धोय ॥

गोस्वामी तुलसीदासका यह दोहा हमें मिसेज बेसेण्टकी आजकलकी बेढङ्गी चालें देखकर सहसा याद आ गया है । दिल्ली कांग्रेससे लौटनेके बाद मिसेज बेसेण्ट लोकमान्य तिलक और उनके अनुयायियोंके कार्योंको अदूरदर्शितापूर्ण बता रही हैं क्योंकि राष्ट्रीयदलवालोंने कांग्रेसमें उनकी अनुचित बातें भी नहीं मान लीं। पहले हम मिसेज बेसेण्टके व्यक्तित्वके सम्बन्धमें कुछ कहना उचित नहीं समझते थे क्योंकिहमें उनके आक्षेपोंको पढ़कर भी यह अनुमान नहीं हुआ था कि, जो मिसेज बेसेण्ट कलतक अपने कड़े विचारोंके कारण एक्स्ट्रीमिस्ट दलकी एक मुख्य नेत्री थीं वे एक सड़ासा बहाना ले इतनी जल्दी राष्ट्रीय दलकी दुश्मन बन जायंगी। यहां दुश्मन शब्द का व्यवहार हमने जान बूझ कर किया है क्योंकि उनके पत्र न्यूइण्डियामें आजकल ऐसी ही बातें निकल रही हैं जैसी भारतहितके कट्टर शत्रु ऐङ्गलो-इण्डयन पत्रोंमें निकला करती हैं। राष्ट्रीय दलके आन्दोलनसे चिढ़ जिस तरह ऐङ्गलो इण्डियन पत्र मौके बेमौके राष्ट्रीय दलवालों की राजभक्तिके सम्बन्धमें सन्देह प्रकट किया करते और किसी पथभ्रष्ट युवकद्वारा राजनीतिक हत्या होनेपर लिखा करते हैं कि जर्मनीसे सहायता पाकर ही यहां के क्रान्तिकारी राजनीतिक अपराध किया करते हैं इसी प्रकार आज न्यूइण्डियाके लेखोंमें विचार

प्रकट किये जा रहे हैं। कुछ हफ्ते पहले अपने एक लेखमें मिसेज बेसेण्टने दिल्ली कांग्रेसके राजकुमारके स्वागतका प्रस्ताव न पास करनेपर क्रोध प्रकट करते हुए लिखा था कि भावी सम्राट्के प्रति इतना भी शिष्टाचार न दिखानेका जो अनादर किया गया है उसका समर्थन देशवासी कदापि न करेंगे। साथ ही उन्होंने प्रकट किया था कि स्वराज्यसंघका एक उद्देश्य महाराजके शासनसे सम्बन्ध बनाये रखना है। इस तरह पर्यायसे उन्होंने कांग्रेसके राष्ट्रीय दल वालोंको राजभक्तिशून्य बताया है। न्यू इण्डियाके हालके एक और लेखमें लिखा गया है कि गवर्नमेण्टकी दमन नीतिके कारण "भारतमें षड्यन्त्र फैले और इन्हें मुख्य करके जर्मन उत्तेजकों और जर्मनीके धनसे सहायता मिली।"

पाठकोंको कांग्रेसकी भूतपूर्व प्रेसिडेण्ट और राष्ट्रीय दलकी एक भूतपूर्व--भूतपूर्व इस लिये क्योंकि अब वे राष्ट्रीय दलसे भिन्न अपना एक नया दल बनाने चली है—नेत्रीकी यह गति देख बड़ा आश्चर्य होता होगा। परन्तु जो लोग मिसेज बेसेण्टके जीवनके अबतकके कार्योंसे परिचित हैं उन्हें कुछ आश्चर्य न मालूम होगा, क्योंकि वे भारतमें ही अबतक कई रङ्ग बदल चुकी हैं। पहले पहल ये थियासोफी मतका भारतमें प्रचार करनेके लिये आयी थीं और कई वर्षोंसे उस मतकी अध्यक्षा बन भारतमें प्रचार करती रहीं। लोगोंकी सहानुभूति प्राप्त करनेको इन्होंने बनारसमें सेण्ट्रल हिन्दू कालेज खोलनेका उद्योग किया और उसमें इन्हें भारतीय श्रीमानोंकी सहायतासे सफलता भी प्राप्त हुई। जब कई वर्ष पहले मान० मालवीयजीने हिन्दू यूनिवर्सिटी स्थापन करनेका उद्योग आरम्भ किया और उसे सरकारसे स्वीकार करानेमें लगे थे तब मिसेज बेसेण्टने भी अपने सेण्ट्रल हिन्दू कालेजको यूनिवर्सिटीका स्वरूप देनेका विचार किया। उन दिनों वे विलायत गयी थीं और वहींसे उक्त कालेजको यूनिवर्सिटी बनानेका उद्योग आरम्भ किया। परन्तु जब उन्होंने देखा कि मान० मालवीयजीके मुकाबलेमें हमें सफलता न होगी तब उक्त कालेजको मालवीयजीकी हिन्दू यूनिवर्सिटीको ही दे देनेका निश्चय कर लिया। कई वर्ष पहले जब मिसेज बेसेण्टने मद्रासके एक ब्राह्मणके लड़के कृष्णमूर्तिको अवतार सिद्ध करनेकी चेष्टा की तो लोगोंको बड़ा बुरा मालूम हुआ। पीछे उनपर लड़केके पिताने हाईकोर्टमें मामला चलाया तब मिसेज बेसेण्टके लेफटेनेण्ट लेडवीटर साहबके आचरणके सम्बन्धमें मुकद्दमेमें जैसी गन्दी बातें प्रकट हुईं उनके कारण इनके कितने ही वे अनुयायी भी इनसे पृथक् हो गये जो पहले इन्हें 'माता' कहकर पूजते थे। सारांश यह कि पिछले दस वर्षोंकी घटनाओंका पता रखनेवालोंको यह भली भांति ज्ञात है कि उस मुकद्दमेके कारण मिसेज बेसेण्ट बुरी तरहसे सर्वसाधारणकी घृणाकी पात्र बन गयी थीं। अपने खोये हुए यशको लौटानेके लिये ही इन्होंने राजनीतिक कामोंमें हाथ डाला यद्यपि १६०५ के स्वदेशी आन्दोलनके समय इन्होंने अपने सेण्ट्रल हिन्दू कालेजके छात्रोंको उसमें शामिल होनेसे रोक रखा था और कृष्णमूर्तिके मामलेके समय राष्ट्रीय दलके नेता बा० अरविन्द घोष आदिके प्रति खूब द्वेष भाव दिखाया था।

राजनीतिक मैदानमें उतर सबसे पहले मिसेज बेसेण्टने कांग्रेसके गरम और नरम दलवालोंमें मेल करानेका प्रयत्न किया और उसमें सफलता भी हुई। सच तो यह है कि, गरम दलके बिना उस समय कांग्रेसकी बड़ी बुरी गति हो रही थी और यदि वे प्रयत्न न करतीं तो भी शीघ्र ही नरम दल वालोंको गरम दलके लिये कांग्रेसका द्वार खोलना ही पड़ता। जो हो, उस मेलका श्रेय इन्हें मिला और लोगोंको कृष्णमूर्त्तिके मामलेकी बात भूलसी गयी। मेल करानेके लिये इतना उद्योग करनेका इनका मुख्य हेतु क्या था; इसका पता स्वयं मिसेज बेसेण्टके उन लेखोंसे चल जाता है जो उन्होंने लखनऊ कांग्रेसके अध्यक्ष निर्वाचिनके सम्बन्धमें लिखे थे जिनमें स्पष्ट शब्दोंमें जनतासे अपील की थी कि, ऐसे अवसरपर मुझे ही प्रेसिडेण्ट बनाओ। अपनी योग्यता प्रकट करनेके लिये उन्होंने खूब अन्दोलन किया था, पर बहुसम्मति उनके विरुद्ध थी इसलिये अनेक चालें चलनेपर भी वे प्रेसिडेण्ट न हो सकीं। कलकत्ता कांग्रेससे पहले मद्रास सरकारने उन्हें नजरबन्द कर वह काम कर दिखाया जो मिसेज बेसेण्टके प्रयत्नोंसे नहीं हुआ था और वे प्रेसिडेण्ट चुनली गयीं। उस समय मांडरेट नेता उन्हें प्रेसिडेण्ट बनानेके विरुद्ध थे, पर राष्ट्रीय दलवालोंने एक बार जिसे अपना लिया उसे छोड़ना उचित नहीं समझा और उद्योगकर उन्हें ही प्रेसिडेण्ट बनवाया। राजनीतिक क्षेत्रमें आकर इनकी सदा यह चेष्टा रही कि भारतीय नेताओंमें सर्व प्रधान रहें और जनता सदाके लिये हमारे नाम नेतृत्वका पट्टा लिख दे। पर वे जानती थीं कि, लो० तिलकका नम्बर मारना तबतक असम्भव है जबतक उनसे भी अधिक गरम विचारकी न बनें। इसीसे उन्होंने लोकमान्यके स्वराज्यसंघसे भिन्न अपना स्वराज्यसंघ स्थापित किया। मांटेगू स्कीम प्रकाशित होते ही उन्होंने लोकमान्यसे आगे रहनेके विचारसे सर्व प्रथम घोषणा कर दी कि, स्कीम न तो इंगलैण्डके देने योग्य है और न भारतके स्वीकार करने योग्य। यह चाल उलटी पड़ते देख पीछे उन्होंने यह सिद्ध करना शुरू कर दिया कि, आरम्भसे ही हमारे और लोकमान्यके विचार स्कीमके सम्बन्धमें एकसे हैं। इस तरह जब मिसेज बेसेण्टने देख लिया कि स्वदेश सेवामें जन्मभर कष्ट सहनेके बाद जो प्रतिष्ठा लोकमान्यको प्राप्त हुई है वह एकमात्र कड़े विचार प्रकट करनेसे ही हमें नही हो सकती तब राष्ट्रीय दलके सङ्कटपूर्ण पथसे चुपचाप अलग हो जाना ही उत्तम समझ वे उक्त दलसे पतित हो रही हैं। जो हो लोकमान्य और उनके अनुयायियोंकी निन्दाकर अपने यशकी इच्छा रखनेवाली इन मिसेज बेसेण्टके मुहमें गोस्वामीजीके कथनानुसार कलंककालिमा लगी बिना नहीं रह सकती।

कलई खुल गयी।

दिल्ली कांग्रेस से लौटनेके बाद मिसेज बेसेण्टने जिस तरह लो० तिलक और उनके अनुयायी राष्ट्रीयदलवालोंपर आक्षेप करना शुरू किया है उससे लोगोंको आश्चर्यचकित होना पड़ा है। इसका रहस्य प्रकट करनेको उस दिन कलकत्तेके पीडम

स्क्वायरमें मा० मौलवी अबुल-कासिमकी अध्यक्षतामें एक सभा हुई। बा० विपिनचन्द्रपालने अपने भाषणमें स्पष्ट रूपसे सिद्ध कर दिया कि, कांग्रेसकी तिथियोंसे कई दिन पहले दिल्ली पहुंच मिसेज बेसेण्टने कांग्रेस को अपने ही मुट्ठीमें रखनेका पूरा उद्योग किया था। उनका यह उद्देश्य सिद्ध नहीं हो सका इसी लिये वे आज राष्ट्रीयदलवालों पर दुलत्तियां झाड़ रही हैं। विपिन बाबूने कहा कि, दिल्ली पहुंचनेपर हमे मालूम हुआ कि, मिसेज बेसेण्ट इस वर्ष कांग्रेसकी जेनरल सेक्रेटरी बनना चाहती हैं। राष्ट्रीयदलवालोंको यह अनुचित प्रतीत हुआ कि जिसे कल कांग्रेसकी प्रेसिडेण्ट बनाया था उसे आज एक दर्जा गिरा सेक्रेटरी बनावें। डेपुटेशनके सम्बन्धमें मिसेज बेसेण्टने विषय-निर्वाचिनीमें कहा कि, लो० तिलक को इंगलैण्डजानेवाले डेपुटेशन का सेक्रेटरी न बनाना चाहिये, क्योंकि एक तो उनमें अंग्रेजीकी योग्यता नहीं है और दूसरे गवर्नमेण्टपर उनकी बातोंका प्रभाव न होगा। सेक्रेटरी तो कोई ऐसा हो जिसका इंग्लैण्डमें प्रभाव पड़ सके। उनके खुल्लमखुल्ला विरोध करनेपर भी लोकमान्य संधिसभाके लिये जनताके प्रतिनिधि चुने गये इसीसे वे आग-बबूला हो गयीं। क्या म० गांधी से वे इस लिये चिढ़ती हैं कि, उन्होंने हिन्दू युनिवर्सिटी की स्थापनाके दिन ऐसी बात कही थी जिससे मिसेज बेसेण्ट क्रोधसे जामेके बाहर हो गयी थीं। मिसेज बेसण्टने हीरेन्द्र बाबूके द्वारा मि० सी० आर० दासको सन्देसा भेजा था कि, यदि लो० तिलक डेपुटेशनके सेक्रेटरी बनाये गये तो मैं स्वयं तो जाऊंगी ही नहीं औरोंको भी उत्साहित न करूंगी और कितने ही आदमी जानेसे इनकार कर देंगे। राजकुमारके स्वागतका प्रस्ताव रद्द नहीं हुआ बल्कि उसी तरह स्थगित हुआ जिस तरह स्वयं मिसेज बेसेण्टकी रायसे बम्बईमें हुआ था। सारांश यह कि, कांग्रेसपर अपना प्राधान्य रखनेकी इच्छा न पूरी होनेसे वे आज राष्ट्रीयदलपर तरहतरहके आक्षेप कर रही हैं इसीसे इच्छा न होते हुए भी मुझे ये बातें कहनी पड़ी हैं।

विपिन बाबूके बाद और भी कई वक्ताओंके भाषण हुए। उपस्थिति कोई २००० के करीब थी।

अमेरिकन स्वतंत्रता।

१७७६ ई०की चौथी जुलाईको अमेरिकाने इङ्गलैण्डसे स्वतन्त्र होनेकी घोषणा की थी। वह घोषणा फिलाडेलफियाके स्टेट हाउसमें की गयी थी उसका एक बहुत ही मजेदार विवरण 'मेसेंजर' नामक पत्रमें छपा है। उसका साधारण विवरण पाठकोंके मनोविनोदार्थ हम यहां देते हैं;—

फिलाडेलफियाके पुराने स्टेट हाउसमें ५० आदमी अपने शरीरसे स्वेच्छाचारी शासनका बन्धन काटनेको एकत्र हैं। सबकी नजर उस दर्वाजेकी ओर है जिधरसे वे तीन आदमी हालमें आनेवाले हैं जो रातभर चर्मपत्रपर घोषणा लिखनेमें लग रहे थे। दर्वाजा खुला और टामस जेफर्सन, जान आडम्स और बेंजमिन फ्रेंकलिनने हालमें प्रवेश किया। तीनो मेजके पास पहुंचे और घोषणाका चर्मपत्र उसपर रख दिया। अब उसपर हस्ताक्षर

कानूनके मसविदेमें बहस छिड़ी। जेफर्सनने, आडम्स और लीने जोरदार भाषण किये, पर फिर भी सन्देह बना ही रहा। एक कमजोरदिल आदमी धीरे धीरे कुल्हाड़ियों और फांसीके भयकी बात कहने लगा। इसपर एक एक वीरने हालको गुंजाते हुए कहा "फांसी! वे हमारी गर्दनें देशकी सभी फांसियोंपर लटका सकते हैं, वे सभी चट्टानोंको फांसीका तखता बना सकते हैं, और वे सभी घरोंको कब्र क्यों न बना डालें', पर घोषणाके इस चर्मपत्र पर लिखे शब्द कभी नष्ट नहीं हो सकते। वे हमारे खूनसे हजारों फांसीके तख्ते भिगो सकते हैं, पर कुल्हाड़ीको रंगने वाली हमारे खूनकी एक एक बूंदसे स्वतंत्रताके नये नये पोषक योद्धा पैदा होंगे। ब्रिटेनके राजा परमात्माके आकाशके तारे भले ही मिटा सकें, पर इस घोषणापत्र पर लिखे परमात्माके शब्द वे नहीं मिटा सकते। परमात्माके काम नष्ट हो सकते हैं पर उसके शब्द कभी नहीं।

"इस घोषणाके शब्द हमारी हड्डियोंके धूलमें मिलनेके बहुत समय बाद तक बने रहेंगे। ये कारखानोंके कारीगरोंके लिये आशा और खानोंके गुलामोंको लिये स्वतंत्रताका काम देंगे। परन्तु डरपोंक राजाओंको ये चेतावनी के शब्द सिद्ध होंगे जिन्हें उसे सुनना ही पड़ेगा। ये देवदूतकी घोषणाकी भांति कहेंगे कि "तुम काफी समयतक मनुष्य जातिको पददलित कर चुके। अन्तमें मानव जातिका करुण-क्रन्दन भगवान्के कानोंमें पड़ा और उनका निर्णय लेकर लौटा है। तुमने खूनकी नदियां बहा राजगद्दी पायी है और अपने ही करोड़ों भाइयोंके गले कांटे हैं। अब राजाओ और खूनी जल्लादो, तुम्हारे लिये कुल्हाड़ियों और फांसीके दिन आये हैं।

मानवजाति और पृथ्वीके राजाओंके लिये घोषणापत्रका यही सन्देसा है। क्या हम अब स्वतंत्रताके निकट पहुंचकर पीछे हटेंगे?

"घोषणापत्रपर दस्तखत करो। दस्तखत करो चाहे उसके बाद ही फांसीकी रस्सी तुम्हारे गलेमें क्यों न डाल दी जाय और इस हालमें कुल्हाड़ियां ही क्यों न बरसने लगें! जीवन मरणकी चिन्ता छोड़ इसपर दस्तखत करो, नहीं तो सदाके लिये नष्ट हो जाओगे। दस्तखत अपने ही लिये नहीं, बल्कि सब युगोंके लिये करो, क्योंकि यह घोषणापत्र सदाके लिये मनुष्योंके अधिकारोंका पवित्र ग्रंथ होगा। आश्चर्य न करो परमात्मा यही कह रहा है अपने इन निर्वासितोंको देखो कि बात की बातमें ये कैसे बली हो रहे हैं। यही नहीं, अपनी विजयोंका ध्यान करो और कहो कि, क्या परमात्माने अमेरिकाको स्वतंत्र होनेको नहीं कहा।

हम आकाश डांककर परमात्माके दरबारमें नहीं पहुंच सकते हैं, पर मुझे मालूम होता है कि देवदूत गद्दीके पास पहुंच कह रहा है कि, 'पिता, पुरानी दुनियाने खूनसे बपतिस्मा लिया है। पिता, टुक एक दृष्टि डालकर देखो तो सही कि मनुष्य अत्याचारियोंके पैरों तले कुचले जा रहे हैं और मनुष्योंके लिये आशा दिलानेवाला कोई भी नहीं है।

मानवजातिके अपराधोंसे भयभीत देव दूत कांपता हुआ खड़ा हो जाता है और परमात्माका शब्द सुनाई देता है कि, फिर प्रकाश होने दो। मेरे दीन और सताये हुए आदमियोंसे कह दो कि वे पुरानी दुनियाके अत्याचार

और खूनसे बाहर निकल गयी दुनियामें मेरी वेदी बनावें।

'मित्रों, मैं इसे परमात्माके शब्द समझता हूं। मैं मरते दमतक यही कहूंगा कि, परमात्माने अमेरिकाको स्वतंत्र होनेको कह दिया है। मरते समय भी अपनी धीमी आवाजसे कहूंगा कि उन करोड़ों आदमियोंके वास्ते घोषणापत्रपर दस्तखत करो जो तुम्हारी ओर तुमसे यह सुननेको देखे रहे हैं कि, 'तुम स्वतन्त्र हो।' इसके बाद उक्त अज्ञातनामा व्यक्ति थककर अपने स्थानपर बैठ गया और हालमें जोरसे आवाज गूंजी कि 'दस्तखत करो'। अब कुछ सन्देह नहीं रहा। सब घोषणापत्रपर हस्ताक्षर करनेको एक साथ टूट पड़े। बीर जान हैनकाक मुश्किलसे सही कर पाये थे कि दूसरेने कलम ले ली। इसी तरह एक एक करके घोषणापत्रपर आडम्स,, ली, जेफर्सन, केरोल, फ्रैंकलिन और शेरमनके हस्ताक्षर हो गये। फिर खुशीमें घंटा बजने लगा मानों वह कह रहा है, 'अब स्वतंत्रता और सदाके लिये स्वतंत्रत है।"

दिल्लीमें मालवीय।

२८ वीं की रातको दिल्लीमे मा० पं० मदनमोहन मालवीय ने एक महत्वपूर्ण भाषण किया। विषय था हमारे' सामनेके कार्य'। आपने दिल्ली कांग्रेसकी चर्चा करते हुए कहा कि, उसमें प्रिन्स आफ वेल्सके स्वागतका प्रस्ताव इस लिये पास नहीं किया गया, क्योंकि अभीतक उनके आनेकी तिथि ही नहीं निश्चय है। वे आयेंगे तो खूब स्वागत किया जायगा। पहले वे उपनिवेशोंमें जायंगे तब यहां आयेंगे। इस वर्ष अकाल इनफ्लुएञ्जा और समरके कारण बड़ी मंहगी है, इसीसे इस वर्ष उक्त प्रस्ताव स्थगित रखा गया। गिरी जातियोंके सम्बन्धका प्रस्ताव इस लिये नहीं पास पास हुआ क्योंकि कांग्रेस कुल देशकी है वहां जातिका प्रश्न नहीं उठाना चाहिये। उन जातियोंमें सहानुभूतिके अभावसे नहीं रोका गया। पूर्ण प्रादेशिक स्वराज्यके सम्बन्ध में विषयनिर्वाचिनी और कांग्रेसमें खूब विचार हुआ। पूर्ण विचारके बाद प्रस्ताव पास किया गया। अन्तिम निर्णयमें भूल हो सकती है पर यह नहीं कहा जा सकता कि भयङ्कर भूल की गयी है। अनुन्नत प्रदेशोंने उसकी मांग की और विषय निर्वाचिनीमें एक किसान प्रतिनिधिने कहा कि पुलिस और न्याय हमारे हाथों होना चाहिये। जो डेपुटेशन विलायत जायगा उसके मेम्बर आपसमें रायकर ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंसे बातचीत न कर सकेंगे कांग्रेस की यह मंशा नहीं हैं। इण्डो-ब्रिटिश एसोशिएशनने १२ लाख रुपये हमारी आकांक्षाकी सिद्धि रोकनेको एकत्र किया है हमें मिलकर सामना करना चाहिये। प्रस्तावके विरोधियोंको बहुमतके निर्णयके अनुसार काम होनेमें बाधा न पहुंचानी चाहिये। गांव गांव कांग्रेस कमेटियां खोलनी चाहिये।

जूटका व्यापार।

डंडी और कलकत्तेके जूटके तैयारी मालमें इस समय बड़ा अन्तर है। कलकत्तेका भाव ६० सैकड़ा कम है। जिस भावमें दक्षिण अमेरिकाको कलकत्तेका माल जाता है उस भावमें डंडी वाले नहीं दे सकते। यदि कलकत्ते वाले मालकी चलानीके लिये काफी जहाज पाने लगें तो वे विलायती व्यापारियोंको दबा सकते हैं।

कांग्रेससे बुढ़िया खिसकी।

एनी बिसेण्टने किया विचार, रालट बिलको कठिन प्रहार।

लेना एक न देना दो, पड़ी है क्या, दुख भोगें जो।

कांगरेस भट्ठे जावे, जो हमरे पीछे नहिं आवे।

अब तो रहिहौं धूढ़न संग, जहां न होइहैं सुख मस भङ्ग।

सुन लो पंचो कान लगाय, कांग्रेस अब नाहिं सोहाय।

भारत और रूस।

लण्डनका ६वीं जनवरीका तार है कि ब्रिटेनके पत्र भूतपूर्व समरसचिव लार्ड मिलनरके इस कथनसे सहमत हैं कि मित्रराष्ट्रोंने रूसका साथ छोड़ भयङ्कर और खेदजनक भूल की है। इससे जर्मनीका काम बन सकता है और भारत तथा पूर्वपर सङ्कट उपस्थित हो सकता है। रूसको उसके भाग्यभरोसे छोड़ देना 'मार्निङ्ग पोस्ट'के कथनानुसार तब उचित सिद्धान्त कहा जा सकता था जब रूसमें बोलशेविकोंके सिवा अन्य किसीका शासन होता। वास्तवमें बोलशेविक दल लुटेरोंका दल है। यदि लण्डनके पूर्वी सिरेके निवासी इङ्गलैण्डके शासक बनें तो अङ्गरेज क्या कहेंगे? यदि बोलशेविजम नहीं रोका जायगा तो यह कुल यूरोपमें फैलकर नष्ट भ्रष्ट कर सकता है। इसके अन्त करनेका तुरन्त उपाय होनेमें देर न करनी चाहिये। यदि मित्रराष्ट्र रूसको मदद न देंगे तो वह लाचार हो जर्मनीके साथ हो जायगा। अपने उपनिवेशोंको खोकर निर्बल हुआ जर्मनी एकमात्र रूसके मत्थे हो कभी फिर सुदृढ़ बननेकी आशा करता है।

बोलशेविकोंके रूससे वह रूस कम भयङ्कर न होगा जो बोलशेविकोंसे मुक्ति पानेके बाद जर्मनीका मित्र बना हुआ होगा और जो वर्तमान सङ्कटकालमें मित्रराष्ट्रोंसे सैनिक सहायता न प्राप्त करनेके कारण उनके प्रति भारी दुश्मनी रखनेवाला होगा। रूससे होकर भारतको राह गयी है। रूसके जर्मनीके प्राधान्यमें रहनेसे जर्मनी का पूर्व विजय करनेका वह स्वप्न फिर पैदा हो जायगा जो जर्मनीने कभी नहीं न छोड़ा और जिसे वह कभी न छोड़ेगा।

विविध विचार।
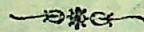
मुहंतोड़ जवाब——

मालवीयजीने उस दिन दिल्लीकी एक सार्वजनिक सभामें भाषण करते समय स्पष्ट कह दिया है कि, दिल्ली कांग्रेसने प्रिंस आफ वेल्सके स्वागतका प्रस्ताव इस लिये नहीं स्वीकार किया कि एक तो अभी तक उनके आनेकी निश्चित सूचना ही नहीं निकली हैं और दूसरे वे उपनिवेशोंमें घूमते हुए भारत आवेंगे। इसी लिये जब लोग अकाल, इनफ्लुएंजा आदिसे पीड़ित हैं तब उक्त प्रस्ताव पास न कर अनुचित नहीं हुआ। राजकुमारके आनेपर कांग्रेस सबसे पहले उनका स्वागत करेगी। क्या इतनेपर भी मिसेज बेसेण्ट भावी महाराजाके प्रति शिष्टाचारका भाव न दिखानेके कारण कांग्रेसके कामोंके लिये दुःखके आंसू बहायेंगी? तुरन्त पूर्ण प्रदेशिक स्वराज्य मांगनेके सम्बन्धमें भी मालवीयजीने स्पष्ट रूपसे कह दिया हैं कि, उभय पक्षकी बातें सुनने और पूर्णरूपसे विचार करनेके बाद ही निर्णय किया गया है। इङ्गलैण्ड जानेवाले डेपुटेशनके सम्बन्धमें मालवीयजीका यह कहना ठीक ही हैं कि, यदि ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंसे वहां बातचीत करनेकी जरूरत पड़े तो दिल्ली कांग्रेसके प्रस्तावका यह अर्थ नहीं कि उस अवस्थामें डेपुटेशनके सब मेम्बर मिलकर विचार करनेके बाद भी वे कुछ नहीं कर सकते। सच तो यह कि, कांग्रेसने डेपुटेशनके मेम्बरोंके लिये दिल्लीकाँग्रेसके निश्चयोंके अनुसार ही सम्मति प्रकट करनेका बंधन इसी लिये लगा रखा है कि जिससे कोई व्यक्ति वहां जाकर मनमाने ढंगसे अपने विचार न प्रकट करने लगे। मालवीयजीने मिसेज बेसेण्टकी बातोंका मुंहतोड़ जवाब तो दे दिया है, पर हमें आशा नहीं होती कि इतनेपर भी वे अपनी करनीसे बाज आयेंगी, क्योंकि आजकलकी उनकी बातोंसे कुछ ऐसा जान पड़ता है कि, वे अपना अलग दल बनाये विना न मानेंगी।

रक्त चूसा जायगा—

संसार जानता है कि, अधिकारिवर्गीय शासनमें भारत जैसा दरिद्र हो गया है वैसा दरिद्र देश संसारमें एक भी नहीं है । इतनेपर भी उसे अपनी शक्तिसे बहुत ही अधिक सेनाका खर्च सहना पड़ता है । शिक्षा, सफाई आदि लोकोपकारी कार्योंके लिये तो भारत सरकारका खजाना खाली रहता है पर सेनापर लाखों रुपये हर साल अधिक खर्च करनेको उसे रुपयोंकी कभी कमी नहीं होती । वर्तमान सैनिक व्ययको ही जनता बराबर असह्य बताती आ रही है । यह सुन किसे आश्चर्य न होगा कि, शीघ्र ही सैन्य भंग होनेपर ब्रिटिश सेनाका कुछ भाग भारतकी रक्षाके लिये यहां रखा जायगा ! अवश्य ही उसका खर्च भारतको भरना पड़ेगा । हम इसे भारतकी रक्षाका उपाय कहें या यह और भी अधिक रक्त चूसनेवाला काम होगा । जब मित्रराष्ट्रोंको निश्चय है कि वे ऐसी शर्तोंपर संधि करेंगे कि भविष्यमें बहुत दिनतक युद्धकी सम्भावना न रह जायगी तब समझमें नहीं आता कि, ब्रिटिश अधिकारी भारतकी रक्षाके लिये यहां और भी ब्रिटिश सेना रखनेका क्यों विचार करते हैं । क्या इससे यही नहीं सिद्ध होता कि, सेनासे छुट्टी पानेपर ब्रिटिश सैनिकोंको तुरन्त तो वहां कामकाज मिल ही नहीं जायगा इसी विचारसे ब्रिटेनकी बला भारतके सिर डाली जा रही है ? हम ब्रिटिश अधिकारियोंके इस विचारका तीव्र प्रतिवाद करते हैं ।

यह धींगाधींगी क्यों—

उस दिन पेरिसमें मित्रराष्ट्रोंकी परिषद्के अध्यक्ष मो० क्लेमेंशोने जब सूचना दी कि राष्ट्रसंघका मसौदा तैयार करनेको जो कमेटी बनेगी उसमें अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस इटाली और जापानके दो दो और अन्य देशोंके कुल ५ प्रतिनिधि होंगे तब प्रायः सभी छोटे राष्ट्रोंने उसका विरोध किया ! उस अवसरपर मो० क्लेमेंशोंने कहा कि मित्रराष्ट्रोंने युद्धक्षेत्रोंपर १ करोड़ २० लाख सैनिक भेजे थे जिनमें लाखों काम आये । इसी लिये वे स्वयं ही संसारके भविष्यका निर्णय कर सकते थे । परन्तु राष्ट्रसंघके विचारसे उत्सा हित हो उन्होंने छोटे राष्ट्रोंके भी प्रतिनिधि सन्धिसभाके कामोंमें हाथ बटानेके लिये बुलाये ।" हमें इस कथनमें धींगाधींगीके सिवा कुछ नजर नहीं आता । अवश्य ही मित्रराष्ट्र विजयी होनेके कारण पराजित देशोंके भाग्यका मनमाना निर्णय कर सकते थे, पर वे कुल संसारके भाग्यका निर्णय नहीं कर सकते । उनके उस मनमाने निर्णयके परिणामस्वरूप यदि फिर युद्ध छिड़ता या अशान्ति फैलती तो क्या उससे उन की हानि न होती जो इस तरहका ताना उनको परिषद्के अध्यक्ष मार रहे हैं । राष्ट्रसंघ केवल बड़े ही राष्ट्रोंके लिये नहीं वल्कि संसारभरके लिये होगा । फिर उसको निर्णय वह राष्ट्र स्वीकार करनेको कैसे बाध्य हो सकता है जिसका उसके नियमोंकी रचनामें ही हाथ न होगा ? बड़े मित्र राष्ट्र विजयी हुए हैं, पर बेलजियम, सर्विया जैसे छोटे राष्ट्रोंकी सहायताके कारण ही । ऐसी दशामें प्रत्येक राष्ट्रको प्रतिनिधित्व न देना अन्याय और राष्ट्रसंघ की सफलताके लिये हानिकारक सिद्ध होगा ।

रूसका भय।

यह बहुतोंको मालूम है कि, कुछ समय पहले भारतपर रूसके आक्रमण होनेकी बड़ी आशंका रहती थी। अबसे कोई ३५ वर्ष पहले जब लार्ड डफरिन भारतके वायसराय होकर आये तब उन्हें मुख्य करके उसी प्रश्नकी ओर ध्यान पड़ा था। पंजदह स्थानपर अफगानों और रूसियोंमें भिड़न्त हो जानेसे ऐसा मालूम होने लगा था कि, अब ब्रिटेन रूससे युद्ध घोषणा कर देगा। सैनिक तैयारियोंके लिये सरकारने ३ करोड़ रुपये खर्च भी किये थे। संयोगवश लड़ाई तो नहीं छिड़ी, पर उस घटनासे ब्रिटेनकी चिन्ता बढ़ गयी। भावी सङ्कटोंसे बचनेके विचारसे काबुलके अमीरको पहले सरकार सालाना ८ लाख रुपये देती थी, पर उसके बाद वह रकम बढ़ाकर १२ लाख कर दी गयी। सीमान्तकी सेना भी मजबूत कर दी गयी, पर रूसके आक्रमणका भय बहुत दिनोंतक बना रहा। कितने ही लोगोंका कहना है कि, उसी भयसे बचनेके लिये लार्ड कर्जनने जापानको रूसके विरुद्ध १९०५में लड़ा दिया था। जो हो, इसमें सन्देह नहीं कि, रूस जापानके युद्धमें ब्रिटेनसे जापानको कई तरहकी सहायताएं मिली थीं और उस युद्धमें रूसकी हार होनेके बादसे ही भारतपर उसके आक्रमणका भय बहुत कुछ मिट गया। कई वर्षोंके बाद तो रूस और ब्रिटेनकी संधि हो जानेसे वह भय बिल्कुल ही दूर हो गया। जर्मनीकी बढ़ती हुई शक्तिसे सामना करने और यूरोपमें शान्ति बनाये रखनेके विचारसे ब्रिटेन, रूस और फ्रांसका गुट बन जानेसे सरकारकी सारी चिन्ता ही मिट गयी। पर देखते हैं कि, जो भय रूसको मित्र बना लेनेसे टल गया था वह उसके शत्रु हो जानेसे अब फिर आ उपस्थित हुआ है।

समरके आरम्भमें रूस ब्रिटेनसे मिलकर जर्मनीसे लड़ रहा था और जर्मनीकी जीतके मार्गमें बड़ा भारी बाधक हो रहा था। दूरदर्शी जर्मनोंने रूसको अन्तरङ्ग राष्ट्रोंसे फोड़नेके लिये अनेक प्रकारके षड्यंत्र रचे और अन्तमें उन्होंने १९१७के मार्चमें रूसमें राज्यक्रान्ति करा दी। जारके पतनके बाद जो सरकार बनी उसके सर्वस्व केरेन्सकी फिर भी जर्मनोंसे लड़ते रहे, पर कुछ ही हफ्ते बाद जब रूसमें बोलशेविकोंका राज्य हुआ तब यह जानते हुए भी कि रूसी जनताका बहुत बड़ा भाग पक्षमें है ब्रिटेन तथा अन्य मित्रराष्ट्रोंने बोलशेविकोंको रूसका शासक नहीं स्वीकार किया। उधर जर्मनीने उन्हें पूर्णरूपसे अपनाकर ब्रिटेनका दुश्मन बना दिया। पीछे कुछ रूसी अफसरोंके फेरमें पड़ मित्रराष्ट्रोंने बोलशेविकोंका अन्त करनेको वहां सेना भी भेज दी जिसका फल यह हुआ कि, रूसकी बोलशेविक सरकार उनकी पक्की दुश्मन हो गयी और चारों ओर लड़ाई बन्द होनेपर भी वह मित्रसेनाओंसे अबतक लड़ रही है। हम आरम्भसे ही कहते आ रहे हैं कि, बोलशेविक सरकार चाहे जितनी बुरी हो—यद्यपि हम उसे वैसा नहीं समझते—पर उससे अधिकार छीननेवाला कोई दल रूसमें नहीं है। इसी लिये बोलशेविकोंके साथ किये हुए ब्रिटेनके बर्तावको हम राजनीतिज्ञताशून्य बताते आ रहे हैं, क्योंकि भारतका पड़ोसी होनेसे रूसको मित्र बनाये रहनेमें ही ब्रिटिश साम्राज्यका हित है। अब मित्रराष्ट्रोंको भी अनुभव हो गया है कि

बोलशेविक सरकारका अन्त नहीं किया जा सकता शायद इसी लिये ब्रिटेन और जापानने रूससे अपनी बहुतसी फौज हटा ली है। पर खेद है कि, बोलशेविकोंको पक्का दुश्मन बना लेनेके बाद ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंकी आंखें खुली हैं इसीसे यह नहीं कहा जा सकता कि अब भी वे उन्हें अपना सकेंगे या नहीं।

कई दिन पहलेतक मित्रराष्ट्र सन्धिसभामें बोलशेविक सरकारके प्रतिनिधि लेनेके विरोधी थे। जो सन्धिसभा संसारमें शान्ति स्थापनके लिये उद्योग कर रही है उसमें आधे संसारमें फैले हुए रूसके प्रतिनिधियोंका भाग न होगा और फिर भी संसारमें शान्ति स्थापित हो जायगी, यह असम्भव धारणा हमारे हृदयमें कभी नहीं पैदा हुई। इसीसे हम बोलशेविकोंके प्रतिनिधि लेनेकी आवश्यकता महीनों पहलेसे बताते आ रहे हैं। कुछ दिन पहले रूटरने एक तार भेजा कि मि० लायड जार्जने प्रस्ताव किया था कि रूसके सब दलोंके प्रतिनिधि बुलाकर रूसकी राय जानी जाय, पर फ्रांसके विरोध करनेपर बोलशेविकोंके सिवा रूसके सब दलोंके प्रतिनिधि बुलानेकी बात तय हुई। २१वीं जनवरीके तारमें रूटरने कहा कि, मि० लायड जार्जके प्रस्तावका उद्देश्य लेनिन और ट्रोजकीको सन्धिसभामें बुलानेका नहीं था, बल्कि वे रूसके सब दलोंके विचार जानना चाहते थे। २२वींके एक तारसे मालूम हुआ है कि अन्तमें मित्रराष्ट्रोंके राजनीतिज्ञोंकी आंखें खुल गयीं और वे समझने लगे हैं कि रूसमें अशान्ति रहनेसे यूरोप और संसारमें शान्ति स्थापन करना असम्भव है। इसीसे रा० विलसनके प्रस्तावपर रूसके बोलशेविक तथा अन्य दलोंके प्रतिनिधि एक स्थानपर बुलाये गये हैं जहां उनके साथ मित्रराष्ट्रोंके प्रतिनिधि बातचीत करेंगे। २३ वींके एक तारसे मालूम हुआ है कि, बोलशेविकोंने ओरेनवर्गपर अधिकार कर लिया है जहांसे काबुलकी सीमाके निकट मर्व तक सीधी रेल गयी है। अब ओरेनवर्गसे मुख्य बोलशेविक सेना उक्त रेलसे मर्वकी ओर बढ़ सकती है जिससे एक ओर तो रूसी-साइबेरियन सेना कठिनाईमें पड़ जायगी और दूसरी ओर ट्रांस—कास्पियाकी ब्रिटिश सेना भारी संकटमें पड़ जायगी, क्योंकि उसके मुकाबलेकी एक बोलशेविक सेना मर्वके पूर्व पहलेसे ही पड़ी हुई है। मुख्य सेनाकी सहायता पा वह ब्रिटिश सेनापर तुरन्त आक्रमण कर सकती है। उस दशामें ट्रांस कास्पियाकी ब्रिटिशसेना तो संकटमें पड़ेहीगी साथही जिस राहसे भारत पर जर्मनोंके आक्रमणका भय हो रहा था वह बोलशेविकोंके हाथ लग जानेसे उनसे भय होने लगेगा। ट्रांस-कास्पिया और काकेशियामें लड़ाई होनेकी बात पहले ही कही जा चुकी है। इन बातोंको सोचते वहांकी ब्रिटिश सेनाका भविष्य बड़ा सङ्कटपूर्ण दिखता है। ऐसी अवस्थामें मित्रराष्ट्रोंके निमंत्रणका कहीं बोलशेविक यह अर्थ न लगा लें कि, अब जब हम काबुलकी सीमाके निकट पहुंच रहे हैं तब मित्रराष्ट्रोंने भारतकी चिन्तासे लाचार हो हमारे प्रतिनिधि बुलाये हैं। उनके ऐसा समझनेसे कहना नहीं होगा कि वे अपने प्रतिनिधि न भेजेंगे और रूसकी अवस्था सुधारनेका मित्रराष्ट्रोंका सारा प्रयत्न निष्फल हो जायगा। जो हो, रूसकी वर्त्तमान अवस्था सभी मित्रराष्ट्रोंको संकटमें डाल रही है और वह भारतका पड़ोसी है

इससे ब्रिटेनको और भी अधिक चिन्ता होनी स्वभाविक है। बोलशेवकों की सेनाकी शक्तिका ठीक ठीक पता न होनेसे यह तो नहीं कहा जा सकता कि, वे भारतपर शीघ्र ही आक्रमण करनेकी चिन्ता करेंगे परन्तु यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि, भारतके इतने निकट पहुंच वे कमसेकम षड्यंत्र कर भारतमें अराजकता फैलानेकी पूरी चेष्टा करेंगे जिससे और नहीं तो भारतसरकारकी चिन्ता तो बढ़ ही जायगी।

सब स्वतन्त्र हों।

पेरिसमें मित्रराष्ट्रोंकी जो सन्धिपरिषद् जुड़ रही है उसमें इस समय संसारके सब राष्ट्रोंका एक संघ बनानेके विषयमें विचार छिड़ रहा है जिससे संसारमें शान्ति स्थापित की जा सके। अबतक राष्ट्रसंघके सम्बन्धमें जेनरल स्मट्स, लार्ड राबर्ट सेसिल आदिके विचार प्रकट हो चुके हैं। उनमें अनेक ऐसी बातें हैं जिनके आधारपर यदि राष्ट्रसंघ की प्रतिष्ठा होगी तो संसारमें शान्तिकी स्थापना तो दूर रही, निकट भविष्यमें ही भयङ्कर संग्राम छिड़े बिना न रहेगा। जेनरल स्मट्सकी स्कीम मित्रराष्ट्रों को पसन्द आयी है, यह जान हमें बड़ी चिन्ता हो रही थी। परन्तु एक तारसे मालूम हुआ था कि रा० विलसनकी स्कीम सबसे निराली है और उसमें सभी स्कीमोंकी खास खास बातें हैं यह जान हमें आशा हो रही थी कि स्वतन्त्रता देवीके उपासक रा. विलसन कदापि न्याय और स्वतन्त्रताके सिद्धान्तोंका हनन न होने देंगे। २५वींको संधि परिषद्में राष्ट्रसंघके सम्बन्धमें विचार करनेका श्रीगणेश रा. विलसनके भाषणसे हुआ और हर्षकी बात है कि वह भाषण हमारी आशाके अनुकूल ही हुआ है। उसमें राष्ट्रपतिने संसारकी शान्तिके लिये राष्ट्रसंघकी उपयोगिता सिद्ध करते हुए जिन सिद्धान्तोंपर उसकी स्थापनाकी आवश्यकता प्रकट की है यदि उन्हींके आधारपर राष्ट्रसंघ बना तो इसमें सन्देह नहीं कि बहुत अधिक समयतक संसारमें शान्ति विराज सकती है।

रा० विलसनके भाषणका सारांश यह है कि, मित्रराष्ट्रोंके प्रतिनिधि दो उद्देश्योंसे संधिपरिषद्में एकत्र हुए हैं; एक तो समरसे पैदा होनेवाले प्रश्नोंके निपटारेके लिये और दूसरे इन निपटारोंसे ही नहीं, बल्कि और भी प्रबन्धकर संसारकी शान्तिके लिये। दोनों ही बातोंके लिये राष्ट्रोंको एक संघ बनानेकी आवश्यकता है। कारण यह कि, उपस्थित प्रश्नोंके निपटारेमें कई ऐसे प्रश्न उपस्थित होंगे जिनका अन्तिम निश्चय यहां नहीं हो सकता। उनपर पीछे बहुत कुछ विचार कर परिवर्तन भी करना पड़ेगा। इस कामके लिये एक राष्ट्रसंघ बनाना अत्यन्त आवश्यक है। अपने नेताओंके कहनेपर लड़ाके देशोंके लोगोंने इसी लिये इतने धनजनकी हानि सही थी, क्योंकि उन्हें आशा थी कि समरके बाद ये नेता ऐसा प्रयत्न करेंगे कि फिर कभी ऐसी हानि सहनेका अवसर न उपस्थित होगा। इस लिये मित्रराष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंको कर्तव्य है कि वे ऐसा स्थायी प्रबन्ध करें जिसमें न्याय हो और शान्ति बनी रहे। यूरोप, एशिया या संसारके सभी भागोंकी राजनीतिमें पड़नेके विचारसे अमेरिका समरमें

नहीं पड़ा। अमेरिका समझता है कि, कुल संसार जान गया है कि, एक ही उद्देश्यके कारण समरका यह परिणाम हुआ है। वह उद्देश्य प्रत्येक स्थान और प्रत्येक प्रकारके आदमियोंके लिये न्याय और स्वतंत्रताका है। अगर यूरोपियन निपटारोंके कारण यह उद्देश्य न सिद्ध हो तो अमेरिका समझेगा कि, समरका हमारा सारा उद्योग ही व्यर्थ गया। अमेरिका उन यूरोपीय निपटारोंकी गारण्टी में तबतक भाग नहीं ले सकता जबतक उस गारण्टीमें ऐसी व्यवस्था न हो जिससे संसारके संयुक्त राष्ट्र सदा संसारकी शान्तिकी ओर ध्यान रखें। अब खास श्रेणीके लोग मानव जातिके शासक नहीं रहे हैं। मानव जातिका भाग्य अब कुल संसारके जन साधारणके हाथ है। उन्हें सन्तुष्ट कर लो तब समझो कि तुमने शान्ति स्थापित कर ली वैसा किये बिना शान्ति असम्भव है। हम संसारकी शान्ति, न्यायके भाव और इस सिद्धान्तमें नहीं दबेंगे कि, हम किसी जनताके मालिक नहीं हैं, बल्कि यहां इस लिये एकत्र हुए हैं कि ऐसा प्रबन्ध हो जिससे संसारकी प्रत्येक जनता अपने लिये शासक चुन सके और अपने भाग्यका स्वयं निर्णय करे और वह निर्णय अपनी इच्छाके अनुसार करे हमारी इच्छाके अनुसार नहीं।

रा० विलसनकी कही बातोंके सम्बन्धमें कभी किसी स्वातंत्र्य-प्रेमीको कुछ आपत्ति नहीं हो सकती। यदि वास्तवमें ही अमेरिका और रा० विलसनकी उक्त इच्छाके अनुसार केवल यूरोप ही नहीं, बल्कि एशिया तथा संसारके प्रत्येक भागकी जनताको न्याय-स्वतंत्रता और स्वभाग्य-निर्णयका अधिकार देकर राष्ट्र-संघकी स्थापना हो तो बहुत समयतक युद्धका कारण नहीं उपस्थित हो सकता। रा० विलसनने स्पष्ट शब्दोंमें कह दिया है कि यदि सब प्रकार और सब स्थानोंकी जनताको न्याय और स्वतन्त्रता न मिली तो मानव जातिकी आशा पूर्ण न होगी और अमेरिका तबतक यूरोपीय निपटारोंकी गारण्टीमें भाग न लेगा जबतक उनमें ऐसी व्यवस्था न हो जिसके अनुसार संसारके संयुक्त राष्ट्र सदा संसारकी शान्तिकी ओर ध्यान रखें। इससे पता चलता है कि, यदि सन्धि परिषद् अपने कर्त्तव्यसे च्युत होने लगेगी तो अमेरिका उसका साथी न होगा। सच तो यह है कि, यदि मित्रराष्ट्रोंको संसारमें शान्ति स्थापन करनेकी वास्तवमें इच्छा है तो उनके प्रतिनिधियों और नेताओंको रा० विलसनकी तरह उदार-चेता बन अपनेको प्रजाका सेवक समझना चाहिये, उसका मालिक नहीं। साथ ही जबतक संसारका कोई भी भाग थोड़ेसे अधिकारियोंकी स्वेच्छाचारिताका शिकार बना रहेगा तबतक संसारकी शान्ति असम्भव है।

इसमें सन्देह नहीं कि, रा० विलसनने जो उदारतापूर्ण बातें कही हैं और जिस दृढ़तासे स्वतंत्रता, न्याय और स्वभाग्य निर्णयके सिद्धान्तको कुल संसारमें स्थापनाका विचार प्रकट किया है उससे उन देशोंकी जनताके आनन्दका कोई ठिकाना न होगा जो दुर्भाग्यसे स्वतंत्रताके इस युगमें भी परतंत्रताके दुःख भोग रही और अधिकारिवर्गकी स्वेच्छाचारिता और अत्याचारका शिकार बन रही हैं। परन्तु स्वार्थ बड़ी बुरी चीज है। मनुष्य उचित और अनुचितका विवेक रखता हुआ भी स्वार्थके कारण अनुचित

कार्य करता रहता है। परन्तु ऐसे स्वार्थियोंकी सभी निन्दा करते और अन्तमें उनका कभी भला नहीं होता। अभीसे यह तो नहीं कहा जा सकता कि रा० विलसनको संसारके प्रत्येक भागमें स्वतंत्रताकी प्रतिष्ठाकर स्थायी शान्तिकी व्यवस्था करनेमें सफलता प्राप्त होगी या नहीं, पर यह निश्चय है कि, यदि स्थायी शान्ति स्थापित हो सकती है तो तभी जब प्रत्येक स्थान और प्रत्येक प्रकारकी जनताको न्याय और स्वतंत्रता प्राप्त हो और संधिसभा ऐसी व्यवस्था करे कि जिससे संसारकी प्रत्येक जनता वर्त्तमान अधिकारियोंकी इच्छाके अनुसार नहीं, बल्कि अपनी इच्छाके अनुसार अपने मालिक स्वयं चुन सके और अपने भाग्यका अपने आप निर्णय करे। अब हम पूछते हैं कि क्या ब्रिटेन संसारकी शान्ति नहीं चाहता? यदि चाहता है तो क्यों नहीं वह अपने साम्राज्यके प्रत्येक भागकी जनताको अधिकार दे देता कि वह अपने आप अपने भाग्यका निर्णय कर ले? उसे विशेष रूपसे याद रखना चाहिये कि भारतीय जनता भी यही अधिकार चाहती है और बिना यह अधिकार पाये वह सन्तुष्ट नहीं हो सकती। जिस भारत देशमें पृथ्वीके पांचमांश निवासी रहते हैं उसके असन्तुष्ट रहनेसे संसारमें शान्ति नहीं स्थापित हो सकती। यदि भारतके असन्तुष्ट रहनेके कारण संसारमें शान्तिकी स्थापना न हो सकी तो इसमें किसे सन्देह हो सकता है कि उसका सारा कलङ्क सभ्यताभिमानी इङ्गलैण्ड और अङ्गरेज जातिके सिर पड़ेगा।

राष्ट्र संघका विचार।

२६ वीं को सन्धिपरिषद्में राष्ट्र संघपर विचार होनेके पहले रा० विलसनने एक मार्केकी वक्तृता दी। उन्होंने कहा कि, हम दो उद्देश्य लेकर यहां एकत्र हुए हैं। पहला यह कि इस समरके कारण जो निपटारे होने आवश्यक हैं उन्हें करें और दूसरे संसारमें शान्ति स्थापित करें। इन दोनों ही उद्देश्योंके लिये राष्ट्रोंकाएक संघ बनाना मुझे आवश्यक जान पड़ता है। वर्त्तमान निपटारोंके सम्बन्धके कई पेचीले प्रश्न हैं जो शायद यहां हल नहीं हो सकेंगे और उनपर पीछे बहुतकुछ विचार करना होगा। यहां जो निर्णय होंगे उनमें बहुतोंमें पीछे परिवर्तन करना होगा। आवश्यक निपटारेके करनेसे बहुत अधिक काम करनेको हम यहां एकत्र हुए हैं। हम सरकारोंके ही नहीं, बल्कि जनताओंके प्रतिनिधि हैं। सरकारोंको सन्तुष्ट करनेसे काम न चलेगा। आवश्यक है कि हम मानवजातिको सन्तुष्ट करें। समरका भार लड़ाके राष्ट्रोंकी कुल जनताओंपर बेतरह पड़ा हुआ है। इन लोगोंने हमें आज्ञा दी है कि, ऐसी संधि करो जिससे हम सब सुरक्षित हों और फिर ऐसा भार हमपर न पड़े। मैं दावेसे कहता हूं कि लोग यह भार इसी लिये सह सके हैं, क्योंकि उन्हें आशा हो रही है कि, फिर ऐसा भार कभी न सहन करना होगा। इस लिये हमें ऐसा स्थायी प्रबन्ध करना है जिससे न्याय और शान्ति हो। हमारे एकत्र होनेका यही मुख्य उद्देश्य है। क्या यह आश्चर्यकी बात नहीं है कि, विज्ञानकी इतनी अधिक उन्नति सभ्यताके नाशके काममें लगायी गयी। पर अमेरिकाको इससे विशेष कोई वास्ता नहीं। अमेरिका का देश

और समुद्रतट इतना विस्तृत है कि, उसपर आक्रमण होनेका उतना भय नहीं है जितना अन्य कई राष्ट्रोंको है। अमेरिकाका उत्साह भयके कारण नहीं, वल्कि उच्च आदर्शोंके कारण है।

रा० विलसनने कहा कि समरमें पड़नेके समय अमेरिकाको क्षणभरके लिये भी यह ध्यान नहीं हुआ कि वह यूरोप, एशिया या संसारके प्रत्येक भागकी राजनीतिमें पड़ता है। अमेरिका समझता है कि संसार जान गया है कि समर में इसी उद्देश्यके कारण जीत हुई है कि प्रत्येक स्थान और प्रत्येक प्रकार के लोगोंको न्याय और स्वतन्त्रता प्राप्त हो। अगर यूरोपियन निपटारोंके कारण यह उद्देश्य पूरा न हो तो अमेरिका समझेगा कि हमारा सब उद्योग ही व्यर्थ हुआ। अमेरिका उन यूरोपियन निपटारों की गारण्टीमें भाग नहीं ले सकता जबतक उस गारण्टीसे यह व्यवस्था न हो कि संसारकी शान्तिकी ओर संसारके संयुक्त राष्ट्र सदा ध्यान रखें। इस लिये मैं राष्ट्रसङ्घ अत्यन्त आवश्यक समझता हूं। वह राष्ट्रसङ्घ दिखावटी, सामयिक और आवश्यकता पूर्तिके लिये कभी कभीकी वस्तु न हो, बल्कि उस का जारी रहना अत्यन्त आवश्यक हो और उसके कर्त्तव्य सदा करनेवाले कर्त्तव्य हों। उसके कामोंके बीचमें कभी छुट्टी न हो। वह आंख ऐसी हो जो झपकी न ले। वह ऐसी हो कि सर्वत्र उस की दृष्टि सावधानीसे पड़ती रहे। यदि राष्ट्रसंघ आवश्यक न करेंगे तो हम जनताओंकी आशाएं न पूर्ण कर सकेंगे। सभी राष्ट्रोंकी जनताका ध्यान इसी मुख्य प्रश्न की ओर लग रहा है।

सज्जनों, अब खास खास श्रेणीके लोग मानवजातिके शासक नहीं रहे हैं। अब मानवजातिका भाग्य कुल संसारके जनसाधारणके हाथ है। उन्हें सन्तुष्ट करनेसे ही उनकी आशा पूरी कर सकोगे—यही नहीं शान्ति स्थापन कर लोगे। उन्हें सन्तुष्ट करनेसे चूके तो तुम्हारे किसी भी प्रबन्धसे संसारमें शान्ति नहीं स्थापित हो सकती और न दृढ़ हो सकती है। राष्ट्रसंघकी स्थापनाका प्रश्न हमारे सब उद्देश्योंका मूल है इसीसे अमेरिकन प्रतिनिधियोंका इसकी ओर विशेष ध्यान है। यदि मूल प्रोग्रामकी पूर्तिका शक्तिभर उद्योग किये बिना हम अमेरिका लौटेंगे तो हमें अमेरिकन प्रजातन्त्रकी जनताकी निन्दाका पात्र होना पड़ेगा। उसे आशा है कि हमारे नेता जनताके विचार प्रकट करेंगे, अपने निजके उद्देश्य नहीं। हमें जनताकी यह आज्ञा माननेके सिवा और कोई मार्ग नहीं है। साथ ही उसे माननेमें हमें अत्यन्त उत्साह और प्रसन्नता है। हमें जो बातें कहनेकी जनताने आज्ञा दी है उनमें एक भी कम करनेका साहस हम नहीं कर सकते। हम संसारकी शान्ति, न्यायके भाव और इस सिद्धान्त-विषयमें थोड़ा भी नहीं दब सकते कि हम किसी जनताके मालिक नहीं हैं, बल्कि यहां ऐसा प्रबन्ध करानेको आये हैं जिससे संसार की प्रत्येक जनता अपने मालिक आप चुने और अपने भाग्यका आप अपनी इच्छाके अनुसार निर्णय करे हमारी इच्छाके अनुसार नहीं।

राष्ट्रपतिने अन्तमें कहा कि हम यहां इस समरके कारणोंका अन्त करनेको एकत्र हुए हैं। समरका कारण बड़े राष्ट्रोंका छोटोंपर आक्रमण करना और शासनमें रहनेकी इच्छा न रखने वाली जनता को जबर्दस्ती अधी-

नतामें रखना तथा कुछ लोगोंका मानवजातिपर स्वेच्छानुसार आचरण करना हैं। जबतक संसार इन दोषोंसे छुटकारा न पायेगा तबतक शान्ति न होगी। अमेरिकन प्रतिनिधि आवश्यकताके अनुसार मार्ग नहीं निकालते क्योंकि उनके सिद्धान्त अटल हैं। परमात्माको धन्यवाद है कि, उन्हीं सिद्धान्तोंके आधारपर सब ...रशीलोंने निपटारेका निश्चय कि...। अमेरिकन लड़ाई जीतनेका नहीं, सिद्धान्तकी जीतके लिये समरमें पड़े थे। अब मेरा कर्त्तव्य है कि, जिन सिद्धान्तोंके लिये हमने उनसे लड़नेको कहा था वे स्थापित हों। मुझे हर्ष है कि, मैं इस कार्यके लिये अकेला नहीं हूं।

जर्मन जेपलिन।

'डेली एक्सप्रेस'के विशेष संवाददाता मि० ए० जे० श्रीथवाल ने क्षणिक् सन्धिके बाद जर्मनी जाकर वहांसे गत चौथी दिसम्बरको एक पत्र भेजा जिसमें लिखा है कि "फर्डिनेण्ड रश नामक जर्मन पहले जलसेनाके एक अफसर थे और अब बर्लिनके पास स्टाकनके एक कारखानेके मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर हैं जहां जेपलिन बनते हैं। उन्होंने मुझे कारखाना दिखाया। हम लोग और फ्रेंच जिन जर्मन हवाई जहाजोंको गोथा कहते थे वे गोथा नहीं थे। स्टाकनमें बननेके कारण उनके नाम भी स्टाकन्स ही थे। सबसे पहले लण्डन और पेरिसपर आक्रमण करनेवाले जर्मन हवाई जहाज तो गोथा ही थे, पर बादके सब स्टाकन्स थे।

युद्ध छिड़नेपर ही स्टाकनमें जेपलिन बनानेका कारखाना खोला गया। इसका घेरा सैकड़ों एकड़ है और इसमें ३००० मजूर काम करते हैं। हवाई जहाज रहनेके भवनमें जाकर मैंने ४३ स्टाकन्स देखे। ये सब काले हैं और इनके नीचेके प्रत्येक पंखपर बड़े बड़े सफेद क्रासके चिन्ह हैं। इनके पंख १४० फुटके फैलावमें हैं और नाकसे पूंछतककी इनकी लम्बाई ७२ फुटकी है। इनमें प्रत्येक २५० घोड़ोंकी ताकतकी ५ मोटरें हैं और ६ मेशीन तोपें रहती हैं। स्टाकनपर एक कमाण्डर, दो मार्गदर्शक, एक बेतारके तारसे बात करनेवाला, एक पीट्रोल देनेवाला और तीन अन्य रासायनिक रहते हैं। यह १। टन अथवा ३५ अङ्गरेजी मनसे अधिक बम लादकर १३३०० फुटकी उंचाईपर चढ़ घण्टेमें ८१ मीलके हिसाबसे १४ घण्टे तक उड़ सकता है। अटलाण्टिक महासागर पार जाने योग्य एक हवाई जहाज बन रहा है। उसके पंखोंका फैलाव १६८ फुट और इंजनमें तीन हजार घोड़ोंकी ताकत होगी।

क्षणिक् सन्धि होते देर नहीं लगी कि उक्त श्रेणीके हवाई जहाज पैसेंजर जहाज बनाये जाने लगे। कारखानेवालोंका विचार है कि सब देशोंकी राजधानियोंसे बर्लिनका हवाई जहाजका सम्बन्ध जोड़ दिया जाय। उड़ते हुए हवाई जहाजसे उतरनेके लिये छातेकी शकलका एक यंत्र सी रहता है।

हवाई जहाजके विभागमें मुझे मालूम हुआ कि गत २१वीं नवम्बरको ८ बजे सवेरे एक जेपलिन बलगेरियाके जमबोली स्थानसे २५ टन गोला बारूद तथा दवाएं लादकर जर्मन पूर्वी अफ्रिकाको रवाना हुआ था। उसपर २२ आदमी सवार थे। २२ २३की रातको जेपलिन मिश्रके खार्तूम नगरके ऊपर पहुंच गया। वहां उसे नौयनसे तार मिला कि रूटरके तारसे पता चला है कि वोन लिटो वोरवककी सेनाके अधिकांशने आत्मसमर्पण कर दिया है इस लिये बर्लिन लौट आओ। जेपलिन तार पा २५वीं नवम्बरको जेमबोली लौट आया। हर रश कहते हैं कि वह हवाई जहाज बर्लिनसे न्यूयार्कतक बिना कहीं ठहरे जा आ सकताथा। फ्रीडरिक्शफेनके कारखानेमें एक हवाई जहाज बन रहा है जिसमें ६ इंजन होंगे और एक सौ आदमी सवार हो सकेंगे। शान्ति हो जानेपर जुलाईमें वह पहलेपहल उड़ेगा और ४० घण्टेमें अमेरिका पहुंचेगा।

स्वतन्त्रताकी घोषणा।

अन्तमें ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंकी अदूरदर्शिताके कारण आयर्लैण्ड-में उपद्रव खड़ा ही हो गया। साम्राज्यके भीतर स्वराज्य मांगते हुए आयर्लैण्डके राष्ट्रीयदलके नेता मि० जान रेडमण्ड मर गये, पर ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंको अबतक कोई ऐसी युक्ति नहीं सूझी कि वे आयर्लैण्डको अपना मित्र बनाये रखते। राजनीतिज्ञोंकी निर्बलता, अदूरदर्शिता और स्वेच्छाचारिताका जो बुरा परिणाम सदा सर्वत्र हुआ करता है वही आयर्लैण्डमें भी हुआ। जब आयर्लैण्डवालोंने देख लिया कि, इङ्गलैंड हमारा न्यायसिद्ध अधिकार स्वराज्य हमें मांगनेसे न देगा तब कुछ नवयुवकोंने देशभक्ति और स्वतन्त्रताकी प्रबल उमंगमें आकर जबर्दस्ती स्वराज्य लेनेकी ठानी। उन नवयुवकोंके साथ आरम्भमें बहुत थोड़ेही आदमी थे, पर आयरिश जनता ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंसे निराश तो हो ही रही थी इसी लिये उन नवयुवकोंका सीनफीन दल दिनपर दिन बड़ी शीघ्रतासे जोर पकड़ने लगा। अन्तमें उन्होंने १९१६की २४वीं अप्रेलको आयर्लैण्डमें बलवा कर दिया। कोई एक हफ्तेके गदरके बाद आयर्लैण्डमें शांति स्थापित की जा सकी और बलवेका प्रत्यक्ष कुछ फल न हुआ। परन्तु अप्रत्यक्ष रूपसे सीनफीनदलके बढ़नेमें उससे बड़ी सहायता मिली क्योंकि जो लोग पकड़े गये थे वे शीघ्र ही छोड़ दिये गये और उनका उत्साह पहलेसे भी कई गुना अधिक हो गया। अब वे खुल्लमखुल्ला गदर के लिये लोगोंको उत्तेजित करने लगे और पुलिससे हथियारतक छीननेमें उन्हें कुछ भय न हुआ। दो वर्षके भीतर ही सीनफीनदलकी शक्ति बहुत बढ़ गयी और वे जर्मनीसे सहायता प्राप्त कर गदर करनेका विचार करने लगे। परन्तु ब्रिटेनके सौभाग्यसे षड्यंत्रका भण्डा फूट गया और गत वर्षके मई मासमें जर्मनीके भेजे हुए बहुतसे शस्त्रास्त्र राहमें छीन लिये गये तथा प्रसिद्ध प्रसिद्ध सीनफीन नेता गिरफ्तार कर लिये गये जिससे समरकालमें ब्रिटेनके ऊपरसे एक बड़ी भारी आपत्ति टल गयी। नेताओंके पकड़े जानेके बाद दूसरे नेताओंने उनका कार्य सम्भाला और सीनफीनदलका इतना जोर बढ़ा कि, यूनियनिस्टोंकी तो बात दूर रही राष्ट्रीय दल भी उसके सामने मात हो गया और पार्लमेण्टके पिछले निर्वाचनमें इस दलके ७३ मेम्बर चुने गये यद्यपि इसके पहले दो चारसे अधिक न थे।

एक ओर तो सीनफीन दल इतनी असाधारण उन्नति कर रहा था, पर दूसरी ओर ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंके कानपर जूं तक नहीं रेंगती थी। अब भी उन्हें समयकी गतिका पता न चल सका जिसका फल यह हुआ कि, २१वीं जनवरीको सीनफीनरोंने आयर्लैण्डकी स्वतन्त्रताकी घोषणा कर अपना प्रजातन्त्र बनानेकी सूचना निकाल दी। डबलिनके मैनसन हाउसमें उनकी जो कंस्टीट्युएण्ट असेम्बुली जुड़ी थी उसने यह भी प्रस्ताव पास किया कि अङ्गरेजी फौज आयर्लैण्डको खाली कर जाय। इस तरह ब्रिटेनके राजनीतिज्ञोंके अनेक बारकी की हुई प्रतिज्ञाओंके भङ्ग करने और आयर्लैण्डवासियोंकी न्यायपूर्ण आकांक्षापर पादाघात करनेका बुरा फल ब्रिटेनके सामने ऐसी समय आ उपस्थित हुआ है जब

सन्धिसभामें अपने उद्देश्योंकी पूर्तिके लिये उसे भीतरी और बाहरी शान्ति तथा शक्तिकी बड़ी भारी आवश्यकता है। स्वतन्त्रताकी घोषणाके सम्बन्धमें जो समाचार आये हैं वे रूटर या सेंसरकी कृपासे अत्यन्त संक्षिप्त हैं और उनसे यह पता नहीं चलता कि, ब्रिटेनके विरुद्ध सीनफीनरोंके घोषणा करनेपर भी आयर्लैण्डके ब्रिटिश अधिकारियोंने क्या किया? प्राप्त समाचारोंसे यही पता चलता है कि, आयर्लैण्डके चीफ सेक्रेटरी मि० इयान मेकफर्सनने लार्ड लेफटेनेण्ट, प्रधान सेनानायक तथा कानूनी अफसरोंसे बातचीत की है। इस बातचीतका तात्पर्य समझमें नहीं आता, क्योंकि सीन फीनरोंने २१वींको जो कुछ किया उसकी घोषणा वे बहुत पहलेसे कर चुके थे। इस लिये चीफ सेक्रेटरीको बातचीत करनेके लिये पहले भी बहुत समय मिला था। जो हो, ब्रिटिश गवर्नमेण्टके सामने [अब] बड़ा सङ्कटपूर्ण समय उपस्थित हो गया है। अब देखना यह है कि वह किस प्रकार उसका सामना करती है।

रूटरने जो समाचार भेजे हैं उसमें कहा गया है कि, मैनसन हाउसमें स्वतन्त्रताकी घोषणाके समय केवल २६ मेम्बर ही उपस्थित थे। इससे शायद उसका भी यही उद्देश्य हो जो यहांके ऐंग्लो—इण्डियन पत्रोंने समझा है कि, इतने थोड़े मेम्बर कुल आयर्लैण्डका प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते। कुल २६ ही मेम्बर चुने गये हैं या अधिक चुने गये हैं, पर हाजिर इतने ही थे, प्राप्त समाचारोंसे यह बात स्पष्ट नहीं होती। किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि, दो दो बारके धोखा खाये हुए सीनफीनर नेता इस समय बहुत सोचविचार कर काम करते होंगे और बहुत सम्भव है कि, किसी चालसे ही सभामें केवल २६ मेम्बर उपस्थित हुए हैं। जो हो, प्राप्त समाचारोंसे स्पष्ट है कि आयर्लैण्डकी अवस्था बिल्कुल छिपायी गयी है, इससे सीनफीनरोंके इस असाधारण कार्यके सम्बन्धमें अभी विशेष कुछ नहीं लिखा जा सकता। आयर्लैण्डके नये प्रजातंत्रने संधिसभाके लिये अपने नेता काउंट प्लंकेट डी० वेलेरा और अर्थर ग्रिफिथसको अपना प्रतिनिधि चुना हैं और स्वतन्त्र राष्ट्रोंसे आयर्लैण्डकी स्वतंत्रता स्वीकार करनेकी अपील की गयी है। ये तीनों ही नेता पिछले उपद्रवोंमें भाग लेनेके कारण जेलकी हवा खा आये हैं और काउंट प्लंकेट तो हालमें ही छोड़े गये हैं जब वे पार्लमेण्टके मेम्बर चुने गये थे। फादर ओफ्लागन पहले ही कह चुके हैं कि आयर्लैण्डके प्रतिनिधि सन्धिसभाका दरवाजा खटखटाये विना न रहेंगे इससे यह आशा करनी अनुचित नहीं कि चुने हुए ये प्रतिनिधि पकड़ न लिये गये तो बिना बुलाये ही वर्सेलीजकी संन्धिसभाके दरवाजेपर जा डटेंगे। उस समय स्वतंत्रताके हामी प्रे० विलसन और अमेरिकाको स्वतंत्रता पानेके लिये सहायता देनेवाला फ्रांस क्या करेगा वह दर्शनीय दृश्य होगा।

पार्लमेण्टके चुनावमें सीनफीनरोंकी जीतसे यह तो स्पष्ट ही हैं कि जनताका एक बहुत बड़ा भाग उनके साथ है। ऐसी अवस्थामें यदि सीनफीन या प्रजातंत्री दलके दमनकी चेष्टाकी जायगी तो ब्रिटिश सरकारको निश्चय ही वहां लोहेके चने चावने पड़ेंगे, क्योंकि सीनफीनर शस्त्रास्त्रसे सुसज्जित हैं। किसी देशकी जनताकी इच्छाके विरुद्ध उसपर अधिक

समयतक शासन करना बड़ीसे बड़ी शक्तिके लिये भी असम्भव हैं। पर खेद है कि स्वभाग्यनिर्णय के सिद्धान्तका पक्ष लेकर भी ब्रिटेन आयर्लैण्डमें असम्भवको सम्भव करनेकी जिद्द नहीं छोड़ता है। हम आयर्लैण्डवालोंको वर्त्तमान स्थितिके लिये दोष नहीं दे सकते, क्योंकि आयर्लैण्डको होमरूल देनेका निश्चय कर चुकनेपर भी ब्रिटिश राजनीतिज्ञ टालमटोल करते आ रहे हैं इस लिये उसके परिणाम-स्वरूप निराश हुए सीनफीनरोंका यह कार्य प्रकृतिके विरुद्ध नहीं हैं। ब्रिटिश साम्राज्यका–जिसमें अभी आयर्लैण्ड भी शामिल है—इसीमें भला है कि वह सहर्ष आयर्लैण्डका नैसर्गिक अधिकार स्वीकार करले और व्यर्थकी खूनखराबीसे सम्राज्यको बचावे। साथही उसे चाहिये कि आयर्लैंडका उदाहरण सामने रख भारतके सम्बन्धमें अब भी दूरदर्शिता दिखावे।

रमता योगी।

पुलिसकी कड़ाई भारतसे हट ने नहीं पाती। उसका सामना करनेवाले जब राजद्रोही बन जाते हैं तो फिर उसकी बात क्यों न चले।

सन्धिसभामें फैसला हो जाना चाहिये कि भारत सदाके लिये परतन्त्र ही रहेगा। वह परतन्त्रताके ही योग्य हैं क्योंकि बड़े आदमी तो सरकारी उपाधियोंसे जन्म सफल कर लेते हैं।

सर सिंह लार्ड बना दिये गये हैं। क्या गोरे पत्रोंको आजकल खाना हजम होता है या कोई खास चूर्ण इनके हाजमेके लिये तैयार कराना होगा।

जर्मनीसे क्षतिपूर्ति करानी भारत ठीक नहीं समझता। दुश्मनको शरणमें आता देख भारतीय उसे मित्र ही मानने लगते हैं। हमारी सभ्यता इतनी बिगड़ी हुई हैं।

आयर्लैण्डवाले जबर्दस्ती संधि सभामें घुस जानेको तैयार बैठे हैं। नङ्गोंसे भगवानको भी भय होता है। आजकल भलमनसाहत से काम भी नहीं होता।

गरीब भूख लगनेपर हल्ला क्यों मचाते हैं। वे सेठोंकी तरह परमेश्वरसे यह वरदान क्यों नहीं मांगते कि एक छटांक अन्न भी हजम न हो।

ब्राह्मण अब वेदशास्त्र पढ़ना क्यों छोड़ते जाते हैं। टका धर्म और टका कर्मके जमानेमें वे भी तो लङ्गोटी बांधकर नहीं रह सकते। सेठजीके जमादार तो दरवाजेपर पैर ही न रखने देंगे।

लो॰ तिलक विलायतमें टोप तो लगाते न होंगे। वे फिर संधि सभामें कैसे भेजे जा सकते हैं।

सरकार अध्यापकोंको यदि अधिक वेतन देने लग जाये तो उनका मन विज्ञानवेके फेरमें पड़ जाये इसीसे वे भूखे रखे जाते हैं।

भारतमें अकालने अपना डेरा बेतरह जमा लिया है। इस समय पूरे योगियोंकी जरूरत है जो इसे योग द्वारा मार भगायें।

पुलिस प्रजाको यदि तंग न तो उसका डंडा कभी पुजे ही करें नहीं। अपनी पूजा भला कौन नहीं कराना चाहता।

रायबहादुरीके उम्मेदवार.

सेठजी—साहब बहादुर किसी तरह मुझे राय बहादुरी दिलाइये। मेरा सारा माल आपके सामने हाजिर है मैं दान पुन्य न कर आपही को दूगां।

साहब—बहुत अच्छा सेठ। मैं आपके लिये कोशिश करूंगा। रायबहादुरीके सामने दान पुन्यमें रखा ही है।

नया सुभीता।

जो हमारे दैनिक विश्वमित्रको असमर्थताके कारण नहीं पढ़ सकते वे एकबार कड़ा दिलकर दो रुपया भेज दें। एक साल तक बराबर साप्ताहिक पत्र पायेंगे। यदि वे चाहें तो १) ही भेजकर ६ महीने तक पत्रका आनन्द लूटें। साप्ताहिकमें दैनिककी सभी विशेषतायें रखनेका खास ध्यान रखा जाता है।

सेवा और मेवा।

हिन्दी साहित्यके सेवी पत्रकी एजेन्सी लेकर २५) सैकड़ा घर बैठे कमा सकते हैं उन्हें डाक व्यय भी न देना होगा पहले ५) जमा कराने होंगे। दो पैसा देकर भला कौन इस जमानेमें हर रोज पत्र न पढेगा एक शहर या कस्बेमें कमसे कम पचास प्रतियां आसानीसे बिक सकती हैं।

पुस्तक विभाग।

हम दूसरेकी पुस्तकें विज्ञापन देकर बेचते हैं जिन्हें पुस्तकें बिकवानी हों हमसे लिखा पढ़ीकर सब बातें तय करलें हम उचित पारितोषिक देकर पुस्तकें प्रकाशित करते हैं।

आफिसका पता—मैनेजर विश्वमित्र कार्यालय,

बडा बाजार कलकत्ता।

तारका पता—'VISHWAMITR'

पंच रत्न देखिये

भारत शासन सुधार——यह भारतसम्बन्धी शासन और वर्तमान सुधार स्कीम जाननेका अद्वितीय पुस्तक है। मूल्य ॥)

स्वराज्यकी धूम——देशके नेता स्वराज्यके सन्बन्धमें क्या कहते हैं यदि यह जानना हो तो मनोहर पुस्तकका एक बार अवलोकन कीजिये। मूल्य ॥)

जर्मनीकी राज्य व्यवस्था——जर्मनीका शासन किस प्रकारका होता है यह इस महा-समरके कारण जानना बहुत जरूरी हो गया है। हिन्दी संसारमें यह सर्वथा नयी पुस्तक है। मूल्य ॥)

तिलककी जीवनी——भारतके हृदयसम्राट् देशके परमपूज्य नेताका जीवनचरित्र पढ़नेसे मन प्रसन्न और आत्मा बलवान् होती है। ऐसा जीवन चरित्र अभीतक हिन्दी संसारने नहीं पाया था। मूल्य ॥)

ऐयर चरित्र——देशभक्त डा० ऐयरने वर्तमानकालमें जो निर्भीकता दिखायी वह इतिहासमें स्मरणीय रहेगी। आपका जीवन आदर्श है। यह पुस्तक बड़ी खोजके साथ लिखी गयी है। मूल्य ॥)

चार आनेमें उत्तम पुस्तिकायें--तिलकका भाषण ≈) सत्याग्रहकी धूम ‐) ऐयर पत्र ‐) **स्वराज्यवीणा** ॥≈)

मेनेजर——'विश्वमित्र कार्यालय।'

बड़ाबाजार कलकत्ता

'बनर्जी प्रेस' १३ नारायण प्रसाद बाबू लेन कलकत्तामें श्री आशुतोषबनर्जी द्वारा मुद्रित।

Registered.877

कामये दुःखतप्तानाम् प्राणिनामार्त्तिनाशनम् ॥

वर्ष १

संख्या ५

प्रकाशक—

विश्वमित्र कार्यालय।

कलकत्ता।

एक वर्षका मूल्य १)

एक प्रतिका मूल्य ⸗)

* श्रीहरिः *

विश्वमित्र ।

* कामये दुःख तप्तानां प्राणिनामार्ति नाशनम् *

खण्ड १ } माघ संवत् १९७५ वि० फरवरी सन् १९१९ { संख्या ५

नया जर्मनी ।
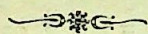
प्राप्त होनेवाले समाचारोंसे अब यह भली भांति निश्चय हो गया है कि जर्मनीमें प्रजातंत्र राज्य की स्थापना हो गयी है । जर्मनीकी राष्ट्रसभाके चुनावका समाचार कोई दो सप्ताह पहले आ चुका है जिससे पता चलता है कि उस के लिये कुल ४२१ प्रतिनिधि चुने गये जिनमें १६४ मेजारिटी सोशलिस्ट, ८८ सेण्टरिस्ट, ७७ जर्मन डिमोक्रेट, ३४ नेशनल पीपुल पार्टी, २४ इनडिपेण्डेण्ट सोशलिस्ट २३ जर्मन पीपुल पार्टीके और ११ मेम्बर ऐसे हैं जो किसी दलके नहीं हैं । अब एक तारसे मालूम हुआ है कि जर्मन राष्ट्रसभाने हर ऐबर्टको जर्मन राज्यका राष्ट्रपति चुना है । ये हर ऐबर्ट क्षणिक संधिके समय प्रिंस मैक्सके स्थानपर जर्मन चांसलर बनाये गये थे । हर ऐबर्ट एक दर्जीके लड़के हैं । १९१२ ई०में ये जर्मन रीक्सटागके मेम्बर हुए और एक ही वर्ष बाद साम्यवादी दलके नेता बनाये गये थे । विलायती पत्र 'डेली मेल'का कहना है कि हर ऐबर्ट एक जबर्दस्त और नेताके गुणोंसे पूर्ण हैं । इस तरह जर्मनी में भी प्रजातंत्र राज्यकी स्थापना का कार्य पूरा तो हो गया, परन्तु अभीतक निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता कि इस नये जर्मनीमें पुराने जर्मनीके कौन कौनसे राज्य शामिल नहीं हैं । यद्यपि कई दिन पहले कई पश्चिमी जर्मन राज्योंके सोवियटके अधीन अपना पृथक् प्रजातन्त्र स्थापन करनेकी घोषणाकी बात कही गयी थी किन्तु फिर कोई समाचार नहीं आया । जो हो, अब जर्मन राष्ट्र सभाका सङ्गठन हो जानेसे संसार यह नहीं कह सकता कि कैसरके पतनके बाद जर्मनीमें अभीतक कोई स्थायी सरकार नहीं बनी है । इधर जर्मन बोलशेविक स्पा

टसिस्टोंके उपद्रवके भी कोई विशेष समाचार नहीं आते हैं, इससे स्पष्ट है कि जर्मनीमें जिस प्रजातंत्र राज्यकी स्थापना हुई है वह कमसे कम कुछ समयके लिये तो अवश्य स्थायी है। हर ऐवर्टकी सरकार ही जर्मनीकी ओरसे संधिपत्रपर हस्ताक्षर करेगी, इसमें अब कोई सन्देह नहीं जान पड़ता।

नये जर्मनीकी भावी नीति क्या होगी, इसका अनुमान तबतक नहीं किया जा सकता जबतक पहले यह न जान लिया जाय कि, जर्मन जनताने जिनके हाथमें जर्मनीके शासनकी बागडोर थमायी है वे कैसे विचारोंके हैं। हर ऐवर्ट समर कालतक उन जर्मनोंमेंसे थे जो संसारपर जर्मनीका प्राधान्य चाहते थे। साम्यवादी होते हुए भी उन्होने युद्धका पक्ष लिया था और युद्धके व्ययके लिये धनके प्रस्तावके समय सदा वे जर्मन गवर्नमेण्टके पक्षमें वोट दिया करते थे। जर्मन प्रजातंत्रके पहले प्रेसिडेण्ट होकर हर ऐवर्ट किस नीतिसे काम करेंगे, यह तो समय ही बतावेगा। पर इसमें सन्देह नहीं कि, वे जर्मनीके इस बुरे समयमें भी दृढ़ बने हुए हैं। एक सप्ताहसे कम ही हुआ जब जर्मन राष्ट्र सभा खुलनेके समय उन्होंने अपने भाषणमें कहा था कि, अन्तरंग राष्ट्र अपने सन्धिके विचारोंमें लूट और बदलेको स्थान दे रहे हैं।" उन्होंने यह भी कहा था कि, यदि ऐसा ही रहा तो जर्मनी सन्धिकी बातचीतमें भाग न लेगा। राष्ट्र संघमें जर्मनीको सब राष्ट्रोंके समान अधिकार मिलने चाहिये जर्मन जनताकी रक्षाके लिये उन्होंने एक मजबूत सेना बनानेकी भी बात कही थी। हर ऐवर्टकी भावी नीति चाहे जो हो, पर इसमें कुछ सन्देह नहीं कि, जर्मनीके नामपर वे जो कुछभी करना चाहेंगे सहज ही कर सकेंगे क्योंकि जर्मन राष्ट्र सभामें काफी बहुमत प्राप्त हैं।

जर्मनीकी जनताने हृदयसे प्रजातंत्रके गुणोंपर मुग्ध हो उसकी स्थापना की है या सन्धि-सभामें नरम शर्तें करानेके उद्देश्यसे, इसका कुछ निश्चय नहीं है। परन्तु जो खबरें जर्मनीके सम्बन्धमें आती हैं उनसे स्पष्ट है कि जर्मनीको यद्यपि अपने दुर्भाग्यवश हारना पड़ा है किन्तु वह अपनेको पूर्ण पराजित हुआ नहीं मानता है। एक तरहसे है भी यही बात। जहांतक मालूम हुआ है आज भी जर्मनीकी बड़ी भारी सेना बनी हुई है और सुप्रसिद्ध जेनरल हिंडेनबर्ग आज भी जर्मन सेनाके प्रधान नायक बने हुए हैं। उन्होंने समय समयपर जर्मनीकी रक्षा करनेकी गर्वयुक्त बातें कही हैं और १८ डिवीजन पूर्वी युद्धक्षेत्रपर तैयार कर रखे हैं। पिछले बारके क्षणिक संधिके समझौतेके अनुसार जर्मनीसे जो गोताखोर और व्यापारिक जहाज मांगे गये थे वे भी मित्रराष्ट्रोंको नहीं दिये गये हैं। क्षणिक सन्धिके जर्मन प्रतिनिधि अब खुलमखुला कहने लगे हैं कि, हम वही संधि स्वीकार करेंगे जिसमें ऐसी बात न हो कि जर्मनी हार गया है। इतना ही नहीं, क्षणिक संधिकी शर्तो के अनुसार जर्मनीको रूससे अपने सब सैनिक लौटा लेने चाहिये थे, पर प्राप्त समाचारोंसे मालूम होता है कि, अब भी जर्मन अफसरोंकी अधीनतामें ही बोलशेविक सेना यूराल युद्धक्षेत्रपर लड़ रही है। इन बातोंसे स्पष्ट है कि, जर्मनी यद्यपि इस समय फिर युद्ध छेड़ने योग्य नहीं दिखता है, पर उसमें अब

भी बहुत कुछ शक्ति है और उसकी महत्वाकांक्षा पहलेकी तरह ही बनी हुई है। जिन हर ऐ-बर्टको शासनका भार सौंपा गया है वे तथा उनके सहयोगी भी जबर्दस्त और दावपेंचके आदमी हैं।

जर्मनी युद्धक्षेत्रपर हार गया है सही, पर उसकी सेनासे अधिक शक्ति उसकी कूटनीतिमें रही है। सारी बातोंपर खूब विचार करनेके बाद हमारा यही अनुमान है कि, संधि किसी न किसी प्रकार हो तो जायगी, पर यदि संसारके प्रत्येक देशको स्वभाग्यनिर्णयका अधिकार न दिया गया और हर्जाना लिये तथा दूसरेकी भूमि दबाये बिना संधि न की गयी तो यह संधि शीघ्र ही एक दूसरे प्रलयकारी युद्धका कारण सिद्ध होगी। हम समझते हैं कि जर्मनी मित्रराष्ट्रोंको तंग करनेके लिये रूसकी बोलशेविक सरकारको अपनी मुट्ठीमें रखेगा और जबतक वह स्वयं खुलकर ब्रिटेन तथा अन्य कई मित्र-राष्ट्रोंसे लोहा न लेगा तब तक वह बोलशेविकों द्वारा मित्र राष्ट्रों और विशेषकर ब्रिटेनको तंग करता रहेगा। संसारमें अब यह बात छिपी नहीं है कि मुख्य करके जर्मनी और ब्रिटेनकी पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विताके कारण ही यह महासमर छिड़ा था जर्मनीकी दृष्टि भारतपर थी, यह बात भी भली भांति प्रकट हो गयी है। इस लिये जबतक भारत स्वभाग्यनिर्णयका अधिकार प्राप्त कर ब्रिटेनसे सन्तुष्ट न हो जायगा तबतक जर्मनी भारतपर लालचभरी नजरोंसे देखता रहेगा, क्योंकि भारतके पड़ोसी रूसको मित्र पा वह सदा भारतके असन्तोषसे लाभ उठानेका अवसर ताकता रहेगा। यह दूसरी बात है कि सदाके राजभक्त भारतीय उसके मायाजालमें न फंसें! हमारी पक्की धारणा है कि जबतक भारतके प्रश्नका ठीक ठीक निपटारा न किया जायगा तबतक नया जर्मनी भी पुराने जर्मनीकी तरह बड़े बड़े मनसूबे बांधता रहेगा और भूतकालकी तरह ही भविष्यमें भी हर समय युद्धाग्नि भड़कनेकी सम्भावना बनी रहेगी।

नेताओ सावधान!
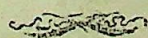
माँटेगू स्कीम प्रकाशित होनेके कुछ पहलेसे ही माडरेट नेताओंके कार्य इस ढङ्गके हो रहे हैं कि कोई नहीं कह सकता कि वे अपनी कमजोरीके कारण भारतका कब और कितना अनर्थ कर बैठेंगे; राष्ट्रीय महासभा कांग्रेससे पृथक् हो वे अपने स्वेच्छाचारी स्वभावका खूब परिचय दे चुके हैं। अपनी पिछले दिनोंकी करनीके कारण आज वे जहां जाते हैं वहीं जनसाधारण उन्हें देशद्रोही कहकर धिक्कारते हैं। जो सुरेन्द्रबाबू तथा अन्य माडरेट कुछ ही पहले केवल माडरेट दल के ही नहीं बल्कि देशभरकी प्रतिष्ठाके भाजन बने हुए थे वे हो आज ऐसे गिर गये हैं कि उनका नाम लेना भी जनताको इष्ट नहीं है। जो मनुष्य अपने घरमें अपने भाइयोंसे तो लड़ता रहता है पर बाहरी आदमियोंके मुकाबले वह अपने भाइयोंका साथ देता है उसका घरमें लड़ना विशेष हानिकर नहीं होता। किन्तु घरमें लड़ाई होनेके कारण जो मनुष्य अपने भाईके शत्रुओंसे मिल जाता हैं वह देशभरकी घृणाका पात्र ठहरता हैं। जयचन्द यदि अपने भाई पृथ्वीराजसे रुष्ट हो मुहम्मद गोरीसे न मिला होता तो भारत विदेशियोंकी भोग्यभूमि कैसे बन

ता! जिस प्रकार नरकुलकलङ्क जयचन्दके उस पापकार्यने सदाके लिये उसे देशद्रोही और कलङ्क भाजन बना दिया है उसी प्रकार भविष्यमें भी जो भारतीय जनता का पक्ष त्याग उसके शत्रुके पक्ष में जा मिलेंगे वे देशको भारी हानि पहुंचानेके कारण होंगे और अपने माथे कलङ्कका अमिट टीका लगायेंगे।

अधिकारिवर्गकी ओरसे रालट कमेटीकी रिपोर्टके आधारपर दमनकारी कानूनोंके बनानेके लिये व्यवस्थापिका सभामें जो बिल पेश किये गये हैं उनसे जनता अत्यन्त क्रुद्ध हो गयी है और उसने स्पष्ट शब्दोंमें प्रकट कर दिया है कि, यदि अधिकारि वर्ग जनताकी सम्मतिको पददलित कर बिलोंको पास कर लेगा तो जनतामें भारी असन्तोष फैल जायगा और उसे लाचार हो सत्याग्रहकी लड़ाई लड़नी पड़ेगी। परन्तु वायसरायकी कौंसिलके कई माडरेट मेम्बर आरम्भमें बिलोंका घोर विरोध कर चुकनेपर भी अब अधिकारिवर्गके मायाजालमें फंसते दिखाई पड़ते हैं। सुरेन्द्रबाबूने माननीय मि० पटेलके प्रस्तावपर कौंसिलमें जो भाषण किया था उसमें कहीं कहीं उन्होंने बड़ी कमजोरी दिखायी थी और उनके भाषण तथा उनके उप प्रस्तावसे ही सन्देह हो गया था कि वे अधिकारिवर्गके जालमें फंसे बिना न रहेंगे। उन्होंने उपप्रस्तावमें कहा था कि सर विनसेण्टके प्रस्तावमें जो कहा गया है कि सेलेक् कमेटी बिलोंपर विचार कर ६ठी मार्च या उसके पहले अपनी रिपोर्ट पेश करे उसमें ६ठी मार्चके स्थानपर "पार्लमेण्टसे भारतीय शासनसुधार बिल पास होनेके ६ सप्ताहके भीतर" वाक्य कर दिया जाय। इस तरह उन्होंने बिलोंको कौंसिलमें पेश होनेके पक्षमें सम्मति दे दी थी। इसीसे मान मि० पटेल और मि० जिन्नाने उनके उपप्रस्तावका समर्थन नहीं किया था। अब 'पत्रिका'के संवाददाताके १० वीं फरवरीके पत्रसे मालूम होता हैं कि, सुरेन्द्र बाबू तथा अन्य कई माडरेट मेम्बर सरकारी अफसरोंको खुश करनेके लिये अधिकारिवर्ग के पक्षमें मिल जानेवाले हैं। उक्त संवाददाताका कहना है कि उक्त माडरेट नेताओंने अन्य मेम्बरोंसे पृथक् अपनी एक बैठक कर अधिकारियोंसे समझौता करनेका निश्चय किया था। सुरेन्द्र बाबूके उपप्रस्तावसे 'पत्रिकाके' संवाददाताकी बात बहुत कुछ सत्य ठहरती है जिससे भय होता है कि यदि सुरेन्द्र बाबू, डा० सप्रू और मि० शास्त्रीके निर्वाचक उन्हें अभीसे ठीक राहपर लानेकी चेष्टा न करेंगे तो ये माडरेट नेता अधिकारिवर्गके पक्षमें मिल भारी अनर्थ कर बैठेंगे।

माण्टेगू स्कीमके सम्बन्धमें लोक मतकी अवहेलना करनेके कारण जो सुरेन्द्र बाबू, डा० सप्रू और मि० शास्त्री नेता पदसे पतित हो जनताके कोपभाजन हुए हैं उनके लिये अब कुछ भी असम्भव नहीं रहा है। सुरेन्द्र बाबूकी ही नेशनल लिबरल लीगके एक प्रतिष्ठित सभ्य बा० पी० सी० मित्रभीतो हैं जिन्होंने रालट कमेटीके मेम्बरकी हैसियतसे भारतका घोर अहित तो किया ही था, पर बंगालकी व्यवस्थापिका सभामें माननीय बा० अखिलचन्द दत्तके राजनीतिक कैदियोंके छुटकारेके प्रस्तावका विरोधकर तो अपने स्वभावका पूरा परिचय दे दिया है। जिस लिबरल लीगका एक इतना दुस्साहस कर सकता है

उसके ध्यक्ष सुरेन्द्र बाबू यदि देश हितके शत्रुओंसे मिल अधिकारि वर्गके दमनकारी बिलोंका पक्ष ग्रहण करलें तो आश्चर्य ही है। जनताको जब सुरेन्द्र बाबू या मि० शास्त्रीके विवेकपर मिथ्या विश्वास कर बैठ रहनेकी आवश्यकता नहीं है। उसका कर्त्तव्य है कि, वह पतित होते हुए नेताओंको सावधान कर दे कि यदि हमारे प्रतिनिधि होकर भी कौंसिलमें हमारे विचारोंके विरुद्ध मत प्रकट करोगे तो उसका दायित्व तुम्हारे सिर होगा।

भारतका इतिहास पढ़नेसे पता चलता है कि, भारतवासियोंपर जितनी मुसीबतें अपने ही भाइयोंकी नीचताके कारण आयी हैं उतनी विदेशियोंके कारण नहीं। इसीसे जनताको जितनी सावधानी अपने डरपोंक और निर्बल नेताओंकी ओर रखनी आवश्यक है उतनी बल्कि अधिकारिवर्गकी ओर रखनेकी नहीं है। यह कौन नहीं जानता है कि, कौंसिलकी रचना ऐसी है कि गैरसरकारी मेम्बरोंके लाख विरोध करनेपर भी अधिकारिवर्ग स्वेच्छानुसार कोई भी प्रस्ताव पास कर सकता है। इसी लिये यह तो किसीको भी आशा नहीं थी कि गैरसरकारी मेम्बरोंके विरोध करनेपर रालट बिल रद्द कर दिये जायंगे। परन्तु जनतातो यह चाहती है कि, हमारे प्रतिनिधि उनबिलों का घोर विरोध करें जिससे यदि वे कानून बन जायं तो यहाके अधिकारिवर्गकी स्वेच्छाचारिताके ज्वलन्त प्रमाण सिद्ध हों। परन्तु खेद है कि, हमारे कुछ स्वेच्छाचारी नेताओंको जनताकी इच्छा की कोई परवा नहीं है और वे पर पक्षमें मिल जानेमें हीं अपना बड़प्पन समझ रहे हैं। हम इन नेताओंसे स्पष्ट शब्दोंमें कह देना चाहते हैं कि, सावधान हो जाओ और लोकमतका सम्मान करो। यदि ऐसा न करोगे तो रालट बिलोंके कानून बननेसे देशमें अशान्तिकी जो भयंकर अग्निज्वाला उठेगी उसके एक कारण तुम भी होगे। उस अग्निज्वालाके कारण राजा और प्रजाओं जो हानियां होंगी उनका दायित्व तुम्हारे सिर भी होगा। रालट बिलों जैसे बीसों दमनकारी बिलोंके कानून होनेपर भी भारत तो स्वराज्य लेकर ही रहेगा, परन्तु इन बिलोंका पक्ष ग्रहण कर जो नेता स्वराज्यप्राप्तिके मार्गमें रुकावटें खड़ी करनेके काममें भाग लेंगे उनके मुंहमें भावी इतिहास लेखकोंकी लेखनी जो स्याही लगायेगी वह मिटानेसे कदापि न मिटेगी।

सीनफीनके उद्देश्य।

स्वतंत्रशासन पद्धति.

—:o:—

आयर्लैण्डके सीन फीन दलने स्वतंत्र आयर्लैण्डकी जो शासन पद्धति बनायी है वह अभीतक गुप्त रखी गयी थी। परन्तु विलायती पत्र ग्लीवने उसे कहींसे प्राप्त कर प्रकाशित कर दिया है। वह अपने पाठकोंके मनोरञ्जनके लिये हम यहां देते हैं;—

सीन फीन शासन पद्धति।

आयर्लैण्डवासियोंने अपनी पृथक् राष्ट्रीयताका दावा कभी नहीं छोड़ा। १९१६के ईस्टरमें आयरिश प्रजातंत्रकी अस्थायी सरकारने जनताके नामपर पीढ़ियों पहले की लड़ाई जारी रखते हुए फिरसे प्रकट किया था कि आयरिश जनताको स्वतंत्रताका निर्विवाद अधिकार है और वह उसे प्राप्त करनेको दृढ़ निश्चय किये हुए है।

१९१६के ईस्टरकी आयरिश प्रजा तंत्रकी घोषणा तथा उसका रक्षा के लिये अपने जावन देनेवालोंके प्रशंसनीय साहससे आयर्लैण्डकी जनता आयरिश प्रजातन्त्रके झंडेके नीचे एकत्र हो गयी है। इन कारणोंसे हम आयरिश जनताके नियुक्त किये हुए प्रतिनिधि सभा कर सीन फीनकी निम्न लिखित शासन पद्धति निश्चित करते हैं;—

१—इस संगठनका नाम सीन फीन होगा। २—सीन फीनका उद्देश्य है कि संसारके राष्ट्र आयर्लैण्डका स्वतंत्र राज्य स्वीकार करें। उस अवस्थाको प्राप्त हो आयरिश जनता मतसंग्रह द्वारा अपनी शासन प्रणाली चुन सकती है। ३—यह उद्देश्य सीन फीन संगठन द्वारा प्राप्त किया जायगा जो स्वतंत्र आयरिश जनताके नाम पर (क) इस बातको अस्वीकार करेगा कि ब्रिटिश पार्लमेण्ट, ब्रिटिश महाराज या अन्य विदेशी गवर्नमेण्टको आयर्लैण्डके लिये कानून बनानेका अधिकार है और उनकी इच्छाका विरोध करेगा। (ख) उस इङ्गलैण्डकी शक्तिको व्यर्थ करनेके लिये सब प्रकारके उपायोंसे काम लेगा जो सैनिक शक्तिके बल या अन्य प्रकारसे आयर्लैण्डको अपनी अधीनतामें रखना चाहता है।

४—बिना आयरिश जनताकी स्वीकृति और सम्मतिके बनाया हुआ कोई कानून न तो अवश्य मान्य है और न होगा इस लिये १९०५की सीनफीन परिषद्के प्रस्तावानुसार एक कंस्टीट्युएण्ट असेम्बुली बुलायी जायगी जो आयरिश निर्वाचक मण्डलोंके चुने बड़े प्रतिनिधियोंकी होगी। वह सबसे बड़ी राष्ट्रीय सभा होगी और उसे आयरिश जनताके नाम पर बोलने और काम करने तथा आयर्लैण्डकी कुल जनताके हितके लिये कानून बनानेका अधिकार होगा। वे कानून इस प्रकारके होंगे जैसे (क) जिन संस्थाओंका आयरिश जनताके प्रति प्रत्यक्ष उत्तर दायित्व है उनके सम्मिलित उद्योगसे आयरिश उद्योग धन्धों और व्यापारके लिये संरक्षण नीतिकी स्थापना (ख) राष्ट्रीय सभा या आयरिश जनताकी स्वीकार की हुई अन्य सभाके आदेशानुसार आयरिश व्यापार और आयरिश हितके लिये आयरिश कंसुलर सर्विसकी स्थापना और रक्षा [ग] आयर्लैण्ड और यूरोपके देशों अमेरिका, अफ्रिका तथा सुदूर पूर्वके बीच सीधे व्यापारके लिये पुनः आयरिश व्यापारिक बेड़ा बनाना [घ] राष्ट्रीय सभा या आयरिश जनता द्वारा अनुमोदित अन्य संस्थाकी ओरसे आयर्लैण्डकी औद्योगिक पड़ताल करना तथा उसकी खानोंकी उन्नति करना [ङ] नेशनल स्टाक एक्सचेंज स्थापित करना [च] राष्ट्रीय सिविल सर्विसकी स्थापना करना और उसके लिये राष्ट्रीय परीक्षाएं नियुक्त करना [छ] झगड़ोंके जल्द और सन्तोषजनक निपटारेके लिये सीन फीनकी पञ्चायती अदालतें खोलना [ज] राष्ट्रीय हितके लिये आयरिश जनता द्वारा अनुमोदित संस्था द्वारा रेल, सड़क, जलमार्ग आदि द्वारा गमनागमनके सुभीतेकी उन्नति करना [झ] आयरिश समुद्रके मछली मारनेके स्थानोंकी उन्नति करना [ञ] आयरिश भाषा, आयरिश इतिहास और आयरिश कृषि तथा निर्माणकी प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य कर शिक्षाको राष्ट्रीय और औद्योगिक बनाना तथा आयरिश कृषि और आर्थिक विषयोंको युनिवर्सिटी सिस्टममें विशेष स्थान देना [ट] गरीबोंके सम्बन्धका कानून रद्द करना और उसके स्थानपर बूढ़ों

और अपाहिजोंके भरण पोषणके लिये प्रबन्ध तथा काम करने योग्य लोगोंके लिये कामका प्रबन्ध करना ।

संगठनकी स्कीम ।

सीन फीन सङ्गठनमें एक प्रेसिडेण्ट, दो वाइस प्रेसिडेण्ट, दो आनरेरी सेक्रेटरी, दो आनरेरी कोषाध्यक्ष, चार राष्ट्रीय ट्रष्टी आदि होंगे। आयर्लैण्डमें जन्मे या आयरिश माता पितासे पैदा हुए प्रत्येक श्रेणी या मतके उन बालिग पुरुषों और स्त्रियोंको मेम्बर होनेका अधिकार होगा जो सीन फीन शासनपद्धति स्वीकार करें। परन्तु ब्रिटिश सेनाका नौकर या पेंशनर या वह व्यक्ति मेम्बर न बनाया जायगा जिसने ब्रिटिश सरकारके भक्त रहनेकी शपथ खायी है जबतक वह उक्त पदपर रहेगा जिसके लिये उसने शपथ खायी है। संगठनके लिये पर्चियां डालकर चुनाव किया जायगा और इन नियमोंमें प्रकट किये हुए सब पदोंपर अवैतनिक कार्य करना होगा। एक बारके चुनावमें कोई व्यक्ति किसी अवैतनिक पदपर लगातार दो सालसे अधिक न रह सकेगा।

रमता योगी ।

भारत और किसी बातसे नहीं तो कमसे कम इस बातसे तो सन्तुष्ट ही है कि यहां निरंकुश शासन चरम सीमाको तो पहुंचा जो सभ्य संसारका शत्रु बताया जाता है।

कैसर खुश होते होंगे कि भारतीयोंने उन्हें हरा कर अच्छा इनाम पाया। भारतकी दुर्दशा पर भला किसे न हंसी आयेगी।

लो० तिलक राज द्रोही समझे जाते हैं। आज कल सच बोलनेकी कदर भारतमें ही रह गयी है।

अङ्गरेज भी न जाने भारतीयोंके साथ उदारता दिखाते हुए क्यों डरते हैं। क्या यह भूमि उदारताके योग्य नहीं है।

हिर्स बड़ी बुरी हुआ करती है। देशभक्त गोरे व्यापारी देश भक्त भारतीयोंसे क्यों न जलें।

भारत अत्याचार कभी सहना नहीं चाहता बूढ़े यदि विवाह कर स्त्रियोंका जीवन नष्ट करते हैं तो क्या सभ्य मंडली उन्हें बधाई देती है। अकालके कारण भला लड्डू कौन छोड़े।

यदि वृद्धों द्वारा स्त्रियों पर अत्याचार होते रहेंगे तो देश सारा सुखी बना रहेगा। स्त्रियां नहीं मनुष्य हो सुख दुःखकी जड़ हैं।

पादड़ी हिन्दू मूर्तियोंसे बेतरह डरते हैं। ईसामसीहके प्रधान शिष्योंमें सहन शीलता अधिक पायी जाती है।

जापानने इधर बड़ी उन्नति की है। पड़ोसी भारतसे रुपया खींच कर क्या अब वह विपतिकालमें उसके काम न आयेगा।

भारत इतना निर्धन क्यों हो गया। लोग खाने बिना मरने लगे। यहांके व्यापारी डाका भी तो नहीं डालते।

नजरबन्द अभी न छोड़े जायें। वैसेही बेतरह अकाल पड़ रहा है।

भारतमें दमनने फिर जोड़ पकड़ा है। संसारमें स्थायी शान्ति अवश्य स्थापित होने वाली है।

— —

रेलवे कम्पनियोंने भारतका बड़ा उपकार किया। अपनी उदारतामें वे अपना सब धन खो चुकी होंगी।

— —

वृटिश शासनसे देशको एक लाभ तो बड़ा भारी हुआ। यहां हिन्दू मुसलमान आपसमें कभी न मिल सके

— —

ईसाई गरीब भारतीयोंकी बड़ी सेवा करते हैं। मौका पड़ने पर उन्हें अपने धर्ममें मिला लेते हैं। राजाको बिरादरीमें लाना क्या कोई बुरा काम है।

— —

सन्धि सभामें स्त्रियां बुलायी ही न गयीं नहीं तो सीठनों पर भी विचार हो जाता।

— —

ब्राह्मणोंका स्वाभिमान अभी तक बना है। तभी तो वे वेद शास्त्र पढ़ना आवश्यक नहीं समझते।

— —

सन्तानहीन धनी क्या अपनी सारी सम्पत्ति लुटा दें। क्या वे गोद लेनेके लिये लड़के ही न पायेंगे।

— —

धनवानोंकी सभा कर प्रस्ताव पास करना चाहिये कि गरीब उनके पास ही न रहने पायें। वे भूखे रह कर हैजा प्लेग फैलाते हैं।

— —

विविध विचार

चोरकी दाढ़ीमें तिनका—

समरकालमें प्रायः सभी शक्तिशाली राष्ट्रोंने अपने अपने मतलब गांठनेके लिये गुप्त सन्धियां कर ली थीं। अधिकांश तो ऐसी हैं जो शत्रु देशोंके बटवारेके सम्बन्ध में हैं। पर जापानने चीनके साथ जो गुप्त सन्धियां की थीं वे चीन पर अपना प्रभुत्व जमानेके उद्देश्य से की गयी थीं। चीनमें जापान अपना प्रभुत्व नहीं बढ़ाने पाया क्योंकि साधारणतया सभी यूरोपियन शक्तियां और विशेष कर अमेरिका उसके मार्गमें बाधक हैं। अब उसने चीनको धमकाया है कि यदि जापानके साथ की हुई सन्धियां सन्धि सभामें प्रकट की जायंगी तो चीन जापानकी दोस्ती नहीं रह सकती। जापानी दूतके शब्दोंसे तो ऐसा जान पड़ता है कि यदि चीनने उसकी बात न मानी तो गुप्त संधियोंका यह मामला टेढ़ा हो जायगा और आश्चर्य नहीं कि यूरोपका पिंड छोड़ रणचण्डी अपना खप्पर ले एशियामें पहुंच जायं। अभीतक जापान मौके बेमौके यही प्रकट करता आता था कि जापान चीनमें अपना कोई विशेष स्वार्थ नहीं सिद्ध करना चाहता। यहांतक कि वह जर्मनीसे छीना हुआ कियाऊचाऊ प्रदेश भी चीनको लौटानेको तैयार बताता था। परन्तु गुप्त संधियोंके सम्बन्धकी उसकी धमकीसे तो ऐसा जान पड़ता है कि भीतर ही भीतर उसने चीनको निर्बल पा उससे मनमानी शर्तें करा ली थीं। अब उनके प्रकट होनेसे वह संसारके सामने झूठा ठहरना चाहता है, इसीसे उन्हें गुप्त रखनेके लिये वह इतनी कड़ी चेष्टा कर रहा है। मामला बड़ा सङ्गीन जान पड़ता है देखना है कि यह किस तरह सुलझता है। जो हो, यदि चीन जापानकी लड़ाई होगी तो यूरोप और अमेरिकाकी शक्तियां दूरसे तमाशा ही देखेंगी।

टेढ़से भय—

गोस्वामी तुलसीदासने बहुत ही ठीक लिखा है कि "टेढ़ जानि शङ्का सब काहू" यह बात ब्रिटेनके हालके एक कार्यसे भली भांति सिद्ध होती है। साम्राज्यके भीतर स्वराज्यकी मांग करनेवाले भारतीय नेताओंको ब्रिटिश सरकारने कुछ दिन पहले विलायत जानेसे रोक दिया था। लोकमान्य तिलकके पत्रसे यह भी मालूम हुआ है कि उनका सन्धि सभामें भारतके लिये स्वभाग्य निर्णयके अधिकारका प्रश्न उपस्थित करनेके उद्देश्यसे पेरिस जानेका विचार ब्रिटिश अधिकारियोंको पसन्द नहीं है और सम्भवतः इसीसे बीत जानेपर भी उनके पासपोर्टके प्रार्थनापत्रपर ध्यान नहीं दिया गया है। परन्तु दक्षिण अफ्रिकाके जो नेशनलिस्ट प्रकट रूपसे ब्रिटेनसे सम्बन्ध तोड़ स्वतन्त्र होना चाहते हैं उनके उन प्रतिनिधियोंको लड़ाऊ जहाजमें बैठा यूरोप पहुंचानेका प्रबन्ध कर दिया गया है जो सन्धिसभामें उपस्थित हो दक्षिण अफ्रिकामें ब्रिटेनसे पृथक् प्रजातंत्र राज्यकी स्थापनाका दावा करेंगे। ब्रिटिश साम्राज्यके ही दो अंगोंके साथ इस प्रकारके भेदभावसे यदि भारतमें भी पूर्ण स्वतन्त्रताकी माँग करनेवाला कोई दल बन जाय तो आश्चर्य ही क्या है।

वास्तविक अवस्था—

दक्षिण अफ्रिकामें सबसे पहले हालैंडकी डच जातिके लोग जा बसे थे। उन्होंने देशको खूब बुहा। दक्षिण अफ्रिकाकी सोने और हीरेकी खानोंके लालचसे कुछ ही दिनों बाद अंगरेज भी वह जा बसे। पीछे इन दोनों जातियोंमें प्रतिद्वन्द्विता बढ़नेके कारण घोर युद्ध छिड़ गया। समझौता होनेपर इंगलैंडको दक्षिण अफ्रिका मिल गया।उनके अधीन जो डच आये उनकी बराबर यही इच्छा बनी रही कि किसी तरह इंगलैंडकी अधीनतासे छुटकारा हो। समरकालमें स्वभाग्यनिर्णयके सिद्धान्तके ऊपर जोर दिया जानेके कारण वे और जोर पकड़ गये। वे डच ही अपनी पार्टीको नेशनलिस्ट पार्टी कहते हैं। अब दक्षिण अफ्रिकाके आदि निवासियोंका अधिकांश भी उनके पक्षमें हो गया। ये ही नेशनलिस्ट सन्धिसभामें अपने लिये स्वभाग्यनिर्णयका अधिकार मांगने पेरिस जा रहे हैं।

भयंकर घटना—

यूरोपमें इस समय जैसी अशान्ति फैल रही है, उसका अनुमान नित्य आनेवाले छोटे मोटे समाचारोंसे भी बहुत कुछ हो सकता है। १९ वींको पेरिसमें अशांतिके फल स्वरूप एक बड़ी भयंकर दुर्घटना हो गयी है। मित्रराष्ट्रोंकी संधि परिषद्के प्रेसिडेण्ट और फ्रांसके प्रधान सचिव मो० क्लेमेंशोपर पांच फैरें की जिससे वे घायल हो गये हैं। अभीतक यह नहीं बताया गया है कि, किसने किस लिये उनकी हत्या करनी चाही थी। साथ ही यह जान कुछ सन्तोष हो सकता है कि उनके घाव भयंकर नहीं हैं। परन्तु इस समय मो० क्लेमेंशोकी अवस्था ८० वर्षकी है इसलिये वृद्धावस्थाकी साधारण चोट भी अत्यन्त भयंकर सिद्ध हो सकती है। मो० क्लेमेंशोका फ्रांसमें इतना अधिक प्रभाव है कि उन्होंने कितने ही प्रधानमंत्रियोंको पदच्युत कराया और वर्तमान राष्ट्रपति मो० पायनकेरके

भी इस पदपर पहुंचनेमें बड़ी रुकावटें खड़ी की थीं। वे फ्रांसकी अवस्थाके बड़े भारी जानकार हैं। इतनी बात अवश्य है कि, वे रा० विलसन जैसे उदार नहीं हैं और फ्रांसकी कौड़ीको जर्मनीसे पूरी करना चाहते हैं। जर्मनीने क्षणिक संधिकी शर्तोंके अनुसार मांगी हुई चीजें मित्रराष्ट्रोंको नहीं सौंपी हैं इसीसे उनकी सरकार आवश्यकता पड़नेपर फिर युद्ध करनेको तैयार हैं। हम समझते हैं कि, उनकी हत्याकी इस चेष्टामें जर्मनीका अवश्य कुछ हाथ होगा।

भारतके हितू—

जो गोरे पत्र भारतके हितचिन्तक बननेका दम भरते हैं उनमें एक 'वर्ल्ड' नामक विलायती पत्र है। जिस समय सर सिंह संधि सभाके लिये भारतके प्रतिनिधि चुने गये थे उस समय भारतके इन हितुओंने तो सर सिंहकी प्रशंसाके पुल बांध दिये थे। पर ज्यों ही वे लार्ड इसलिङ्गटनकी जगह सहकारी भारतसचिव तथा लार्ड बनाये गये त्यों ही इनकी नानी मर गयी और अब सर सिंहको इस नियुक्तिके लिये वे मि० मांटेगूपर बेतरह क्रोध प्रकट कर रहे हैं। 'वर्ल्ड'ने लिखा है कि सर सिंहकी यह नियुक्ति भारतके लिये अपमान है क्योंकि वे भारतके प्रतिनिधि होनेका कुछ भी दावा नहीं कर सकते। पाठक इससे यह न समझें कि उक्त पत्र भारतकी हितकामनासे यह कह रहा है। सच बात यह है कि उसे एक बङ्गाली बाबूकी इतने उच्च पदपर नियुक्ति बड़ी बुरी मालूम हुई है, क्योंकि उसकी समझसे मि० मांटेगूने उन्हें इस लिये नियुक्त कराया है जिससे वे उनकी आज्ञाको चुपचाप पालन करते रहें। 'वर्ल्ड' कहता है कि मि० मांटेगूकी बात वायसराय या अण्डर सेक्रेटरी न मानें तो उन्हें पद छोड़ना पड़े। मि० मांटेगू आज्ञा देते हैं और वे सब उसका पालन करते हैं। मि० मांटेगूको उक्त पत्र इस लिये बुरा समझता है क्योंकि उसकी धारणा है कि "वे यदि भारतके हमारे सुन्दर शासनका महल नष्ट करनेको ब्रिटिश जनताको बहका सकेंगे तो वे अवश्य वैसा करेंगे।" भारतमें अङ्गरेजोंके सुन्दर शासनकी खातिर ही 'वर्ल्ड' को अधिकारिवर्गके लाड़ले लार्ड सिंहके सम्बन्धमें इतनी बातें लिखनी पड़ी हैं।

यह गोरखधन्धा कैसा—

कई दिन पहले रूटरने समाचार दिया था कि जापानने चीनको धमकाया है कि यदि तुम्हारे प्रतिनिधि सभामें चीन जापानकी गुप्त सन्धियां प्रकट कर देंगे तो जापान तुम्हारा मित्र न बना रहेगा। इसके दो ही दिन बाद खबर आयी कि चीनने कहा है कि यह बिलकुल झूठ है कि जापानने पेरिसमें चीनी प्रतिनिधियोंपर प्रभाव डालना चाहा है। जापान और चीनके बीच कभी कोई गुप्त सन्धि नहीं हुई और न उसका प्रस्ताव ही हुआ।

अब पेकिङ्गके १७वीं फरवरीके एक तारसे मालूम हुआ है कि, चीनने पेरिसके अपने प्रतिनिधियोंसे कहा है कि चीन और जापानके बीच जो समझौते हुए हैं उनकी बातें सन्धिसभाको बता दो एक ओर तो कहा जाता है कि चीन जापानमें कोई गुप्त समझौता हुआ ही नहीं है और दूसरी ओर चीन समझौतोंकी बातें सन्धिसभाको बतानेको कहता है। दोनोंमें किसे सच मानें? जान पड़ता है कि गुप्त सन्धियां अवश्य हैं और उनके सम्बन्धमें

चीन जापानमें कुछ मनमुटाव भी हो गया है। नहीं तो इस तरह बेसिरपैरकी बातें कैसे फैलतीं। सच तो यह है कि जापानको बहुत दिनोंसे चीनमें अपना प्राधान्य जमानेकी इच्छा रही है इस लिये चीनको असहाय अवस्थामें पा यदि जापानने गुप्त सन्धियां की हों तो आश्चर्य कुछ भी नहीं है।

घोर अन्याय——

१८वींको कामन सभामें कुमांडर वेजउडके प्रश्नके उत्तरमें मि० मांटेगूने कहा कि अभी लाला लाजपतरायको अमेरिकासे इंगलैंड आनेकी आज्ञा न दी जायगी परन्तु सन्धि होनेके बाद भारतसचिव प्रसन्नतापूर्वक इस मामलेके सम्बन्धमें विचार करेंगे। हम दावेके साथ कहेंगे कि यह देशपूज्य लालाजीके ही नहीं बल्कि भारतके ऊपर घोर अन्याय है। जिस समय संसारमें स्वभाग्य निर्णयके सिद्धान्तके प्रचारके लिये मित्रराष्ट्र जमीन और आसमानके कुलाबे एक कर रहे हैं और दक्षिण अफ्रिकाके वे नेशनलिस्ट नेता लड़ाऊ जहाजपर बैठ पेरिस पहुंचाये जा रहे हैं जो संधि सभाके सामने दक्षिण अफ्रिकाके लिये स्वभाग्यनिर्णयके अधिकार मांगेंगे उस समय भारतके हृदय सम्राट् लो० तिलक तथा देशपूज्य लालाजीको वहां जानेसे रोका जाता है। ब्रिटेनको अपने राजनीतिज्ञोंकी इस अदूरदर्शिताके लिये निश्चय ही पीछे खूब पछताना पड़ेगा। लाला लाजपतराय समय समयपर अकालपीड़ितोंको सहायता कर और शिक्षाविस्तारमें योग दे अपने हृदयकी जिस विशालताका परिचय दे चुके हैं उसका प्रभाव हम भारतीयोंके हृदयोंपर सदा अटल बना रहेगा। हमें विश्वास है कि लालाजी रा० विलसनसे मिल अमेरिकासे ही भारतका बहुत कुछ हित कर सकेंगे। पर ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंके अन्यायका नमूना संसार देख देखकर जिस प्रकार ब्रिटेनको धिक्कारेगा उससे अनन्तकालतक अंगरेजोंको स्वातन्त्र्यप्रेमियोंके सामने लज्जाके मारे सिर ऊपर उठानेका साहस न होगा।

भारतका प्रबल पक्ष——

लार्ड सेलबोर्नने लण्डनके अपने भाषणमें उस दिन कहा है कि दक्षिण अफ्रिकाकी यूनियन सरकारने जो नेशनलिस्टोंको पेरिस सन्धि परिषदमें अपना मामला पेश करनेके लिये यूरोप जानेको पासपोर्ट दे दिये हैं इस कार्यसे मैं प्रसन्न हूं क्योंकि इससे संसारको पता चल जायगा कि नेशनलिस्टोंका उद्देश्य कितना थोथा है। साथ ही संसारको उनकी मांगके वास्तविक स्वरूपका परिचय भी मिल जायगा। हम पूछते हैं कि क्या ब्रिटेनमें एक भी सेलबोर्न ऐसा नहीं है जो भारतके प्रतिनिधियोंके सम्बन्धमें भी ऐसी ही बातें कहे जैसी लार्ड सेलबोर्नने दक्षिण अफ्रिकाके नेशनलिस्टोंके विषयमें कही हैं? और तो और उदारताकी मूर्ति समझे जानेवाले मि० मांटेगूके हृदयमें भी ऐसा उच्चाशय नहीं है! हम पूछते हैं कि भारतीय प्रतिनिधियोंको भी संधि सभामें भारतका मामला पेश करनेकी स्वतन्त्रता क्यों नहीं दे दी जाती कि जिससे संसार समझ ले कि उनका उद्देश्य कैसा थोथा (!) है? हमारे लोकमान्य नेता पेरिस नहीं जाने पाते हैं इसीसे सिद्ध है कि ब्रिटिश अधिकारी हमारा उद्देश्य थोथा नहीं समझते हैं इसी भयके मारे वे भारतका मामला सन्धि सभामें

पेश न होने देनेकी यथाशक्ति चेष्टा कर रहे हैं। नहीं तो सन्धि होने तक लाला लाजपतरायका इङ्गलैण्ड जाना क्यों रोका जाता? लोकमान्यके इस कथनमें हमारा पूरा विश्वास है कि भारतका प्रश्न सन्धिसभामें पेश हुए बिना न रहेगा। परन्तु ब्रिटेनको उस समय क्या मजा आयेगा जब यह प्रश्न राजभक्त भारतीय नेताओं द्वारा न पेश हो शत्रु देशोंके प्रतिनिधियों द्वारा उपस्थित किया जायगा।

हथियार मिलेंगे क्या——

उस दिन कामन सभामें मि० मांटेगूने कहा है कि भारत सरकार हथियारोंके नये नियम प्रकाशित करनेवाली है जो बड़ी कौंसिलकी कमेटीकी सिफारशोंके आधारपर बनाये गये हैं। उनमें जाति सम्बन्धी भेदभाव दूर कर एक निर्धारित स्थितिके पुरुषोंको हथियार रखनेके लिये लाइसेंस देनेकी व्यवस्था है। पाठकोंको स्मरण है कि कई महीने पहले माननीय दादा साहब खापर्डेने बड़ी कौंसिलमें प्रस्ताव किया था कि जिस तरह अङ्गरेजोंको इङ्गलैंडमें हथियार रखनेके सुभीते हैं वैसे ही भारतमें भारतीयोंके लिये होने चाहिये। उसके सम्बन्धमें सिफारश करनेके लिये कई मेम्बरोंकी एक कमेटी बनायी गयी थी। उसने कौन कौनसी सिफारिशें की हैं यह तो नहीं मालूम हुआ है क्योंकि उसकी रिपोर्ट अभीतक प्रकाशित नहीं हुई है। परन्तु अधिकारिवर्ग जिस तरह ऐसी कमेटियोंके सम्बन्धमें मीठा मीठा हप्प और कड़ुआ कड़ुआ थू'की नीतिसे काम लिया करता है उससे भारतीयको अंगरेजोंकी तरह हथियार मिलेंगे क्या इसका उत्तर तबतक नहीं दिया जा सकता जबतक भारत सरकार अपने बनाये नियम प्रकाशित न कर दे।

आपसमें न फूटो।

आपसकी फूट बड़ी बुरी होती है। आपसकी फूटका जैसा बुरा फल भारतको चखना पड़ा है वैसा शायद और किसी देशको न चखना पड़ा होगा। महाराज पृथ्वीराज और जयचन्दकी आपसकी फूटहीसे पुण्य भूमि भारत विदेशियोंके पदाक्रान्त हुई। उसके बाद भी समय समयपर आपसकी फूटके कारण भारतको जो जो दुःख झेलने पड़े हैं वे किसीसे छिपे नहीं हैं। परन्तु खेदकी बात तो यह है कि इतनी दुर्गति होनेपर भी हमारे कुछ भाई अभी तक आपसकी फूटसे प्यार करते हैं। भारतके उद्धारके लिये अपना सर्वस्व अर्पण कर देनेवाले जनताके हृदयसम्राट् लोकमान्य तिलकके जितने भी तार या पत्र इङ्गलैंडसे आ रहे हैं उन सबमें ही उन्होंने बड़ी उत्सुकतासे भारतीयोंको इस समय आपसमें न फूटनेकी अपील की है और कहा है कि यदि हमारे भाई इस समय अपनी स्वराज्यकी मांगपर डटे रहेंगे तो सफलता निश्चित ज्ञान पड़ती है। पर दुःखकी बात है कि हमारे भाइयोंमें भी स्वेच्छाचारियोंकी कमी नहीं हैं और कुछ बूढ़ोंको अब भी अपनी ही धुन सवार है। ये भी प्रकट रूपसे तो बराबर यही कहते हैं कि आपसमें फूट होनेसे काम बिगड़ेगा किन्तु स्वयं ही जनताके बहुमतका निरादर कर अपनी स्वेच्छाचारिताके कारण आपसकी फूटके कारण सिद्ध हो रहे हैं।

१९१६की लखनऊ कांग्रेस में भारतके नरम गरम हिन्दू मुसलमान सब एक थे और सबने मिलकर शासन सुधारोंके लिये कांग्रेस-लीग स्कीम तैयार की थी। उस समय सभी विचारके नेताओंने निश्चय किया था कि कांग्रेस-लीग स्कीमके अनुसार शासन सुधार न होनेसे हम संतुष्ट न होंगे। सभी विचारके भारतीयोंको एक मत हो दृढ प्रतिज्ञा करते देखकर उसी समय भारत हितके शत्रुओंके हृदयमें धड़कन शुरू हो गयी थी और उसके बाद ही भारतीय नेताओंमें फूट डालनेकी चेष्टा शुरू होने लगी। देशके दुर्भाग्यसे हमारे शत्रुओंकी चेष्टा शीघ्र ही सफल हुई और कुछ बूढे माडरेट नेता अपने इनेगिने चेलोंके साथ लोकमतको पददलित करनेको तुल गये। १९१७ की कलकत्ता कांग्रेस तो किसी न किसी तरह सकुशल हो गयी। पर उसके पहले ही फूटका जो बीज बोया जा चुका था उससे शीघ्र ही अंकुर उगने लगे। मांटेगू स्कीम प्रकाशित होते ही कुछ बूढ़े माडरेट नेता खुल्लम खुल्ला अधिकारिवर्गसे मिल गये और जनताके लाख कहने सुननेका कुछ ध्यान न कर उन्होंने राष्ट्रीय महासभासे पृथक हो अपनी अलग कानफरेंस की। हमारे शत्रुओंने उनके कानमें कुछ ऐसा मंत्र डाल दिया जिससे उन्हें विश्वास हो गया कि, यदि मांटेगू स्कीम स्वीकार न की जायगी और शासनमें विशेष सुधारोंके लिये प्रस्ताव किया जायगा तो जो कुछ मिल रहा है वह भी न मिलेगा और मि० मांटेगूका कुल प्रयत्न मिट्टीमें मिल जायगा उनका यह मिथ्या विश्वास दृढ़ करनेके विचारसे इंगलैण्डसे नित्य सिडेनहम दलके मांटेगू स्कीमके विरोध सम्बन्धी बड़े लम्बे चौड़े तार भारत भेजे जाने लगे और इधर सरकारसे आज्ञा न पानेके कारण भारतीय नेता वहां न जा सके। इससे बूढ़े माडरेट नेताओंके ऊपर उक्त कपट मंत्रका पूरा प्रभाव जम गया और ऐसा जमा कि, अब वह किसी प्रकार मिटाये नहीं मिटता है। अबतक जितने भारतीय इंगलैण्ड पहुंच चुके हैं उन्होंने वहां सिडेनहम पार्टीका कच्चा चिट्ठा जान स्पष्ट शब्दोंमें कह दिया है कि विलायत में मांटेगू स्कीमके विरोधी दलका एक प्रकारसे कुछ भी प्रभाव नहीं है और उसके आधारपर जो बिल पार्लमेण्टमें पेश होगा वह पास हो जायगा यद्यपि नये चुनावमें पार्लमेण्ट में सुधार विरोधी दलका ही प्राधान्य हो गया है। परन्तु देखते हैं कि, इतने पर भी पथभ्रष्ट माडरेट नेताओंकी आंखें नहीं खुली हैं और वे रद्दी मांटेगू स्कीमकी रक्षाकी बात कह आज भी आपसकी फूटमें ही भारतका हित देख रहे हैं।

दिल्ली कांग्रेसके समयसे आपसमें फूटका बीज बोनेवाला एक और नया दल खास स्वराज्यसंघके मेम्बरोंमें ही पैदा हो गया है। इसकी लीडर मिसेज बेसेण्ट हैं। मिसेज बेसेण्ट कुछ दिनों पहले कांग्रेससे फूटने और जनताका बहुमत न माननेके कारण पथभ्रष्ट माडरेट नेताओंकी निन्दा करते नहीं अघाती थीं वे ही दिल्ली कांग्रेसके समयसे राष्ट्रीय दलसे इस लिये असन्तुष्ट हो उसे भला बुरा कह रही हैं।

दिल्ली कांग्रेसने सब प्रकारके विवेकको जवाब दे उनकी अनुचित बातें नहीं स्वीकार कर लीं यदि बूढ़े माडरेट नेताओंको अपनी जिद न छोड़नेके लिये एक यही कारण था कि उन्होंने देश-

सेवामें अपने बाल सफेद किये हैं; तो मिसेज बेसेण्टके लिये तो दो कारण हैं। एक तो विदेशिनी होने पर भी बीसों वर्षसे भारतकी निस्वार्थ सेवा कर रही हैं और कई घड़ोंका पानी पीने तथा इतना बड़ा जमाना देखनेसे उनके सफेद बालोंमें काले बालोंकी अपेक्षा अनुभवका रंग अधिक चढ़ा दूसरे यह कि एक धार्मिक सम्प्रदाय थियासोफी मतकी इस समय धर्माचार्या हैं जिसके कारण उस मतके लोग आंख मूंद कर उनकी आज्ञा पालन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं। जिस मनुष्यने सदा दूसरेसे आज्ञा पालन कराना ही सीखा है वह यदि अधिकांश जनताकी आज्ञा न मांने तो आश्चर्य ही क्या है। मिसेज बेसेण्टका अब तकका जीवन बता रहा है कि; एक राह पर चलना ईश्वरने उन्हें सिखाया ही नहीं है। वे समय समयपर अपनी चालें बदलती रहती हैं। वर्षों अधिकारि वर्गका विरोध कर कांग्रेसकी प्रेसिडेण्ट बन जानेके बाद यदि अब वे फिर अधिकारि वर्गको प्रसन्न करनेकी चाल चलने पर उतारू हों तो वे कांग्रेस और राष्ट्रीय दलको बदनाम किये बिना भी वैसा कर सकती हैं। परन्तु कांग्रेसके भीतर रह कर वे राष्ट्रीदल वालोंमें ऐसे विकट समयमें जो फूटका बीज बो रही हैं यह अत्यन्त अनुचित है जहां बूढ़े माडरेट नेता मांटेगू स्कीमकी रक्षाके लिये कांग्रेससे फूट रहे हैं वहां मिसेज बेसेण्टको विलायत जा अधिकारियोंसे सुधारोंके सम्बन्धमें बात चीत करनेकी चिन्ता हो रही है इसीसे वे दिल्ली कांग्रेसका वह प्रस्ताव अनुचित और अदूरदर्शिता पूर्ण बता रही हैं जिसमें दिल्ली कांग्रेसके प्रस्तावके अनुसार ही विलायतमें डेपुटेशनके मेम्बरोंको आन्दोलन करनेकी आज्ञा दी गयी है। जो हो, मिसेज बेसेण्टके फूटनेसे भी कांग्रेसका उसी तरह कुछ न बिगड़ेगा जिस तरह कुछ अदूरदर्शी माडरेटोंके फूटनेसे नहीं बिगड़ा था। परन्तु इन लोंगोकी फूटसे सन्धि सभामें भारतकी स्वभाग्यनिर्णके अधिकारकी मांग निर्बल पड़ जायगी जिससे भारतके शत्रु लाभ उठानेसे कदापि न चूकेंगे। परमात्मा अब भी इन नेताओंको सुमति दे।

गदरके लक्षण।

महासमरके फलस्वरूप संसारके प्रत्येक भागकी जनतामें और विशेषकर श्रमजीवियोंमें जैसी जागृति पैदा हो गयी है उसकी पहले शायद ही किसीको कल्पना हुई हो। जो साम्यवादके सिद्धान्त शेखचिल्लीके मसले समझे जाते थे वे आज कार्यमें सफलतापूर्वक लाये जा रहे हैं। स्वतन्त्रताकी हवा बहने और श्रमजीवियोंमें असाधारण जागृति पैदा हो जाने के कारण अबतक रूस, जर्मनी, आस्ट्रिया और सम्भवतः बलगेरियामें भी राज्यक्रान्ति हो चुकी है। परन्तु ऐसा न समझना चाहिये कि जो यूरोपियन राज्य क्रान्तिसे अभीतक बचे हुए हैं; वहां जागृतिका कुछ प्रभाव नहीं हुआ है। सच पूछिये तो महासमरके कारण संसारके सभी देशोंके श्रमजीवियोंकी आंखें खुल गयी हैं। यूरोपके देशोंमें तो जागृतिका प्रभाव और भी अधिक है। अभी तक इङ्गलैंडमें उस जागृतिके फलस्वरूप कोई विशेष उपद्रव नहीं खड़ा हुआ इसीसे कितने ही अदूरदर्शी अङ्गरेज यह कहते फूले नहीं समाते रहे हैं कि समस्त यूरोपमें—

बोलशेविकोंका सिद्धान्त भले ही फैल जाय पर हमारा इङ्गलैण्ड उससे सर्वथा सुरक्षित रहेगा। हमें इस अदूरदर्शितापूर्ण बातकी सत्यतामें सदा सन्देह रहा है और हमारी यही धारणा बराबरसे रही है कि जिस इङ्गलैण्डमें धनिकों और व्यापारियोंका ही प्राधान्य हो रहा है वह बहुत समयतक बोलशेविजमसे अछूता नहीं रह सकता।

देखते हैं कि हमारी उक्त धारणा बहुत ठीक निकली और लक्षणोंसे जान पड़ता है कि शीघ्र ही इङ्गलैंड भी बोलशेविजमका शिकार बनना चाहता है। यह हमारी ही धारणा नहीं है बल्कि ब्रिटिश पार्लमेण्टके मेम्बर मि० जे० एच० टामसका भी यही विचार है। उन्होंने गत १९वीं जनवरीको वलर्कनवेल नामक स्थान पर अपनी वक्तृतामें कहा है कि 'औद्योगिक" अवस्था ऐसी है कि उससे भय हो रहा है। मैं समझता हूं कि यदि मैं स्पष्ट शब्दोंमें यह न कह दूं कि मुझे अवस्थासे बड़ा भय हो रहा है क्योंकि प्रत्येक मनुष्यके भाव गदर करकेसे जान पड़ते हैं तो मैं अपने कर्तव्यसे पतित ठहरूंगा। इतनेपर भी ऐसा कोई स्पष्ट और सम्मिलित विचार नहीं किया गया है कि क्या करना चाहिये या हम उसे किस तरह करेंगे। ये ऐसे भाव और लक्षण हैं जो संसारके इतिहासमें क्रान्ति उपजानेवाले सिद्ध हुए हैं।" क्या मि० टामसके उक्त कथनसे भी किसीको इङ्गलैंडकी वर्त्तमान अवस्थाकी भयङ्करताके विषयमें सन्देह हो सकता है? इधर इङ्गलैंडके श्रमजीवी जिस प्रकार बात बातमें अपनी टेक रखनेके लिये हड़ताल करने लगे हैं उसीसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे अपनी वर्तमान हीनावस्थासे अत्यन्त असन्तुष्ट हैं और वे नहीं चाहते कि और अधिक समयतक उनके गाढ़े पसीनेके कमाये हुए धनसे धनी व्यापारी तो मौज उड़ावें और स्वयं खाने और पहिननेके लिये तरसते रहें। इधर हड़तालोंका अन्त तो हो गया है पर मूल कारण नहीं दूर हुए हैं। 'पायोनियर'के लण्डनके संवाददाताका कहना है कि "यद्यपि लंडनकी साधारण अवस्था फिर इस समय ठीक हो गयी है पर सङ्कटके कारण प्रायः ज्योंके त्यों बने हुए हैं।" इसी लिये उसका कहना है कि "अभी और भी हड़तालें होनेकी पूरी सम्भावना समझनी चाहिये।"

हड़तालें ही भावी सङ्कटकी सम्भावना बता रही हैं पर इतने हीसे बस नहीं है। इङ्गलैंडमें खुल्लमखुल्ला बोलशेविक मतका प्रचार और कार्य हो रहा है। पार्लमेण्टके नये चुनावमें एक बोलशेविक भी उम्मेदवार हुआ था यह बात पाठक अभी न भूले होंगे। यद्यपि निर्वाचनमें वह नहीं, आया तो भी जिस उम्मेदवारके मुकाबले वह खड़ा हुआ था उससे कुछ ही कम वोट उसे मिले थे। इस घटनासे ही हमें इङ्गलैंडमें भी बोलशेविकोंके सिद्धान्त फैलनेकी आशङ्का हो रही थी, पर 'इंडियन डेली न्यूज'के लण्डनी संवाददाताके पत्रसे तो ऐसा मालूम होता है कि वहां बोलशेविक मतका खासा जोर है। उक्त पत्रसे मालूम हुआ है कि गत जनवरीके तीसरे सप्ताहमें लंडनके फैरिङ्गडन मेमोरियल हालमें अंगरेज बोलशेविकोंकी एक परिषद् हुई थी। उसमें सर्वसाधारण तथा पत्रोंके संवाददाताओंको स्थान नहीं दिया गया और वे ही लोग जाने पाये थे जिनके

पास ऐसे कार्ड थे जिनमें इस बातकी गारण्टी थी कि कार्डवाला किसी ऐसी संस्थाका प्रतिनिधि है जिसे लंडन वर्कस यूनियन जानती है। परिषद्की ओर से कारवाई की जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है उससे पता चलता है कि रूससे फौज लौटानेके लिये जोर देनेको परिषद् की गयी थी। इसके सिवा परिषद्के और भी कई उद्देश्य थे। तीसरे पहर दो तीन सौ प्रतिनिधियोंने देशभर में हड़ताल करानेके सम्बन्धमें विचार किया जिसे वे "क्रान्तिकी ओर पहली निश्चित कारवाई" समझते हैं। कहते हैं कि बोलशेविकोंका दावा है कि खानों, लंडन पुलिस, तथा डाक विभागमें बोलशेविक मतके बहुतसे लोग हैं। 'टाइम्स' के कथनानुसार लंडनके ये बोलशेविक गुप्त सभाओंके ढंगपर काम करते हैं और यूरोपभरको अराजक गुप्त संस्थाओंसे उनका घनिष्ट सम्बन्ध है। यह भी कहा गया है कि संध्याकी बैठकमें किसी जी० ए० डी० लुहानी नामक भारतीयने भी उक्त परिषद्में भाषण किया था!

यही नहीं, 'पायोनियर' के संवाददाताके कथनसे तो यह भी मालूम हुआ है कि, लंडनमें अंग्रेज बोलशेविकोंका एक साप्ताहिक पत्र भी बेरोक टोक निकल रहा है और शीघ्र ही एक दैनिक भी निकलनेवाला है। एक बड़ी विचित्र बात यह सुननेमें आयी है कि, दैनिक पत्रके लिये भारतीय धन दे रहे हैं। इसमें सन्देह नहीं कि, बोलशेविकोंके साम्यवादके सिद्धान्तकी अनेक बातें ऐसी हैं जिससे भारतके हो नहीं बल्कि संसार भरके देशोंके कितने ही लोगोंकी सहानुभूति है, पर आज तक यह सुननेमें नहीं आया कि, लण्डनकी तरह भारतमें भी क्रान्तिके लिये खुल्लम खुल्ला काम करनेको कोई बोलशेविक दल तैयार हुआ है। आश्चर्य नहीं कि; भारतीयोंको बदनाम करनेके लिये ही 'पायोनियर' के किसी कुटिल हृदयके संवाददाताने लण्डनके बोलशेविकोंको भारतीयोंसे सहायता मिलनेकी बात कही हो। जो हो, इस समय इंगलैण्डमें भी बोलशेविक सिद्धान्तका खुल्लम खुल्ला प्रचार हो रहा है और जिस प्रकार भय प्रकट किया जा रहा है उससे यह भी जान पड़ता है कि, बोलशेविकोंका समुदाय बढ़ रहा है। आश्चर्य नहीं कि, इन्हीं सब बातोंपर विचार करके ही पार्लमेंटके मि० टामस जैसे प्रतिष्ठित सभ्य और मजूर दली नेताने कहा है कि, इंगलैण्डकी अवस्था और लक्षण ऐसे हो रहे हैं जो क्रान्ति या गदरके पहले सदा सर्वत्र हुआ करते हैं। हम भारतीयोंको तो बड़ा भारी आश्चर्य इस बातसे होता है कि, जहां बोलशेविक खुल्लम खुल्ला क्रान्तिकी तैयारी की इच्छा प्रकटकर कार्य कर रहे हैं वहा उनके दमनके लिये न तो राउट कमेटी जैसी कोई कमेटी बनती है और न राउट बिलों जैसे दमनकारी बिल ही तैयार किये जाते हैं। परन्तु भारतमें अधिकारि वर्ग वैध आन्दोलनका गला घोटने के प्रयत्नमें सदा लगा रहता है।

भारत सचिवकी स्वीकृतिसे भारत सरकारने प्रादेशिक शासकोंके ऐडीशनल मेम्बरोंकी कार्यावधि एक वर्ष तक बढ़ानेका अधिकार दे दिया है।

जर्मनोने डेढ़से पौने दो लाख तक जवानोंकी सेना बनानेका बिचार किया है। प्रत्येक प्रदेशमें एक ब्रिगेड रहेगा।

सुना जाता है कि, जर्मनीके भूतपूर्व कैसरके पुत्र प्रिंस जोकिम षड्यंत्रमें भाग लेनेके अपराधमें पकड़े गये।

मांटेगूकी तोप
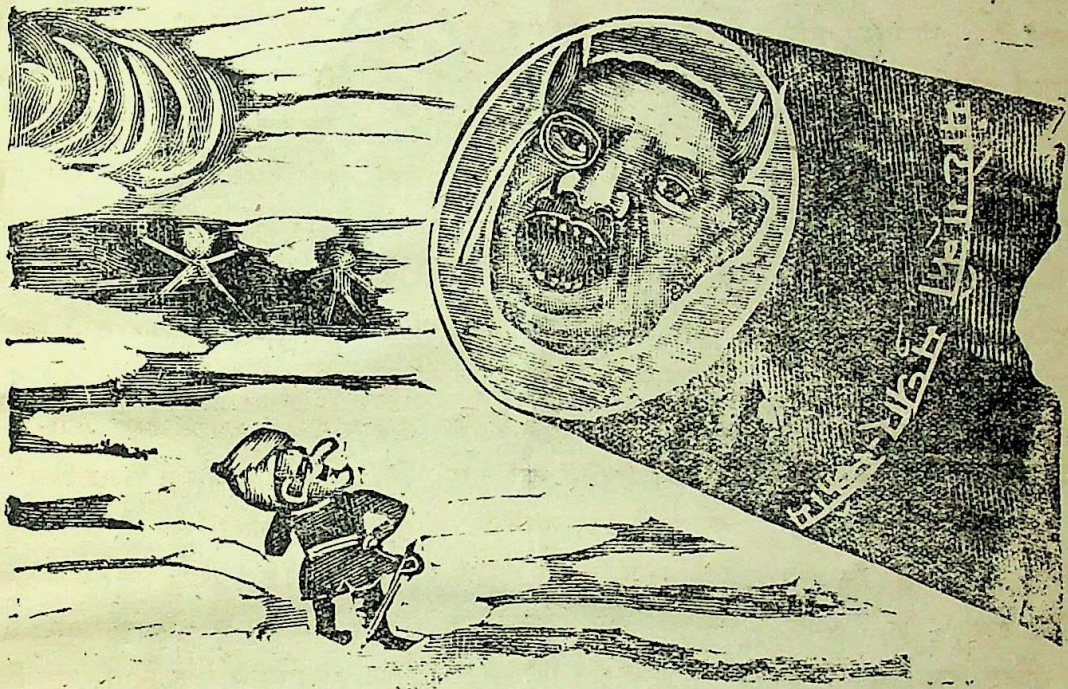
मि० मांटेगूने सुधार स्कीम तैयार कर भारतसे राजद्रोहके भूत भगाने चाहे थे, परन्तु रालट बिलोंके पास होजानेसे देशमें और भी अधिक असन्तोष बढ रहा है।

सोनेके अंडा देनेवाली चिड़िया !

भारतीय किसान ही राजा और प्रजाकी सब तरहसे मदद करते हैं। व्यापारियोंका लालच उन्हें ही सता रहा है सरकारको उनकी रक्षा करनी चाहिये.

ब्रिटेनका कर्त्तव्य.

महासमरमें विजय पानेके बाद जो कठिनाइयां इस समय मित्रराष्ट्रों और विशेषकर ब्रिटेनके सामने आ उपस्थित हुई हैं उनका अनुमान समरकालमें बहुतोंको नहीं हुआ था। यही कारण है कि समरमें विजय पानेकी धुनके आगे किसी राजनीतिज्ञको प्रायः यह भी खबर नहीं रहा करती थी कि, हमारे मुंहसे क्या बातें निकल रही हैं। उस समय सभी मित्रराष्ट्रोंके राजनीतिज्ञोंने कहा था कि, इस लड़ाईमें जीत जानेसे सदाके लिये संसारसे युद्धोंका अन्त कर देंगे। परन्तु जब वे लड़ाई बन्द होनेके बाद संधिकी शर्तें निश्चित करनेको बैठे तब एक एक कठिनाई बारी बारीसे सामने आ रही है और राजनीतिज्ञोंके मुंहसे पहलेकी तरह ऊटपटांग बातें सुननेमें कम आती हैं। परन्तु इसमें अब भी कुछ सन्देह नहीं है कि, सारी बातोंका ठीक ठीक निपटारा करना असम्भव नहीं तो महा' कठिन अवश्य हो रहा है। ब्रिटेनने पहले तो रा० विलसनके स्वतंत्र विचारोंका समर्थन कर साम्राज्यसे सहायता प्राप्त करली, पर आज उन विचारोंके अनुसार कार्य करनेमें उसे बड़ा कष्ट हो रहा है और आश्चर्य नहीं कि, उसके राजनीतिज्ञोंके मुंहसे समरकालमें निकली हुई बातें ब्रिटिशसाम्राज्यके कुछ भागोंके लिये मृगतृष्णासी सिद्ध हों।

रा० विलसनने उस दिन राष्ट्रसंघकी स्थापनाके विषयमें विचार प्रकट करते हुए मित्रराष्ट्रोंकी संधिपरिषदमें कहा था कि, हम यहां इस समरके कारणोंका मूलोच्छेद करनेको एकत्र हुए हैं। सभी लोग रा० विलसनके इस कथनसे सहमत होंगे कि, समरके कारण ये थे ;—इने गिने मुल्की शासक और सैनिकोंका स्वेच्छानुसार कार्य करना; बड़ोंका छोटोंपर अकारण आक्रमण करना तलवारका भय दिखा इच्छा न रखनेवाली प्रजाओंको अपनी अधीनतामें रखना तथा कुछ लोगोंकी स्वेच्छानुसार मानव जातके साथ वर्त्ताव करनेकी शक्तियां रा० विलसनका कहना है कि, इन कारणोंसे जब संसारको मुक्ति मिलेगी तभी शांति हो सकती है अन्यथा नहीं। इसी लिये राष्ट्रपतिका कहना है कि, हम यह सिद्धान्त स्थापित करना चाहते हैं कि, शासक अपनेको जनताका मालिक न समझें, बल्कि संसारके प्रत्येक भागकी जनताको अपनी इच्छाके अनुसार अपने मालिक चुनने और अपने भाग्यका निर्णय करनेका अधिकार मिले, शासकोंकी इच्छाके अनुसार नहीं। अमेरिकाके साथी ब्रिटेनको राष्ट्रपतिका यह सिद्धान्त मानना ही पड़ेगा नहीं तो वह अमेरिकाका साथी नहीं रह सकता। हम समझते हैं कि, रा० विलसनके उक्त कथनको कार्यमें परिणत करनेकी जितनी आवश्यकता ब्रिटेनमें है उतनी अन्य मित्रदेशोंमें नहीं है। इसीसे ब्रिटेनसे अधिक कठिनाइयां भी और किसी देशके सामने नहीं उपस्थित हैं।

यह ठीक ही कहा जाता है कि ब्रिटिश साम्राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता। साथ ही हम यह कहे बिना भी नहीं रह सकते कि, ब्रिटिश साम्राज्यमें त्रुटियोंकी भी कमी नहीं है। हो सकता है कि, इतना विस्तृत साम्राज्य होनेके कारण ही ये त्रुटियां हों, परन्तु क्या ब्रिटेन

एक यही कारण बता उन त्रुटियों के दायित्वसे अपना पिण्ड छुड़ा सकता है ? एकबार महमूद गजनवी बादशाहके सामने बहुत दूरके देशसे कुछ लोगोंने जा कर निवेदन किया कि हमें लुटेरे लूट रहे हैं। बादशाहने कहा कि, इतनी दूरका प्रबन्ध कैसे किया जा सकता है। यह उत्तर सुन उन लोगोंने कहा कि जहांपनाह जब आप इतने बिस्तृत राज्यका प्रबन्ध नहीं कर सकते तब इतने बड़े राज्यपर अधिकार ही क्यों रखा है। उन लोगोंकी यही बात ब्रिटेनसे भी कही जा सकती है। प्रत्येक जाति और देशको स्वतन्त्रताका सुख भोगने का जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त है। किसी देशकी स्वतन्त्रता छीनकर कोई प्रबल राष्ट्र उसे अपनी अधीनतामें रख सब प्रकारके सुख पहुंचानेका पूरा प्रयत्न कर सकता है, पर अधीन देशके लिये सुराज्य ही हो सकता है जो स्वराज्यके समान कदापि नहीं। इसी लिये स्वातंत्र्य प्रेमी रा० विलसन चाहते हैं कि, संसारकी सभी जनताओं को अपने मालिक बनने और स्वेच्छानुसार अपने भाग्योंके निर्णयका अधिकार मिले। क्या ब्रिटेन अपने साम्राज्यके भीतर अनेक भागोंकी प्रजाओंको यह अधिकार देनेको तैयार है?

आयर्लैंड स्वतंत्रता चाहता है और उसने स्वतंत्रताकी घोषणा भी कर दी है। फिर उसे ब्रिटेन स्वतंत्र करनेमें क्यों अगर मगर करता है? भारत तो अभी साम्राज्यके भीतर ही स्वराज्य मांगता है, पर यदि वह भी स्वतंत्र होना चाहे, तो स्वतंत्रता का प्रेमी होनेका दम भरता हुआ भी ब्रिटेन क्यों उसकी आकांक्षा पूरी करनेमें रुकावटें खड़ी करता है? दक्षिण अफ्रिका वाले यदि स्वराज्य पानेपर भी सन्तुष्ट नहीं हैं और ब्रिटेनसे स्वतंत्र होना चाहते हैं तो उसे क्या अधिकार है कि, वह उन्हें जबर्दस्ती अपनी अधीनतामें रखे? न्यायपूर्वक इन प्रश्नोंका ठीक उत्तर सिवा उसके और कुछ नहीं दिया जा सकता कि, उपर्युक्त सभी देशोंकी आकांक्षाएं पूर्ण कर दी जायं। ब्रिटेन इस बातकी चिन्ता छोड़ दे कि, इन देशोंके निवासी स्वतंत्र होते ही लड़ाई झगड़े शुरू कर देंगे, क्योंकि इसके पर किसी बड़े कर्त्तव्यका भार आतेही लोगोंकी सब गदहपचीसी भूल जाती है। जहाँ चार बर्तन इकट्ठे होते हैं वहां टक्कर होती ही रहती है। यह बात स्वतंत्र और परतंत्र सभी देशोंमें पायी जाती है। स्वतंत्र होनेपर भी इंगलैण्डमें सदा उपद्रव और लड़ाई झगड़ें होते रहते हैं और वृटेनके अधीन रहनेपर भी भारतमें लड़ाई झगड़ोंका होना नहीं रुकता है। हां इतना तो अवश्य है कि, शान्तिरक्षाके नाम पर भारतपर एक पराये देशका शासन होनेसे लोगोंके उन गुणोंका ह्रास हो गया है जिनके बलपर राष्ट्र जीवित रहा करते हैं। यही अवस्था अन्य अधीन देशोंकी भी है। इस लिये संसारमें शान्ति स्थापन करने और अमेरिकासे अपनी दोस्ती निभानेके लिये ब्रिटेनका कर्तव्य है कि, वह अपने किसी भी भागकी प्रजाकी आकांक्षाओंका विरोध न कर सबको स्वभाग्य निर्णयका अधिकार दे दे। यदि स्वार्थ या दुराग्रह वश वह अपने हितू रा० विलसनकी भी बातोंके अनुसार कार्य न करेगा तो उसे स्मरण रखना चाहिये कि, ईश्वरीय शक्ति सर्वत्र अपना काम करेगी और उसके सामने ब्रिटेनको लाचार होना पड़ेगा।

—:—

१

नया सुभीता।

जो हमारे दैनिक विश्वमित्रको असमर्थताके कारण नहीं पढ़ सकते एकबार कड़ा दिलकर दो रुपया भेज दें। एक साल तक बराबर साप्ताहिक पत्र पायेंगे. यदि वे चाहें तो १) ही भेजकर ६ महीने तक पत्रका आनन्द लूटें साप्ताहिकमें दैनिककी सभी बिशेषतायें रखनेका खास ध्यान रखा जाता है।

सेवा और मेवा

हिन्दी साहित्यके सेवी पत्रकी एजेन्सी लेकर २५) सैकड़ा घर बैठे कमा सकते हैं उन्हें डाक व्यय भी न देना होगा पहले ५) जमा कराने होंगे दो पैसा देकर भला कौन इस जमानेमें हर रोज पत्र न पढ़ेगा एक शहर या करबेमें कमसे कम पचास प्रतियां आसानीसे बिक सकती हैं

पुस्तक बिभाग।

हम दूसरेकी पुस्तकें विज्ञापन देकर बेचते है जिन्हे पुस्तकें बिकवानी हों हमसे लिखा पढ़ी कर सब बातें तय करलें हम उचित पारितोषिक देकर पुस्तकें प्रकाशित करते हैं।

आफिसका पता—मेनेजर बिश्वमित्र कार्यालय,

बडाबाजार कलकत्ता।

तारका पता—'VISHWAMITRA'

पंच रत्न देखिये

भारत शासन सुधार—यह भारतसम्बन्धी शासन और वर्तमान सुधार स्कीम जाननेका अद्वितीय पुस्तक है। मूल्य ॥)

स्वराज्यकी धूम—देशके नेता स्वराज्यके सम्बन्धमें क्या कहते हैं यदि यह जानना हो तो मनोहर पुस्तकका एक बार अवलोकन कीजिये। मूल्य ॥)

जर्मनीकी राज्य व्यवस्था—जर्मनीका शासन किस प्रकारका होता है यह इस 'महासमरके कारण जानना बहुत जरूरी हो गया है। हिन्दी संसारमें यह सर्वथा नयी पुस्तक है। मूल्य ॥)

तिलककी जीवनी—भारतके हृदयसम्राट् देशके परमपूज्य नेताका जीवनचरित्र पढ़नेसे मन प्रसन्न और आत्मा बलवान् होती है। ऐसा ज़ीवन चरित्र अभीतक हिन्दी संसारने नहीं पाया था। मूल्य ॥)

ऐयर चरित्र—देशभक्त डा० ऐयरने वर्तमानकालमें जो निर्भीकता दिखायी वह इतिहासमें स्मरणीय रहेगी। आपका जीवन आदर्श है। यह पुस्तक बड़ी खोजके साथ लिखी गयीं है। मूल्य ॥)

चार आनेमें उत्तम पुस्तिकायें—तिलकका भाषण =) सत्याग्रहकी धूम -) ऐयर पत्र -) स्वराज्यवीणा ॥=)

 मेनेजर—'विश्वमित्र कार्यालय।'

बड़ाबाजार कलकत्ता

'बनर्जी प्रेस' १३ नारायण प्रसाद बाबू लेन कलकत्तामें श्री आशुतोषबनर्जी द्वारा मुद्रित।